डायमंड पाकेट बुक्स में

घर का स्वर्ग, बन्धन टूटे ना, कोहरा, पराई बेटी

के बाद प्रस्तुत है

आज के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

समीर

का नया पारिवारिक उपन्यास

अंतिम आशीर्वाद
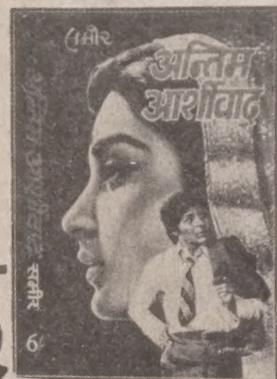
6/-

उभरते लेखक

अंशुल

का नवीनतम उपन्यास

ये कैसा इन्साफ

6/-

हिन्दी के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार

रानू

का नवीनतम उपन्यास

कुंआरी विधवा

6/-

जनप्रिय लेखक

ओमप्रकाश शर्मा का

नवीनतम जासूसी उपन्यास

लाल सिग्नल

6/-

विश्व प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार

जेम्स हेडली चेईज़ का

नवीनतम उपन्यास

खूनी प्लान

6/-

नये डायमंड कामिक्स
(छुट्टी विशेषांक)

- पलटू और शैतान की नानी 5/-
- ताऊजी और पूंछ वाला दैत्य 5/-
- मोटू पतलू और उड़न-तश्तरी 5/-
- चाचा चौधरी अमरीका में 5/-
- अंकुर और महाबली शाका 5/-

नये बाल उपन्यास

- चाचा चौधरी और हत्यारे का चेहरा 2/-
- लम्बू मोटू और ब्लैक क्रास की तबाही 2/-
- टारजन और जादूगरनी का जाल 2/-
- फौलादी सिंह और खूनी चैलेंज 2/-
- जासूस चक्रम और भयानक क्युना 2/-
- ताऊ जी और करामाती सपना 2/-
- चाचा भतीजा और जादूगर का खजाना 2/-
- महाबली शाका और खूनी धमाका 2/-

डायमंड पाकेट बुक्स 2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

Year - 84

Listen,
On Vividh Bharti
Sponser Programme of
Diamond Comics
at 2 PM. from Delhi & 1-45 PM. from
Bombay On every Sunday

आगे ख़तरा है

कर्मचारी रहित रेलवे क्रासिंग
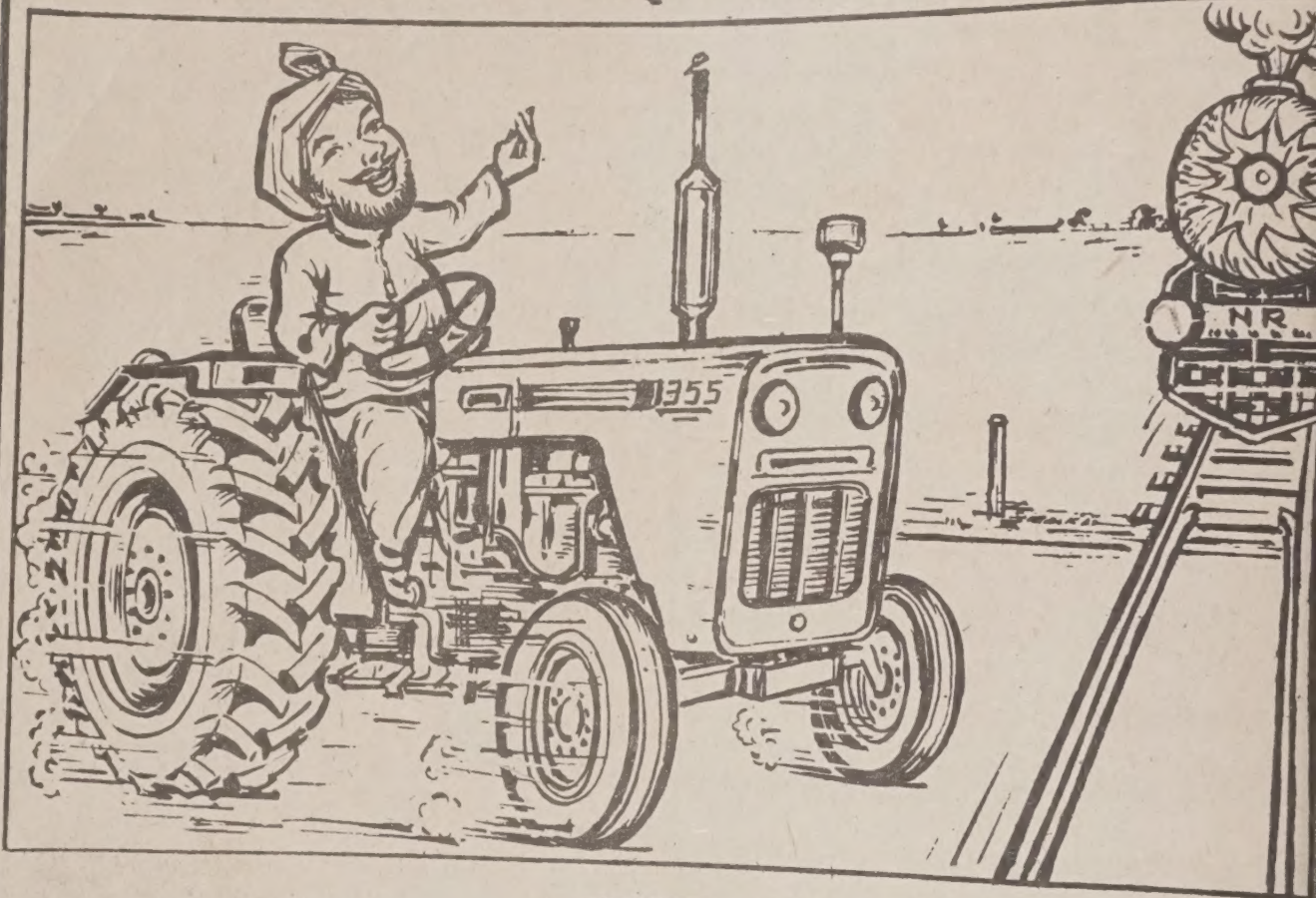
रुकिये

क्रासिंग पार करने से पहले
देखें कि रेलगाड़ी तो
नहीं आ रही !

उत्तर रेलवे

मेरे प्यारे चौधरी

भगवान तुम्हारे को लम्बी उम्र दे। ये दुआ मैं ही नहीं कर रहा बल्कि इन्दिरा कांग्रेस भी हर वक्त करती रहती है। सिर्फ तुम्हारे दोस्त ही इस बात से नाराज हैं कि तुम सही-सलामत क्यों हो ? तुमने अभी अभी कहा कि 'देश को तकसीम करने की साजिश चल रही है। इन्दिरा गांधी में देश सेवा की भावना नहीं है और सिर्फ अपने बेटे को गद्दी पर बैठाना चाहती है।' पर तुम यह भूल गये कि हम भी कुछ कम नहीं। तुम तो देश के तकसीम की बात कर रहे हो और तुम्हारे दोस्त लोग ये समझते है कि तुम विरोधी दलों को तकसीम कर रहे हो। बकौल तुम्हारे इन्दिरा गांधी का एक प्रोग्राम है कि अपने बेटे को गद्दी पर बैठाना। लेकिन प्यारे ये भी सोचो कि तुम्हारे मुसाहिब ये कहते फिरते हैं कि तुम्हारा एक ही प्रोग्राम है, वह है अपने को गद्दी पर बैठाना।

मुझे तुम पर बहुत तरस आ रहा है। सिवाय मेरे अगर तुम आंख उठा कर चारों तरफ देखोगे तो पाओगे कि सिर्फ इन्दिरा गांधी ही दूसरी ऐसी व्यक्ति हैं जो तुम्हें जिन्दा देखना चाहती हैं। शायद तुम फूलों का गुलदस्ता भूल गये। प्यारे, क्या वाजपेयी, क्या भिंडरवाला, क्या बाबू, क्या कर्पूरी ठाकुर क्या चन्द्रशेखर कभी तुम्हारी लम्बी आयु की कामना कर सकते हैं ? तुम तो असली में आजकल कभी-कभी चश्मा लगाते हो, तुम्हें तो मेरी तरह सूक्ष्म दृष्टि वाली दूरबीन चाहिए। तो तुम पाओगे कि चाहे वह दूर हो या चाहे पास, हर आदमी की है एक ही आस, कब जाये बुड्डा परलोक सिधार, और कुर्सी आये उनके पास।

ऐसे विषधरों के बीच तुम्हारा अगर कोई है तो या तो मैं हूं या है इन्दिरा। मेरे पास दीवानी कुर्सी है जो नहीं छिन सकती और इन्दिरा जी के पास वो कुर्सी है जो सब छीनना चाहते हैं। प्यारे आंखें खोलो, कहीं ऐसा न हो कि ये दोस्त लोग उन्हें बन्द ही रहने दें।

मेरी दुआयें हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

प्यारा चौधरी जिन्दाबाद !

तुम्हारा
चिल्ली

प्रेम पत्र

दीवाना

...: ९ वर्ष: २०, १५ मई १९८४

...दक ● विश्वबन्धु गुप्ता
...सम्पादिका ● मंजुल गुप्ता
...क्शन सुपरवाईजर ● राधे लाल शर्मा
... निदेशक ● सतीश गुप्ता
...कार ● नेगी, कुलदीप मथारू,
...ल मैनेजर ● रमेश गुप्ता

मार्केटिंग मैनेजर ● एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर ● विनोद अग्रवाल
विज्ञापन मैनेजर ● जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक ● पन्नालाल जैन
मुद्रक ● तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता ● दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
फोन. ● 261851, 263926, 275871

मुख पृष्ठ पर

कहां की ताकत कहां का जोर
लोग मचाते बेकार का शोर
छोड़ो सब बेकार के किस्से
देखो एक चॉप से हुये दो हिस्से

राजाजी

बागी चन्दन सिंह रोज मेरे सिपाहियों को घात लगा कर मार रहा है। जनता का मनोबल गिर रहा। मुझे कुछ करना ही होगा।

चोबदार शाही जासूस तेजसिंह को बुला लाओ। बैठा-बैठा जासूसी नावल पढ़ता रहता है।

राजा तुमसे खफा नजर आता है तेजसिंह !
मैं एक ही तो जासूस हूं राजा के सी. आई. डी. विभाग में मेरा क्या बिगाड़ लेगा ? मैं हड़ताल पर चला जाऊंगा तो सारा विभाग ठप्प हो जाएगा।
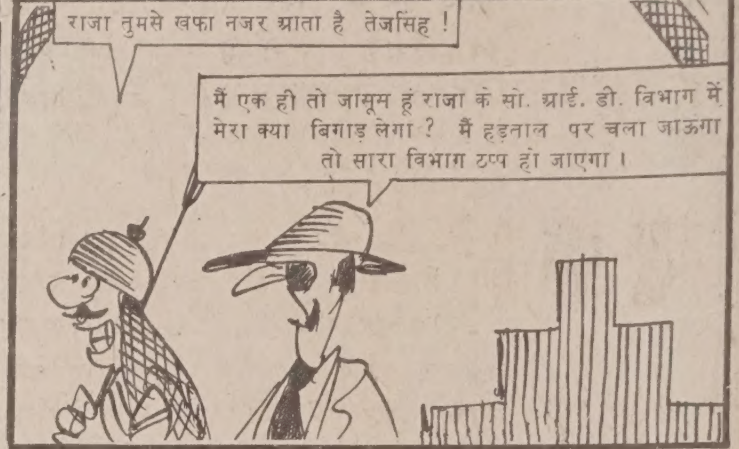
महाराज आपको एक भेद की बात बता देता हूँ। बागी जिस इलाके में सक्रिय है वहां कोई लम्बा पेड़ नहीं है। आपके किले के बाहर ताड़ का इतना ऊँचा पेड़ है जितना आस-पास के पड़ोस के राज्यों में भी कहीं नहीं है। उसी का फायदा उठाइये। एक सिपाही को उस पर चढ़ने की आज्ञा दीजिये।
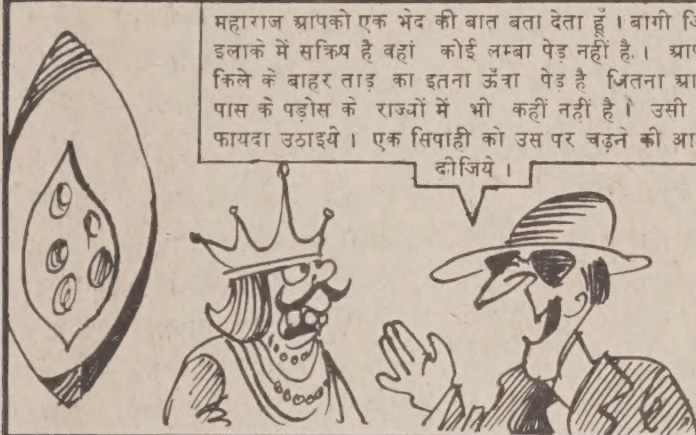
मुझे यह डर लग रहा है कहीं यह गिर न जाये ?
नहीं गिरेगा हुजूर। इस ताड़ की ताड़ी यही सिपाही तो चोरी से चढ़ के उतार कर पी जाता है। आपको पता ही नहीं।
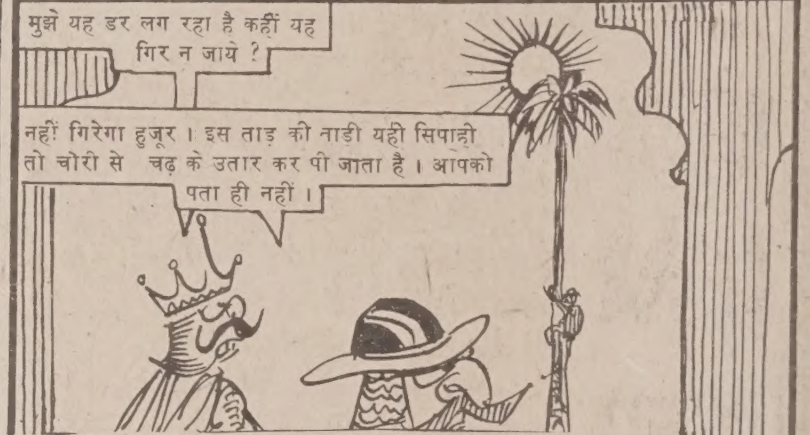
देश वासियों आज हमारे राज्य के सिपाही राकेश वर्मा ने ताड़ के आस-पास के राज्यों में सबसे ऊँचे पेड़ हर चढ़ कर हमारे राज्य अँधेर नगरी को अंतरिक्ष यात्रा के युग के दरवाजे पर पहुंचा दिया है। इससे पता लगता है हमने विज्ञान में कितनी तिरक्की की है। हमारा राज्य कितना बढ़ गया है। राकेश वर्मा ने ताड़ की चोटी पर से देख यह महत्वपूर्ण सूचना दी कि किसानों के किस-किस के खेत में गधे चर रहे हैं बबी चन्दन सिंह के सिपाही इमली के पेड़ पर भी नहीं चढ़ सकते। अब आपको पता लगा होगा कौन कितने पानी में है।
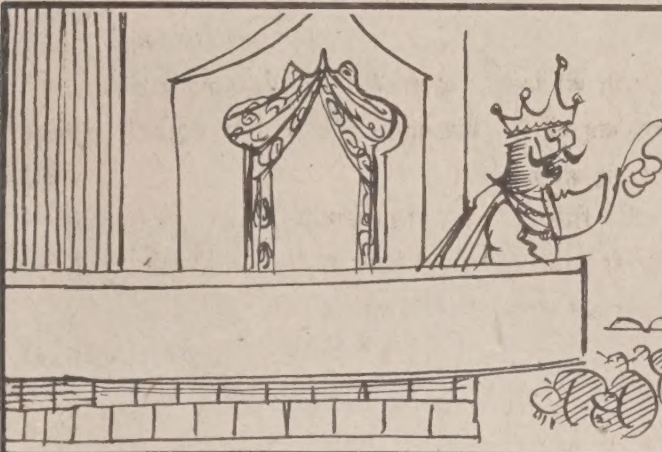
अब तो बगी चन्दन सिंह को नानी याद आ गयी होगी। लोग उसके नाम पर हंस रहे होंगे। मैंने वह पैंतरा बदला है चित्त जा गिरेगा वह। लोग उसके कहे में नहीं आयेंगे।
नहीं महाराज।

इसका प्रचार विभाग प्रचार कर रहा है कि राजा ने अपने सिपाही को ताड़ की चोटी पर भेज कर कौन-सा तीर मार लिया ? वह कह रहा है मैं भी तो रोज राजा के सिपाहियों को स्वर्ग भेज देता हूँ जो सातवें आसमान पर है।
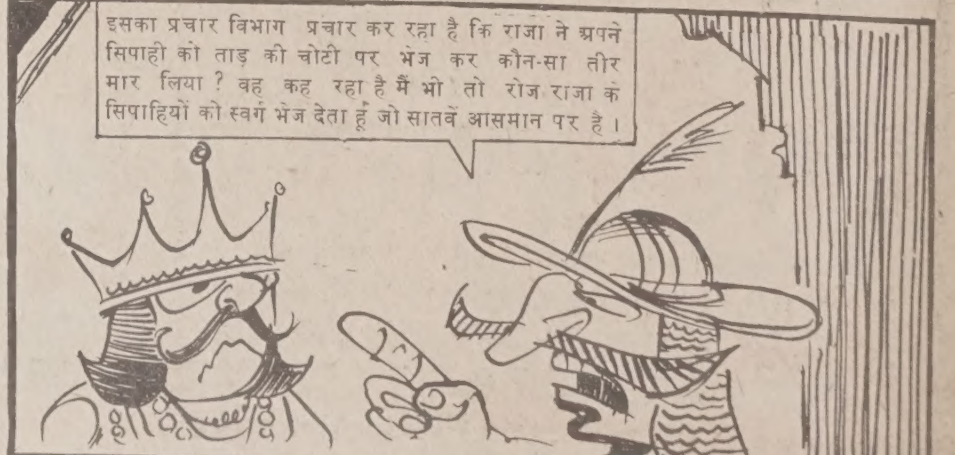
आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भवन पं० हंसराज शर्मा
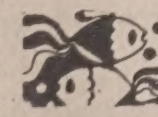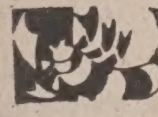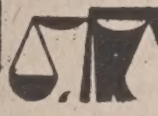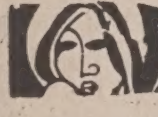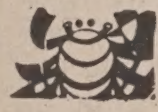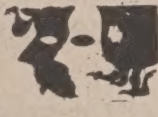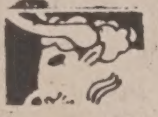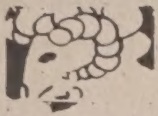
मेष : गृह उपयोगी एवं सुख सुविधाओं के संचय में रुचि, वृद्धि होगी और व्यय भी करेंगे; विघ्न बाधाएं समाप्त होकर आर्थिक लाभ बढ़ेगा।

वृष : दिमागी उलझनों में कुछ कमी होगी, सेवा कार्य और धार्मिक प्रवृत्ति बनेगी, बिगड़ा कार्य पूरा होगा, मनोरंजन/भ्रमण आदि का सुन्दर साधन बनेगा।

मिथुन : आय व्यय में समानता रहेगी, धार्मिक कामों में रुचि वृद्धि, सहनशीलता और मेहनत के सहारे कामों में अच्छी प्रगति कर सकते हैं।

कर्क : सप्ताह के आरम्भ में घरेलू और व्यापरिक उलझनों के साथ-साथ बाहरी कलह-कलेश भी उत्पन्न हो सकता है, हरप्रकार से सतर्क रहें, गुस्से से बचें।

सिंह : श्रेष्ठ स्वभाव वाले मित्र सम्बन्धियों से सहयोग, दैनिक जीवन की मुश्किलें सुलझेंगी, पारिवारिक सुख-शान्ति की वृद्धि।

कन्या : कभी कभार भीतर से मन उदास रहा करेगा फिर भी उत्साह और सहनशीलता बनी रहने से आपकी प्रगति में बाधा नहीं पड़ेगी, सेवा कार्य से प्रशंसा के पात्र बनेंगे।

तुला :आलस्य और वाणी की कठोरता आपके लिए मुश्किलें पैदा कर सकती है, बचिएगा, मेहनत से काम करें, भाग्य साथ देगा और कामों में सफलता पाएंगे।

वृश्चिक : शत्रुओं के प्रभाव, अपव्यय और घरेलू कष्ट से चिन्तित रहेंगे, मुश्किलें काफी पेश आयेंगी, भ्रमण से हानि का भय है।

धनु : अतिथि आगमन से खुशी, व्यय विशेष होगा, भ्रमण मनोरंजन आदि का कोई सुन्दर साधन बनेगा, अनुकूलता और अर्थ लाभ की प्राप्ति से सभी समस्यायें दूर होंगी।

मकर : मन में शुभ विचारों का उत्कर्ष, धार्मिक और सामाजिक कामों में रुचि वृद्धि; आपका प्रभाव भी बढ़ेगा, बन्धुजनों और श्रेष्ठ स्वभाव वाले लोगों के परामर्श से लाभ होगा।

कुम्भ : क्रोध, जोश और उतावलेपन की वृद्धि, मानसिक और शारीरिक पीड़ा सहनी पड़ेगी, सुख साधनों पर अधिक व्यय करेंगे, लाभ सामान्य होगा।

मीन : वातावरण कुछ सुधरेगा परन्तु सप्ताह के शुरू-शुरू में काफी कठिनाई और रुकावट अनुभव करेंगे, सेहत खराब, व्यय अधिक लेकिन वातावरण अनुकूल बनेगा।

आपके पत्र

दीवाना अंक 6 बेहद इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ। कृपया इसे समय से एक या दो दिन पहले प्रकाशित करें तो मजा आ जाए। माचू-पीचू, सिलबिल-पिलपिल व चूं-चूं का मुरब्बा बेहद पसन्द आया। कहानियां सभी अच्छी थीं। **सुखविन्द्र सिंह जोड़ा—कृष्णा पार्क**

दीवाना का अंक 6 मिला। मुख पृष्ठ देख कर हंसी आ गई। गरीब चन्द की डाक व काका के कारतूस, इन दोनों स्तम्भों ने इस अंक में चार चांद लगा दिये। पर अपना सवाल काका के कारतूस में न पाकर दुख हुआ। चूं-चूं का मुरब्बा, माचू-पीचू, सिलबिल-पिलपिल आदि भी प्रशंसनीय थे। फिल्म पैरोडी एवं चिपकियां नियमित देने की कृपा करें। **मधुकर निलकंठराव चुटे—नागपुर**

दीवाना का अंक 6 प्राप्त हुआ, माचू-पीचू, चूं-चूं का मुरब्बा, गरीब चन्द की डाक, काका के जवाब बेहद पसन्द आये। राजा जी, लल्लू राम को न देख कर निराशा हुई। मई जून में बच्चों की छुट्टियां आ रही हैं। कुछ और रोचक रचनायें आगामी अंकों में निकालें। हो सके तो बम्पर छुट्टी विशेषांक निकालें। **अजय कुमार भोलू—अलीगढ़**

एक समय था जब 'दीवाना' मेरी मनपसन्द पत्रिका थी, पर समय के साथ-साथ दीवाना में मेरी रुचि भी कम होती जा रही है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि चित्र कथाओं में कुछ नयापन नहीं होता।' पहले 'मोटू-पतलू' कुछ मनोरंजन करते थे। पर आजकल 'माचू-पीचू, बे सिर पैर की हरकतें करते हैं। प्रस्तुति का ढंग अच्छा नहीं है। कहानियां पहले जितना प्रभावित करती थीं। आजकल उतना नहीं कर पातीं। कृपया आप विविध जानकारी देने वाले लेख छापें जिससे सामान्य ज्ञान बढ़े। 'क्यों और कैसे' काफी नहीं है। आशा है आप विचार करेंगे। **राहुल गोदीका—जयपुर**

हम दीवाना को अच्छा व पाठकों की मनपसन्द बनाने का हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं और आपके विचार को ध्यान में रखकर भविष्य में प्रयास करते रहेंगे। —सं०

नया अंक मिला। इसमें सिलबिल-पिलपिल, मदहोश होश में आ, और फैण्टम आदि अपना रंग जमा गए। पहले दीवाना में पोस्टर दिया जाता था अब आप फिर से पोस्टर देना शुरू करें।

गुरविन्दर, जीतेन्द्र—जालन्धर

दीवाना अंक 6 बहुत देर से मिला। अपनी प्रसिद्धि के अनुरूप यह अंक भी बेमिसाल रहा। प्रकाश चन्द सेठी के नाम चिल्ली का प्रेम पत्र रोचक बन पड़ा। कहावतों पर दीवानी नजर व इश्क का मजा, चित्र कथाएं गुदगुदाने वाली थीं। गरीब चन्द की डाक, में आपने सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर पुरस्कार देने की जो घोषणा की थी, वह कब कार्यान्वित होगी ? काका के कारतूस, सिलबिल-पिलपिल, चूं-चूं का मुरब्बा, हमेशा की तरह रोचक रहे। माचू-पीचू, दीवाना कार्ड व अल रूट समस्या, भी अच्छे रहे। दीवाना चिपकियों में अन्तिम चिपकी पूर्व प्रकाशित थी। आशा है, भविष्य में नई चिपकियां पढ़ने को मिलेंगी।

दिनेश कुमार चिटकारा—फरीदाबाद

जून के प्रथम अंक से सर्वश्रेष्ठ प्रश्न को इनाम दिया जायेगा। —सं०

शिशिर विक्रांत
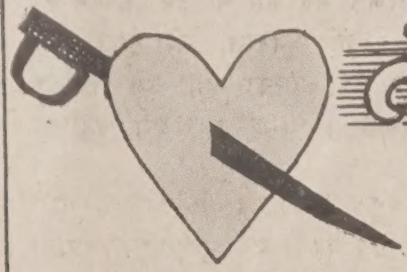
बेहद चिंतित हैं महामंत्री पुष्यवर्मा। कांची जैसे विशाल राज्य की सारी देखभाल का उत्तरदायित्व ही कम नहीं, उस पर से हूणराज का आक्रमण,समझ नहीं पा रहे—क्या करें ?

सीमाप्रांत की दशा का निरीक्षण करने आये थे वो । दुर्गों, सैन्य व्यवस्था और अधिकारियों की स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करने के लिए पुष्यवर्मा राजधानी से यहां आये थे। अपने कार्यक्रम के अनुसार, कार्य समाप्त करके वो राजधानी लौटने ही वाले थे कि आक्रमण का समाचार मिल गया था । यही नहीं, हूणों ने सीमा प्रांत के दो किलों पर अपना झंडा भी फहरा दिया था ।

हूण सेना का सामना करने की चिंता नहीं थी महामंत्री को। चिंता थी तो यह कि राजकुमार शैल सामना करने की स्वीकृति देंगे भी ? लड़ाई-युद्ध के विषय में राजकुमार का सहज हामी भर देना—सपने में भी इसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी ।

पर परिस्थितियों की मांग नकारना भी संभव तो नहीं । तुरन्त ही प्रतिरक्षा न की गई तो परिणाम क्या होगा ? सोचकर ही कांप उठा महामंत्री का हृदय । 'स्वर्गीय कांची नरेश का राज्य क्या सहज ही हूणों के हाथ में चला जाएगा ? प्राण-प्रण से, युवावस्था से लेकर इस वृद्धावस्था तक जिस राज्य को समृद्ध बनाये रखा, हूण राज क्या उसे सरलता से अधिकार में ले लेगा ? नहीं—नहीं—'महामंत्री तत्काल उठ खड़े हुए । 'कैसे भी हो, राजकुमार की स्वीकृति लेकर इस राज्य व राज्य की जनता की रक्षा करनी ही है । उनके रहते हूणों का साम्राज्य हो जाए कांची के ऊपर—असंभव—' वृद्ध पुष्यवर्मा के रक्त में उफान आने लगा और नसों में तनाव ।

'बिंदल, तुम किसी भी प्रकार हूण सेना को दो दिनों तक रोके रखना । मैं राजधानी से तब तक राजकुमार और मुख्य सेना को लेकर आता हूं ।' सामने ही खड़े अचलेश्वर दुर्ग के दुर्गपति बिंदल को आदेश और सांत्वना देकर महामंत्री बाहर चले आये । अश्वारूढ़ हुए, और चल दिये वायुवेग से राजधानी को ।

हवा से बातें करते अश्व की पीठ पर बैठे उनकी स्मृति में, ऐसे में अतीत के चित्र साकार होने लगे । ध्यान आ गया उनको लगभग बारह वर्ष पूर्व का समय । कई वर्षों तक प्रधान अमात्य का पद संभालते हुए उन्होंने कांची की सेवा की थी । राजा और प्रजा का विश्वास जीता था । अब चाहते थे, संसार से संन्यास लेकर वैराग्यपूर्ण जीवन बिताना । उनकी इच्छा पूरी न हो सकी ।

तभी कांची नरेश को हृदय का दौरा पड़ गया था । राजकुमार शैल मुश्किल से दस वर्ष का था तब । राजकुमार का हाथ महामंत्री के हाथ में देकर बोले थे कांची नरेश, 'राज्य और राजकुमार का उत्तरदायित्व आपके ऊपर ही है, मंत्रीश्रेष्ठ ।' और बस, नेत्र खुले ही रह गये थे उनके ।

राज्य का भार संभालना अब पावन कर्त्तव्य बन गया था पुष्यवर्मा के लिए । राज्य की देख-रेख के साथ ही, राजकुमार पर भी पूरा ध्यान देते रहे हैं वो, उस दिन से । पर राजकुमार को अपनी इच्छानुसार ढाल नहीं पाये वो हर प्रयत्न के बावजूद भी । राजकुमार शैल शस्त्र हों या शास्त्र, कम किसी में नहीं रहा पर चिंता का विषय महामंत्री के लिए बना है, उसका अतिशय उदार--दयालू स्वभाव । शौक भी उसके वैसे ही हैं आज तक पक्षियों को अपने हाथों से दाना चुगाते रहना या फिर धार्मिक अध्ययन । बहुत हुआ तो घूमने चले जाना । पर ऐसे में भी नजर इसी पर कि कहीं कोई दुखी तो नहीं । कोई दुखी-दीन दिख जाए तो राजकुमार उससे बातें करते हुए स्वयं सजल नेत्र हो जाते । ऐसे राजकुमार से युद्ध के लिए हामी पाने की महामंत्री की चिंता अनावश्यक कैसे हो सकती है ?

ऐसे राजकुमार पर राज्य का भार सौंपकर स्वयं संन्यासी होने की बात को महामात्य पुष्यवर्मा स्वप्न में भी नहीं सोचते । और राजकुमार का स्वभाव बदलने का काम तो अब उनको अपने वश का लगता ही नहीं ।

इसी सोच-विचार में डूबे महामंत्री, राजधानी के राजप्रसाद के सिंहद्वार पर आकर रुके । अप्रत्याशित आगमन से द्वारपाल चौंक गया । अभिवादन करते ही महामंत्री का प्रश्न—'राजकुमार कहां हैं द्वारपाल ?

'ज...ज...जी, वहीं पक्षियों को छत पर दाना चुगाते होंगे ।' द्वारपाल ने कहकर अगले आदेश के लिए खुद को तैयार किया ।

'उनसे हमारे आने का समाचार बताओ ।' बोले महामात्य, 'कह दो वो, हमसे तुरन्त मिलें ।'

राजकुमार से मुलाकात कर बोले महामंत्री 'राजकुमार, हूण सेना ने आक्रमण कर दिया है। दो दुर्ग भी हथिया चुकी है वो। तुरन्त ही प्रधान सेना के द्वारा उसे न रोका गया तो अनर्थ हो जाएगा । संघर्ष करना ही पड़ेगा राज्य और जनता को बचाने के लिए ।'

'संघर्ष कैसे भी टल नहीं सकता ?'

'क्या कहते हो युवराज ? संघर्ष तो जीवन ही है ।'

'इस पर कैसे विश्वास करूं ! कालकूट पीकर किसी को जीते देखा है ? संघर्षों में उलझ कर जीना नहीं मरण है ।'

यही तो तुम्हारी भूल है ।' राजकुमार से ऐसे व्यवहार का पूरा अनुमान था, महामंत्री को । इसलिए विचित्र तर्क सुनकर भी, बिना विचलित हुए बोले, 'कांटों पर ही फूल खिलते हैं । जिसे तुम मरण समझते हो, वही तो जीवन है । संघर्ष हीन जीवन में नीरसता के सिवा क्या ? कांची नरेश जीवन भर संघर्षरत रहे । उनका पुत्र संघर्ष से दूर भागे, क्या यह अनुचित-अशोभनीय नहीं ?'

राजकुमार शैल पर प्रभाव न के बराबर पड़ा । बोला, 'शांति की सरस धारा से क्रुद्ध अंतरों को शांत करने की शक्ति लुप्त हो गयी है क्या, आग बुझाने के लिए आग जलाना कैसे उचित है ? रक्तसागर में स्नान जीवन है क्या ?'

'जीवन की परिभाषा तुम जानते ही नहीं,' झुंझला गये महामात्य । संघर्ष के लिए स्वीकृति लेने को उतारू वो बोले, 'कंटक-पथ पर बढ़ते रहना ही, बाधाएं पार कर चलते रहना ही जीवन है । डरकर रुक-झुक जाना तो मृत्यु है ।'

'किंतु मनुष्य को सृजन करना चाहिए या ध्वंस ? ध्वंस की नींव पर सृजन का प्रासाद

कितना टिकाऊ होगा ?' शैल कुछ झुकते हुए बोला ।

'निर्माण या विनाश नभ से नहीं बरसते युवराज।मनुष्य के कृत्य ही उनको अपरिहार्य बनाते हैं ।' महामंत्री के तर्क ने निरुत्तर कर दिया उसे ।

दस हजार सैनिकों और राजकुमार को साथ ले, महामात्य मध्यरात्रि में ही राजधानी से चल दिए । शैल को विचारों में डूबे देख मार्ग में ही पूछा महामंत्री ने, 'डर रहे हो युवराज ? तुम्हारा यह प्रथम युद्ध होगा, शायद इससे ।

'ऐसा कदापि, नहीं महामात्य,' शैल बोला, 'सोचता हूं, बुद्धि-विवेकपूर्ण मनुष्य स्वार्थ में कितना अविवेकी हो जाता है । फिर भी संतोष नहीं ।'

'स्वार्थ के आगे धर्म, सत्य, त्याग—सभी लुप्त हो जाते हैं, फिर संतोष हो कैसे ?' प्रत्युत्तर तैयार था उनका, 'पाप के रक्त से जिसका सिंचन हुआ हो, उस हवस का प्रतियुद्ध के सिवा उपचार भी तो नहीं ।' महामंत्री के शब्दों ने शैल को भीतर तक कुरेद दिया था । तलवार की मूठ पर उसका हाथ अनायास ही जा पहुंचा ।

अगली सुबह सेना नियत स्थान पर पहुंच विश्राम कर रही थी, तभी हूण सेना के आक्रमण का समाचार आया । महामात्य ने झटपट प्रतियुद्ध की योजना बनाकर, आधे सैनिक-बल से जवाबी हमला कर दिया । शेष सेना का प्रतिनिधित्व युवराज के ऊपर था । सहायता करने को नियुक्त था—बिंदल ।

महामात्य युद्धरत थे, तभी शैल ने हूणों पर पीछे से हमला किया । दिन भर युद्ध हुआ । महामंत्री वीरगति को प्राप्त हुए, पर विजय मिली, कांची राज्य को ही । युवराज शैल का अप्रत्याशित पराक्रम देख, शत्रु भी चकित रह गये थे ।

'तुम्हारे स्थान पर मैं यदि इस तरह, तुम्हारे राज्य में निर्दोषों का संहार करता, तो तुम मेरे साथ क्या व्यवहार करते ?' सम्मुख बंदी बना खड़ा हूणराजा, राजकुमार का प्रश्न सुन तपाक से बोला, 'बस एक—मृत्युदंड···'

'ठीक, अपराधी समान, अपराध समान तो सजा भी समान क्यों न हो ?' कांप कर गिड़गिड़ाने लगा हूणराजा, शैल का वाक्य सुन । पापों के प्रायश्चित की शपथ खाते हुए दया की भिक्षा मांगने लगा वह, अतिकरुण स्वर में । पर उपस्थित जनसमूह कैसे भी उसे छोड़ने को तैयार न था । 'नहीं युवराज, जो दूसरों की जान लेने को सदैव तत्पर हो, उसे क्योंकर छोड़ा जा सकता है ?' यही स्वर गूंज रहा था वहां ।

पर राजकुमार को यह स्वीकार न था । उठकर स्वयं उसे मुक्त करते हुए बोला, 'जाओ हूणराज, पर याद रखना, भारत में दया-पराक्रम साथ पनपते हैं ।'

बंधनमुक्त हूणराज की आंखें कृतज्ञता से सजल हो उठीं बरबस । स्वप्न में भी कहां आशा थी ऐसे उदार व्यवहार की ? राजकुमार के चरणों में गिर, कह ही उठा वह, 'मुझे मृत्युदंड देते तो निश्चित ही सैकड़ों हूणराज और पैदा हो जाते पर क्षमादान देकर तुमने एक भी हूणराज को जीवित न छोड़ा । जाकर मैं विश्व के राष्ट्रों से कहूंगा कि तन पर नहीं, मन पर शासन करना हो, वास्तविकता है—यह सीख मुझे भारततर्ष से मिली है । तलवार के बल पर शासन करना मिथ्या है । मैं यहां तलवार लेकर आया था, और प्यार लेकर जा रहा हूं ।' कहकर नेत्र पोंछता हुआ उठा वह, और चल दिया अनिश्चित गंतव्य को । उपस्थित जनसमूह में अब विरोध का कोई स्वर न था ।
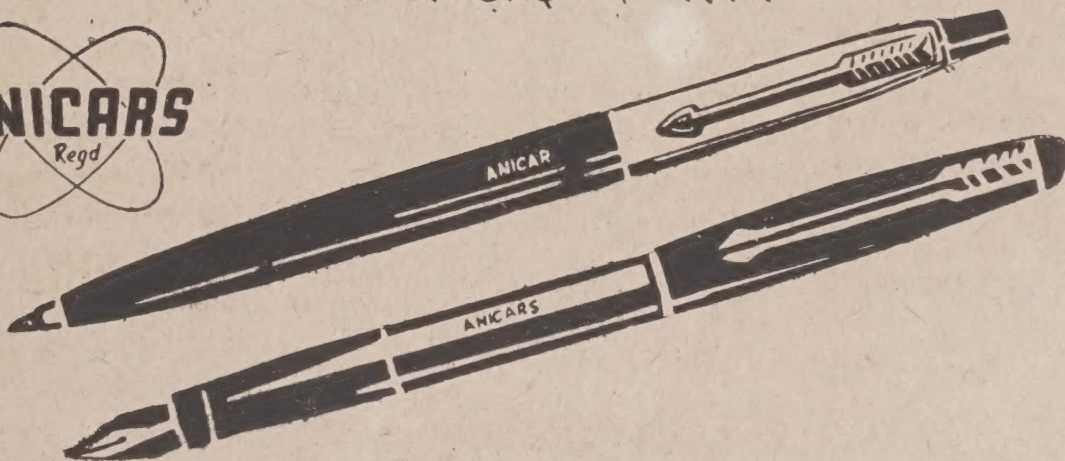
दो बज चुके थे। हम लोग तैयार होकर होस्टल के गेट के पास खड़े होकर टैक्सी का इन्तजार करने लगे। तभी एक टैक्सी आती दिखायी पड़ी।

'भई यह तो बताओ, हम लोग कौन सी फिल्म देखने जा रहे हैं ?' मैं टैक्सी में बैठते हुए बोला।

'उतावले क्यों हुए जा रहे हो ? अभी तो पहुंच ही जाएंगे।' सुशील बहुत सफाई के साथ बात को गोल कर गया।

गर्मी की छुट्टियों में होस्टल के अधिकांश छात्र घर लौट गए थे। दो चार जो बचे थे, वे मुझसे सीनियर थे। उनसे मेरी घनिष्ठता हो गयी थी। पर चूंकि मैं कुछ गम्भीर स्वभाव का युवक हूं और वे लोग कुछ 'चालू' किस्म के थे, मैं उनके साथ खुद को पूरी तरह एडजस्ट नही कर पाया था।

सुशील का उत्तर सुन कर मैं चुप हो गया। थोड़ी देर में ही हमारी टैक्सी 'इन्द्रपुरी' के सामने पहुंच गयी। टैक्सी से उतर कर हॉल की ओर बढ़ते हुए हॉल के सामने की बाल्कनी के हिस्से में लगे पोस्टर पर मेरी नजर पड़ी। पोस्टर देख कर मेरी आंखें आश्चर्य से फैल गयीं। पोस्टर पर कोई अश्लील तस्वीर बनी हुई थी और नीचे लिखा था—'द ब्लू लागून,' 'केवल वयस्कों के लिए।' मेरा कलेजा धक्-धक् करने लगा।

'लेकिन यह तो वयस्कों की फिल्म है।' मैंने घबरा कर कहा।

'तुम वयस्क नहीं हो ?'

'मैं वयस्क हूं ?' मुझे याद आया, अभी पिछले साल ही तो मैंने मैट्रिक का इम्तहान पास करके कालेज में एडमिशन लिया था। 'सरटेनली, यू आर ए फुल फ्लेजेड एडल्ट।' दिनेश ने मुस्कुराते हुए कहा—'तुम्हारे होंठों पर उग रही महीन-महीन मूंछें इस बात का जोर शोर से प्रचार भी कर रही हैं।'

'अच्छा, अच्छा; साहित्य मत झाड़ो। मैं यह फिल्म नहीं देख सकता।' सिनेमा के उस पोस्टर की ओर मेरी पीठ थी। पर मैं जानबूझ कर ऐसे कोण में खड़ा था कि तस्वीर का कुछ भाग मेरे दृष्टि क्षेत्र में आता रहे।

'लेकिन क्यों, कुछ कारण भी तो हो।' इस बार विमल बोला। 'कारण स्पष्ट है। इस तरह की फिल्मों में कई बातें ऐसी दिखायी जाती हैं जिन्हें हमारे किशोर मस्तिष्क पचा नहीं पाते। तभी तो ऐसी फिल्में एक विशेष उम्र वालों के लिए निषिद्ध कर दी जाती हैं।'

मेरी बात सुन कर तीनों ही खिलखिलाकर हंस पड़े।

'अरे, ये सब सिद्धांत की बातें हैं, सुशील बोला—ऐसी कौन सी फिल्म है जिसमें अश्लीलता नहीं होती ? दरअसल 'केवल वयस्कों के लिए' की छाप लगा कर अप्रत्यक्ष रूप से हम लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है कि हम ऐसी फिल्में देखें तथा भावी जीवन के कुछ 'रहस्यमय' अनुभवों का एहसास कर सकें।

तीनों ही मित्र अपने-अपने तर्कों से मेरे भीतर के संकोच को दूर करने का प्रयास कर रहे थे।

'अब चलो भी।' उपसंहार के रूप में दिनेश मुझे हाल के दरवाजे की ओर धकेलते हुए बोला—'तुम कोई दूध पीते बच्चे तो हो नहीं ? फिर यहां कोई देखता थोड़े ही है ?'

न जाने क्यों, मुझे दिनेश के अन्तिम वाक्य से काफी राहत मिली। मुझे लगा मैं एक पूर्ण वयस्क युवक हूं और अब तक के जीवन में मैंने 'एडल्ट' फिल्म न देख कर बड़ी भूल की है। पोस्टर की तस्वीरें मुझे निरन्तर रोमांचित कर रही थीं और अनायास ही मेरे पैर हाल की तरफ बढ़ चले।

फिल्म खत्म होने के बाद हम लोग टहलते हुए चौक की तरफ आ गए। मेरे मस्तिष्क में एक तूफान मचा हुआ था और आंखों के सामने फिल्म के कुछ 'विशेष' दृश्य बार-बार कौंध जाते थे। मैं उन दृश्यों में इस कदर खो गया था कि मुझे पता ही नहीं चला, कब हम लोग 'स्टैन्डर्ड' में आकर बैठ गए थे।

'आज तुम्हें एक नयी चीज पिला रहे हैं—कोका कोला स्पेशल। तुम भी क्या याद करोगे ?' सुशील मेरी आंखों में झांकते हुए मुस्कुराया।

मुझे लगा, 'स्पेशल' शब्द पर विशेष जोर दिया गया था। 'कोका कोला' का नाम तो सुना था, पर 'कोका कोला स्पेशल' मेरे लिए सर्वथा नयी चीज थी। इसी बीच सुशील बेयरे को पास बुला कर धीरे-धीरे कानाफूसी के से स्वर में कुछ आर्डर देने लगा।

थोड़ी देर बाद बेयरा आता दिखायी पड़ा उसके हाथ की ट्रे में चार छोटे गिलास, बर्फ के टुकड़ों से भरी एक प्लेट, कुछ तले हुए काजू और एक बड़ी सी बोतल थी। बोतल के चारों ओर रंग-बिरंगे कागज लिपटे हुए थे। मैंने उचक कर उस पर लिखे शब्दों को पढ़ा—'बीयर कन्टीनेन्टल' 'बीयर ?' मैं चौंकते हुए बोला।

'नहीं, कोका कोला स्पेशल,'—सुशील ने सहज स्वर में कहा।

'मैं नहीं पी सकता, यह तो शराब है।' मुझे लगा, मेरे स्वर में पहले जैसी दृढ़ता नहीं थी।

'बिल्कुल पागल हो ! अरे, बीयर शराब की श्रेणी में थोड़े ही आती है ?' दिनेश हंसा।

'पर इसमें नशा तो होता ही है।' मैंने तर्क दिया।

'धत्'—विमल मेरी बांह पकड़ कर बोला, 'इसमें भी एल्कोहल की उतनी ही मात्रा होती है जितनी साधारण कोका कोला में।'

'जमाना बहुत आगे बढ़ गया है, मयंक जो समझदार होते हैं, वे जमाने के साथ-साथ चलते हैं।' दिनेश ने जेब से सिगरेट की पैकेट निकालते हुए कहा।

'आज का प्रत्येक कालेज स्टूडेन्ट बीयर पीता है। जो बीयर नहीं पीते उन्हें दुनिया बैक-वार्ड एवं असभ्य कहती है, समझे ?'

मुझे पता था कि बीयर शराब की श्रेणी में ही आती है इसमें नशा भी होता है। आगे चलकर यही बात आदत के रूप में बदल भी सकती है। पर न जाने क्यों, मुझमें विरोध की शक्ति कपूर की तरह उड़ चुकी थी। जीवन की प्रथम 'एडल्ट' फिल्म देखकर मैं काफी 'बोल्ड' हो गया था।

'इस चिलचिलाती धूप में कोल्ड बीयर से जो तृप्ति मिलेगी उसका कहना ही क्या ? फिर तुम रोज थोड़े ही पीते हो ?'

मुझे ऐहसास हुआ, सचमुच कालेज का छात्र होकर भी अभी तक मैं पिछड़ा रहा हूं। ये लोग मेरे शुभ चिन्तक हैं तथा मुझे सभ्य और कल्चर्ड बनाने में सहयोग दे रहे हैं। धीरे-धीरे मेरी झिझक दूर हो गयी। दूसरे ही पल सिगरेटों के धुएं से महकते वातावतरण में 'चीयर्स' की महीन सम्मिलित ध्वनि गूंज उठी।

जब हम होस्टल लौटे तब शाम के छः बज गए थे। मैं सीधा रूम में आकर पड़ गया। मस्तिष्क में बीयर का हलका नशा छाया हुआ था। 'ब्लू लागून' के कुछ अन्तरंग दृश्य बार-बार मानस पटल पर विद्युत की तरह कौंध जाते थे। सारे शरीर में उत्तेजना और रोमांच से कंपकपी छायी हुई थी। तभी मुझे याद आया, मुझे अनुराधा को 'गाइड' करने के लिए भी जाना है। अनुराधा मेरे एक घनिष्ठ मित्र की बहन थी और कक्षा छः की छात्रा थी। इस समय उसकी परीक्षा" चल रही थीं और उसे

अध्ययन में सहायता देने के मित्र के अनुरोध को मैं टाल नहीं सका था।

अनुराधा ड्राइंगरूम मे मेरा इंतजार कर रही थी मैं मेज के पास वाले सोफे पर बैठ गया और एक टक उसकी ओर देखने लगा। न जाने क्यों आज मुझे वह बहुत सुंदर लग रही थी।

'शायद बहुत थक गये हैं' मिक्की भैया?' अनुराधा अपनी कापियां उलटते हुए बोली—' जल्दी से यह सवाल समझा दीजिए, बस!'

मैं चुप था। दर असल, बीयर का नशा वासना के उसे कीड़े को निरन्तर उत्तेजित कर रहा था जो 'ब्लू लागून' देखने के बाद से ही मेरे मतिष्क में जन्म ले चुका था। 'क्या बात है भैया, सिर दर्द कर रहा है?'

मैं एक टक उसे देखे जा रहा था। वह क्या कह रही थी, उस ओर मेरा ध्यान बिल्कुल ही नहीं था। वासना से मेरी आंखें लाल हो गयीं थीं और शरीर के रोंगटे खड़े हो गए थे। धीरे धीरे मेरे नेत्रों के सामने कुहरा छा गया और दूसरे ही क्षण मुझे लगा, मेरे सामने ग्यारह-बारह वर्षीय किशोर अनु नहीं, बल्कि एक पूर्ण वयस्क षोडसी युवती खड़ी है। मुझे लगा, 'ब्लू लागून' की वह नटवर चंचल हिरोईन विदेश से उड़कर उस कमरे में आ गयी है।

'तुम—तुम बहुत सुंदर लग रही हो अनु।' मेरे मस्तिष्क का वह भूत बोला। अनुराधा स्कीन कलर का चूड़ीदार सूट पहने हुए थी। वह चौंक पड़ी, शायद उसे ऐसे वाक्य की आशा नहीं थी।

'अनु···' मेरा साहस बढ़ा—' आजकल चूड़ीदार सूट पर दुपट्टा कोई नहीं लेता। तुम भी हटा दो।'

मैं खड़ा होकर दुपट्टा खींच लेने के लिए सामने सोफे पर बैठी अनुराधा की ओर बढ़ने लगा। अनुराधा उचककर खड़ी हो गयी उसकी आंखों में भय छलकने लगा था।

वह खड़ी होकर पीछे की ओर खिसकने लगी। मैं ओर आगे बढ़ा। वह विस्फारित सी मेरी आंखों में झांक रही थी। फिर अचानक बिल्कुल विद्युत गति से वह मेरी तरफ बढ़ी और अपने दोनों हाथों से मेरे गालों पर तमाचों की झड़ी लगा दी। तमाचे पड़ते रहे और तब तक पड़ते रहे जब तक कि वह थक कर हांफने न लगी। मैं सन्न खड़ा था। तभी वह मुड़ी और किसी विफरी हुई शेरनी की भांति मेज पर पड़े पेपर वेट को मेरे सिर पर दे मारा। पेपर वेट सीधे मेरे ललाट पर लगा और मैं अचेत होकर जमीन पर गिर पड़ा।

दूसरे दिन सुबह मेरी चेतना लौटी। मैं रातभर मित्र के घर पर ही था। अनुराधा सिरहाने बैठी मेरा सिर सहला रही थी। उसने डैडी-मम्मी और अपने भैया को मेरे सीढ़ियों से गिर जाने की बात कह कर टाल दिया था। मैं निरीह सी दृष्टि से उसे देख रहा था। उसकी आंखें निरन्तर जागरण से लाल हो आयी थीं। होठों पर पपड़ी जमी हुई थी। मेरे हाथ बढ़े और अनुराधा भावावेश में मेरे वक्ष से अपना मुंह टिका कर सिसक पड़ी—' मुझे माफ कर दीजिए मिक्की भैया। मैंने आपका अपमान—'

उसका कंठ अवरुद्ध हो गया था। मेरे भी आंसू बहने लगे थे। मस्तिष्क से कल का झंझावात न जाने कहां लुप्त हो गया था। अनुराधा का स्पर्श बहुत शीतल और प्यारा लग रहा था।

मैं स्नेह से उसके बालों को सहलाते हुए बोला 'पगली, भूल मेरी ही तो थी। कल मेरे अन्दर का 'मैं' कुसंग के कुहरे में खो गया था। तुम्हारे तमाचे मुझे हमेशा याद रहेंगे अनु, वे किसी प्रकाश स्तम्भ की तरह मुझे राह दिखाते रहेंगे।'

लल्लू

इस साल मैं गर्मियों में कुछ काम कर दिखाऊंगा। हिल स्टेशन पर तो जाना ही है। लेकिन मैं बस, रेल या कार, स्कूटर पर नहीं जाऊँगा, रॉलर स्केटिंग करता हुआ जाऊँगा।

लल्लू सुना है तुम कहीं पहाड़ पर जा रहे हो ? हम तो शिमला जा रहे हैं।
जा तो मैं भी शिमला ही रहा हूं लेकिन मैं तुम्हारी तरह कार में नहीं जाऊंगा। दिल्ली से शिमला तक स्केटिंग करता जाऊंगा। चढ़ाई में दिक्कत तो होगी लेकिन एडवेंचर का मजा तो है।

इस प्रकार के अनुभव में जो मजा आता है वह गाड़ी के सफर में नहीं। आसपास के अद्भुत नजारे देखते हुये सफर का आनन्द लूटो।

अहा ! अब पहाड़ी इलाका शुरू होने वाला है। सफर का असली मजा अब शुरू होगा। बर्फीले पहाड़, नदियां व लम्बे लम्बे पेड़ देखो।

सड़क के किनारे से शुरू होने वाले सुरक्षित जँगलों में जँगली जानवर व परिन्दे देखो। एक हिरण किस मस्ती से खड़ा है।

मेरे इस तरह के सफर की खबर शिमला पहुंच गयी होगी तो हो सकता है मेरे स्वागत को सड़क के दोनों ओर लोग खड़े हों बैंड बाजा हो...शायद फूलों की माला लेकर मिनिस्टर भी हों।

SKID
सपनों में आंखें बन्द कर खोया लल्लू मोड़ पर से नीचे गिर पड़ता है !

बेमौके के सपने देखने की मेरी लल्लू आदत कब जायेगी ?

शिव रैना

प्राण-प्यासी बीवी के गहने और चार कमरों का आधा पैतृक-घोंसला बेचकर, हमने फ्रिज, टी०वी०, 'कूलर' 'थ्री-इन-वन, 'गैस-रेंज, आदि से घर तो सजा लिया; परन्तु आत्मा रेगिस्तानी धरती की तरह, प्यासी रही। जिस नई या उपयोगी वस्तु की ओर देखते, दूध-पीते बच्चे की तरह मचलकर हम उस जगमगाती वस्तु के पीछे भागते। अब हालत यह थी, कि डाली पर लगा फूल भी हमें तब तक अच्छा न लगता, जब तक वह तोड़कर हमारी मुट्ठी में न आता। इच्छाएं और कामनाएं द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ने लगीं। हमारी बीवी और बच्चों की कामनाएं, खर्चों के नए कीर्तिमान स्थापित करने लगीं। घर में तिल रखने को स्थान न रहा। 'शैम्पू' से 'टूथपेस्ट' और 'कैसेट' से कुत्ते, एक-एक वस्तु की बीस-बीस वैरॉयटियों से घर भर गया। इन बेशुमार चीजों की रक्षार्थ, हमें एक चौकीदार की व्यवस्था करनी पड़ी। चौकीदार ने भी आंख बचाकर, चीजों पर हाथ साफ करने शुरू कर दिए। आखिर 'पंछी एक डाल के' ने सुझाव दिया, कि 'हर चीज का बीमा करवाकर, सुर्खरू हो जाओ।' एक अच्छी खासी रकम खर्च करके, बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा करने वाली एक प्राइवेट बीमा कम्पनी ने, हमारी वस्तुओं का तुरन्त बीमा किया। ट्रेजेडी केवल यह हुई कि उस विराट कम्पनी के दफ्तर को, उसी शाम आग लग गई। 'रसीदें' संभाले, हम तुरंत दुर्घटना स्थल पर पहुंचे, तो बीमा कार्यालय की जगह एक टन 'भस्मी' पड़ी थी। हमने छाती पर चार वजनी दोहत्थड़ मारकर पश्चाताप-स्वर पर रुदन राग छेड़ा। प्राइवेट कंपनी के एक वयोवृद्ध डायरेक्टर ने फौरन हमारे आंसू पोंछकर कहा, 'विलाप करने की कोई जरूरत नहीं मिस्टर गेंदालाल। हमारा अपना भव्य दफ्तर बीस करोड़ का बीमा करवा चुका है। अतएव आपके सारे भस्म कागज और 'क्लेम' (दावे) दुबारा तैयार कर लिए जाएंगे।'

अनावश्यक चीजों का 'भर्ती के माल' की तरह अंबार लगाकर, हमने अपनी सेहत, कमाई और चैन का बेड़ा गर्क कर लिया। जिन चीजों को हम 'माडर्न जीवन का आधार' मानकर खरीद लाए थे, उनकी भारी किश्तें पूरी करने के लिए, हमने अपना एड़ी-चोटी का तेल निकाल दिया। आठ घण्टे क्लर्की करते; चार घण्टे दिमाग-चटाऊ ट्यूशनें पढ़ाते। हमारे भोजन और वस्त्रों पर भी कटौती रूपी बम गिरा। एक ही सब्जी से दो वक्त काटे जाने लगे। फ्रिज के दो खानों में जूते और 'क्रॉकरी' रखी जाने लगी। कई-कई दिन टेप-रिकार्डर पर घिसी 'टेपें' और 'रिकार्ड-प्लेयर' पर आधे-टूटे रिकार्ड बजने लगे। अधमरे 'सेलों' से चालित ट्रांजिस्टर, सहगल कालीन, भर्राए स्वर निकालने लगा। बिगड़े टी०वी० की मरम्मत का पूरा बिल अदा करने के लिए, हमें दो पॉर्ट टॉइम कार्य करने पड़े। पहला यह कि एक बुर्का ओढ़कर और (स्वयं को सिर से पिंडलियों तक छुपाए) हाथ पसारकर, हम एक नए पुल पर बैठने लगे। तीन दिन ही एक-एक घण्टा बैठे, तो वहां लोगों ने हमें 'बेसहारा बुढ़िया' समझकर टी०वी० मरम्मत का आधा खर्चा दान-स्वरूप दे डाला। चेहरे पर हल्का काजल मलकर, हमने दो रोज जनरल बस अड्डे पर रस्से सहित मजदूरी तक की!

एक दिन हमारे लल्लू लाल स्कूटर के लिए मचले तो हम आपे से बाहर हो गये। एक सप्ताह पहले किश्तों पर खरीदे रंगीन 'मोपेड, की गद्दी सक्रोध फाड़ते हुए हम दहाड़े: 'अब 'मोपेड' से दिल भर गया तेरा क्या?

लल्लू ने महाभारतकालीन लाडले राजकुमारों की भांति सुबकते हुए कहा: 'मेरे दोस्त कहते हैं, कि 'मोपेड' जनाना वाहन है!'

हमने अपने गंजे सिर के रहे-सहे बाल नोच कर कहा, 'तेरे दोस्त जलते है। तुम घर फूंककर उन्हें तमाशा दिखाओगे क्या? तुम्हारे पास रेस-साइकिल पहले ही पड़ी है। 'मोपेड के साथ यदि स्कूटर खरीद भी लिया, तो उसे चलाएगा कौन? हमारे पास इतनी ज्यादा चीजें जमा हो गई हैं, कि उन्हें अब इस्तेमाल करना तो दूर, उनके नाम तक याद नहीं रहते अब।' हम नाम गिनाने लगे।

हमारी श्रीमतीजी ने दाल-भात में मूसलचंद की भांति टपकते हुए कहा: 'यह बात तो सही है। इन निगोड़ी चीजों को इस्तेमाल करने का तो वक्त ही नहीं मिलता। जो समय इन्हें इस्तेमाल करने का होता है, उसमें तो हम किश्तों की अदायगी के लिए पार्ट टाइम काम करते फिरते हैं! 'टेप' सुनना चाहते हैं, तो रेडियो का कोई महकता 'फर्मायशी-प्रोग्राम' शुरू हो जाता है। 'फर्मायश'सुनने का मूड होता है, तो टी०वी० पर थिरकता हुआ 'चित्रहार' आने लगता है! एक चीज ने, दूसरी चीज को ग्रहण लगा दिया है!' बेगम ने ठण्डी आह भरी।

हमने तड़फकर कहा: 'मैं तो इन सब चीजों से ऊबकर, 'लंगोटी-लोटा युग' में चला जाना चाहता हूं। सादगी से बड़ी दौलत कोई नहीं है। मैं तो कहता हूं' कि महंगाई नहीं, हम लोगों की जरूरतें बढ़ी हैं।'

मां-बाप को खालिस 'सन्याश्रम भाषा बोलते देखकर, हमारा भावुक लल्लू लाल तुरंत अपनी इतिहास की पुस्तक उठा लाया। पुस्तक का एक विशेष अध्याय खोलकर, लल्लू लाल ने हमें दक्ष पादरी की तरह, वह अध्याय यों पढ़कर सुनाया, जैसे मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर रहा हो।

'भगवान बुद्ध ने लोगों को बताया कि यह दुनिया दुःखों का घर है, और इन समस्त दुःखों का कारण हमारी इच्छाएं ही हैं.....!'

एक घण्टे तक मां, बाप और बेटे के मध्य 'सादगी और संतोष' पर जोरदार बहस होती रही। अन्त में, सर्वसम्मति से फैसला हुआ, कि समस्त अनावश्यक वस्तुओं की एक कमरे में ताला बंद करके, भविष्य में 'सादगी' ही को जीवन मंत्र बनाया जाए; कोई अनावश्यक या महंगी वस्तु न खरीदी जाए!

दो रोज 'सादगीपूर्ण जीवन' बिताने के बाद ही, श्रीमतीजी लल्लू सहित मायके चली गईं; ताकि उनकी वापसी तक हम तमाम तालाबंद वस्तुएं आधे मूल्य पर बेच दें! *
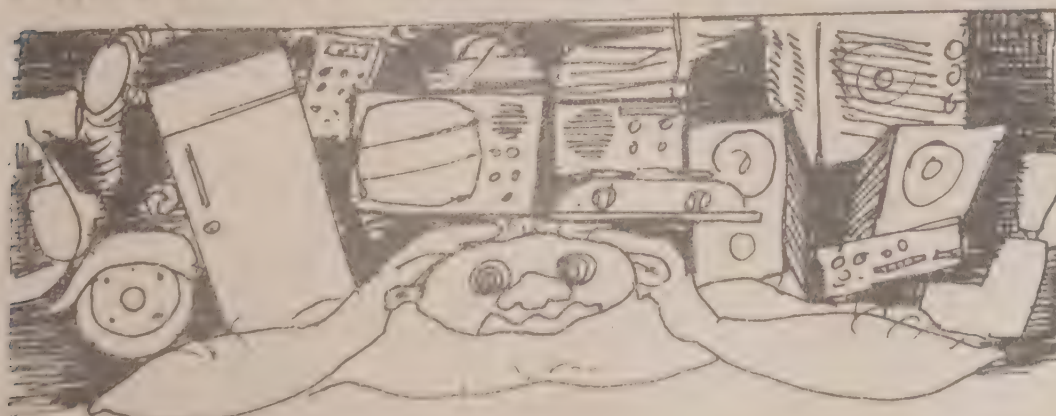
मोटू पतलू
फार्मूला नं० 333
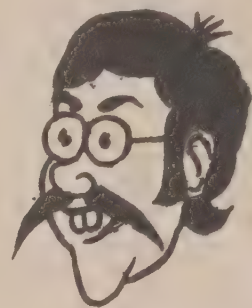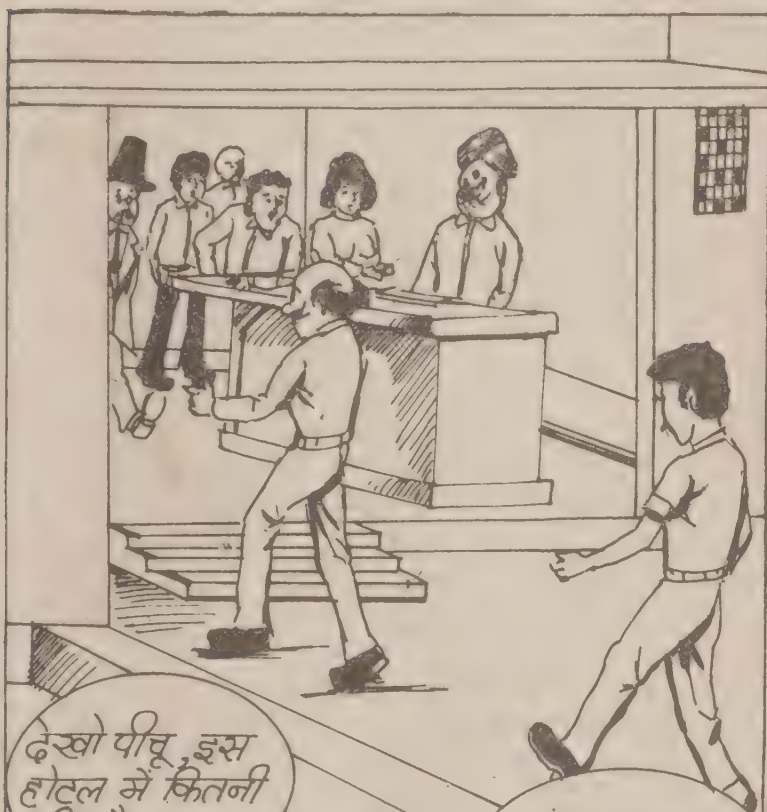
चित्रांकन : रघुबीर सिंह

वह तीनों अंदर जाकर अलग- अलग मेजों पर खाना खाते हैं।

खाना खाने के बाद पीचू काउंटर पर-
लाओ सेठ जी, सौ के नोट में से खाने के पैसे काटकर बाकी के पैसे दो।

नोट कहाँ है?
अभी तो दिया है।

तुम मुझे बेवकूफ समझते हो।
तो क्या तुम्हें आज पता चला है, तुम मेरा सौ का नोट नहीं खा सकते वरना घूसें मार- मारकर तुम्हारा मुँह टेढ़ा कर दूंगा। तुम्हारे होटल को कब्रिस्तान बना दूँगा।

दोनों का शोर सुनकर लोग इक्टठे हो जाते हैं।
भाई साहब, आप ध्यान कीजिये, आपने नोट न दिया हो।
तो क्या आप इसके दलाल हैं? क्या आप मुझे बच्चा समझते हैं या मैं सौ के नोट के लिये झूठ बोलूंगा?

सेठ साहब, आप अपना गल्ला चैक करलें, भाई साहब ने नोट दिया हो और आप भूल गये हों।

आज के बिल जमा करके सौ रुपये के नोट गिनलो, यदि सौ का नोट न निकला तो मैं एक हजार रुपये ऊपर दूंगा।
मेरे गल्ले में तो कई सौ-सौ के नोट पड़े हुये हैं, मैं चैक क्या करूं?
पर मैं कई बिल तो काटता ही नहीं।
तभी मापू बोल पड़ता है-
तुम बेईमान ही नहीं बल्कि टैक्स-चोर भी हो। इस का मतलब तुम नं० दो की कमाई खाते हो।
देखो भाइयों, क्या जमाना आया है, सेठ इतना बड़ा तिलक लगाता है और नं० दो की कमाई खाता है।
ये मेरे सौ रुपये ऐसे ही नहीं हजम कर सकता। यदि इन्कम टैक्स वालों को खबर कर दें तो इसके घर के सारे बर्तन बिक जायें।
सेठ साहब, क्या ये नहीं हो सकता कि आप नोट लेकर भूल गये हों।

सेठ साहब, पिछली बार आप मेरा सौ रूपये का नोट लेकर भूल गये थे। आप भुलक्कड़ तो हैं ही।
सेठ जी, मेरा सौ रूपये का नोट न भूल जाना।
सेठ हैरान होकर सोचता है।
यदि इस लड़की को भी मैंने न कर दी तो लोग मुझे जूते मारेंगे।
बहन जी, मुझे तुम्हारा सौ रूपये का नोट याद है।
तो पहले इस औरत के पैसे दे दो इस बेचारी को क्यों खड़ा किया हुआ है।
ये लिजिये बहन जी, बाकी के नब्बे रूपये
अब मेरे नब्बे रूपये भी दे दो।

गंगा कसम .... मैंने आपके पैसे नहीं लिये।
कोई बात नहीं, मैं अपना नोट छोड़ देता हूँ। अब अगर आऊंगा तो इन्कम टैक्स वालों को साथ लेकर आऊंगा। मैं तुम्हारे घर पर छापा मरवाऊंगा, अब ये धाँधलेबाजी नहीं चलेगी।
भाई साहब, एक छोटी-सी बात के लिये इन्कम टैक्स वालों को क्यों तकलीफ देते हैं। यदि आपको शक है तो पुलिस को बुलाकर इनका गल्ला चैक करवा सकते हैं।
इन्कम टैक्स वाले भी आकर खाली हाथ थोड़े ही जायेंगे, वे भी कुछ न कुछ लेकर ही जायेंगे
जरा मुझे पुलिस को टेलिफ़ोन करने दो।
सेठ झल्ला कर-
येलो नब्बे रूपये और मेरी जान छोड़ो!
चलो भाइयों, भीड़ हटाओ क्यों सेठ साहब को तंग कर रहे हो, यहाँ कोई तमाशा थोड़े ही हो रहा है।
वह तीनों बाहर आकर इकट्ठे होते हैं।
देखा! हमारा फार्मूला नं० ३३३ कितना कामयाब रहा!
शुक्र करो कि तुक्का चल गया वरना वो जूते पड़ते कि ज़िंदगी भर याद करते।
समाप्त

मंगेतर

भाग—१

राजवंश का धारावाहिक नया उपन्यास

'क्या हुआ ?' फूलवती ने कहा, 'कुशल तो है ?'

'हां कुशलता तुझे इस महीने की पन्द्रह तारीख को मिल जाएगी···चमची—बहुत दम भरा करती थी अपनी बहन का···अपने जीजा का···अरे यह हरामी बड़े लोग अपने बाप के नहीं होते।

'मैं पूछती हूं हुआ क्या ?

'पन्द्रह तारीख को तेरे यार को फांसी लग जाएगी।'

'नहीं···!' फूलवती हड़बड़ा कर पीछे हट गई।

'तेरे जीजा ने ही नहीं—तेरी बहन ने भी धोखा दिया है—मेरे बाप को फांसी लगवाने की जिम्मेदार है।'

'अरे···मैं तो फिर विधवा हो गई।'

अचानक फूलवती ने अपना सीना पीट डाला—दीवार पर हाथ मारकर चूड़ियां तोड़ लीं और माथे की बिंदिया मिटा डाली—बाल नोंच डाले···रत्ना भी चीखें मार-मारकर रोने लगी थी लेकिन प्रकाश के दांत सख्ती से भिंचे हुए थे वह जोर जोर से एक हाथ की हथेली पर दूसरे हाथ का घूंसा मारता हुआ इधर-उधर टहल रहा था कभी रुककर दीवार से जोर का घूंसा मारता और होंठ भींचकर गुर्राता।

'जज के बच्चे ने जरा सी भी रिआयत नहीं की। अरे क्या उम्र कैद की सजा नहीं दे सकता था ? कलम तो उसके हाथ में ही थी। मेरा बापू चीख-चीखकर कह गया है कि इस कमीने से बदला लिए बिना चैन से मत बैठना। मैं उस नीच को जिन्दा नहीं छोडूंगा। जिस तरह उसने तेरा सुहाग उजाड़ा है वैसे ही मैं तेरी बहन का भी सुहाग उजाड़ दूंगा।'

'हां-हां फूलवती ने सिसकियां भरते हुए कहा, 'उसे मारने से तो जैसे तेरे पिता बच जाएंगे, मेरा सुहाग मुझे वापस मिल जाएगा।

'तो क्या तू चाहती है मैं उसे जिन्दा छोड़ दूं ?'

'अरे वही नहीं मेरी बहन भी जिन्दा रहेगी।' फूलवती आंखें पोंछकर होंठ भींचकर बोली, 'लेकिन दोनों ऐसे जिन्दा रहेंगे कि मौत की भीख मांगेंगे लेकिन उन्हें मौत भी नहीं मिलेगी। जैसा छल सरिता ने मेरे साथ किया मैं ऐसा ही उससे बदला लूंगी। तुझे अपना खून ठण्डा रखना पड़ेगा। जिस चतुराई से उन लोगों ने हमें धोखा दिया है उसी चतुराई से हम उनसे बदला लेंगे उन पर यह बिलकुल स्पष्ट नहीं होने देंगे कि उनके प्रति हमारे मन में कोई घृणा है, उनसे बिल्कुल इस तरह मिलेंगे जैसे सरिता ने कहा है। और फिर, फिर मैं देखती हूं तू किस तरह मोनी को अपनाता है ? मोनी के लिए वह दोनों दीवाने हैं, मोनी उनका कलेजा है। तू उनसे उनका कलेजा छीन ले, वह जीते-जी मर जाएंगे और फिर जब तुझे मोनी मिल जाएगी तो उनका सबकुछ हमारा हो जाएगा। इतना याद रखना कि रामदयाल को मारने से कुछ हाथ नहीं लगेगा। तू भी जाएगा और मैं और रत्ना फिर बेसहारा रह जाएंगे।'

प्रकाश कुछ न बोला, उसकी लाल-लाल आंखें शून्य घर में घूर रही थीं।

● प्रकाश ने ठर्रे का तीसरा नोटांक खाली किया और मेज पर जोर से गिलास पटककर दहाड़ा

'अबे ओ छोकरे,एक नोटांक और ला।'

आंटी के अड्डे पर बैठे ग्राहकों ने चुंधियाई हुई आंखों से इस बारह तेरह बरस के छोकरे को देखा, कई होठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कराहटें फैल गई। आन्टी ने काउंटर पर से गर्दन उठाकर जोर से कहा, 'ऐ टॉमी यह कौन छोकरा होता, काए बूम मारता।'

'आन्टी।' टॉमी नाम के लडके ने जोर से कहा, 'यह प्रकाश होता, खुद को इधर का दादा समझता अख्खा दुकान बेचकर पी गएला। पर इधर को आने को नहीं छोड़ता।'

'क्या कहा ?' प्रकाश ने गुर्राकर खड़े होते हुए गन्दी-सी गाली बक कर कहा, 'सूअर के बच्चे दुकान क्या तेरे बाप की थी ?'

'अपन सूअर के बच्चे के बोले का बुरा नहीं मानता।' टॉमी सन्तोष से एक मेज पर से गिलास उठाता हुआ बोला।

प्रकाश ने पतलून की बैल्ट से चाकू निकालकर खोला और मेज में गाड़ दिया—फिर आन्टी से बोला, 'सुनो एक मिनट के अन्दर-अन्दर नोटांक नहीं आया तो तेरा भी पेट फाड़ दूंगा और कुत्ते टॉमी का भी।'

'अरे तेरी तो···।'

आन्टी अपना भारी-भरकम बदन लेकर काउंटर के पीछे से निकल आई···उधर अड्डे का एक दादा नौकर प्रकाश की मेज पर पहुंच गया था···उसने झटके से चाकू मेज पर से निकाल कर बन्द किया और प्रकाश के गिरेबान में ठूंस कर गिरेबान पकड़ कर झटका दिया तो प्रकाश कुर्सी से उखड़ कर बाहर आ गया। टॉमी ने मेज साफ करते हुए दूसरे ग्राहकों के साथ ठहाका लगाया और जोर से बोला, 'आन्टी···यह साला कल एक गिलास तोड़ेला था···पर अपन इसकी जेब खाली देखकर माफी दे दिएला था···आज साले का शर्ट उतार कर वसूली करने का।'

फिर सचमुच प्रकाश की कमीज उतार ली

गई क्योंकि अड्डे का दादा खासा तगड़ा था··· प्रकाश बनियान और पतलून में ही चाकू बैल्ट में उड़स कर बाहर निकलता हुआ बोला, अच्छी बात है सालो···अगर अड्डा बन्द न कराया तो अपना नाम भी प्रकाश नहीं।'

फिर वह बाहर निकल आया···रात के लगभग साढ़े-बारह बजे थे···उसे जोर की भूख लगी थी लेकिन उसे मालूम था कि आज घर में भी कुछ नहीं होगा···क्योंकि दुकान की आखिरी चीज बेच कर कल खाना बना था। दुकान की पगड़ी के रुपये तो पहले ही आन्टी के अड्डे और जुएखाने की भेंट चढ़ गए थे। प्रकाश झूमता हुआ अपनी बिल्डिंग की ओर बढ़ रहा था···अचानक उसके कानों से किसी के जोर-जोर से गाने की आवाज टकराई—

'अखियां मिलाना, जिया भरमाना' चले नहीं जाना—

ओ···ओ···चले नहीं जाना'

प्रकाश चौंक गया···उसने रामदीन को देखा था जो पड़ोस ही की बिल्डिंग में रहता था और किसी मिल में रात की शिफ्ट में काम करता था जो बारह बजे समाप्त होती थी··· रामदीन को शायद आज तनख्वाह मिली थी क्योंकि वह बड़े मूड में गुनगुनाता और नोट गिनता हुआ आ रहा था। प्रकाश जल्दी से गली के एक अंधेरे कोने में छुप गया···फुर्ती से उसने जेब से रूमाल निकाल कर चेहरे पर बांधा और चाकू निकाल कर खोल लिया···इतनी देर में रामदीन पास पहुंच चुका था···फिर जैसे ही रामदीन उसके पास से गुजरने लगा तो प्रकाश ने बड़ी तेजी से चाकू का फल उसकी पीठ में चुभा कर होंठ भींच कर गुर्राती आवाज में कहा, 'खबरदार···आवाज निकाली तो बदन के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।'

'अरे मैया···रे मैया···।' रामदीन के हाथों से अपने आप ही नोट छूट कर गिर गए और हाथ उठ गए।

'चल जिन्दा रहना चाहता है तो भाग जा···अगर किसी से जिक्र किया तो याद रख तू रोज इधर ही से गुजरता है।'

रामदीन सिर पर पांव रख कर भागा तो उसने पलट कर भी नहीं देखा। प्रकाश ने आराम से नोट उठा लिए और पतलून की जेब में ठूंस कर चाकू जेब में रख कर चल पड़ा। थोड़ी देर बाद वह घर पहुंचा तो रत्ना और फूलवती दोनों जाग रही थीं···फूलवती ने चाप-लूसी भरे स्वर में कहा, 'प्रकाश बेटा···कुछ लाया ? हम दोनों का कलेजा भूख से बैठा जा रहा है।'

'अबे···तो मर क्यों नहीं जातीं तुम दोनों।' प्रकाश बुरा-सा मुंह बना कर बोला, 'मैं कहता हूं तू चौथा और कर ले तो सबका पेट भर जाएगा।'

'मैं पूछती हूं दुकान का क्या किया तूने ?'

'दुकान तो जैसे अलाउद्दीन का चिराग थी···सोना उगलती थी···तीन हजार का माल क्या जीवन-भर बिकता भी रहता और तुम लोगों के पेट का नर्क भी भरता रहता।'

'यह क्यों नहीं कहते ?' रत्ना ने बुरा-सा मुंह बना कर कहा, 'सब शराब और जुए में गंवा दिया।'

अचानक प्रकाश का उठा हाथ रत्ना के गाल पर पड़ा···रत्ना चीख मार कर दीवार से टकरा कर गिरी। फूलवती ने झपट कर रत्ना को उठा लिया और प्रकाश से बोली, 'यह क्या करता है ? बहन पर हाथ उठाता है ?'

'मेरी कोई बहन-वहन नहीं है···इस से कह दे—अपनी जबान पर ताला लगाकर रखे वरना किसी दिन ले जाकर गोल पेठे पर बेच आऊंगा।'

'देखो प्रकाश···अगर तेरे गुस्से की यही हालत रही तो अपने बाप का बदला कैसे लेगा ?'

'बाप का बदला···।' प्रकाश का चेहरा अचानक लाल हो गया और वह दीवार पर घूंसा मार कर बोला, 'जाने क्यों तू मुझे रोक देती है वरना अब तक उस जज का खून कर चुका होता।'

'तुझे कितनी बार समझाया कि तेरे ऐसे बदले का कोई लाभ नहीं होगा।'

'मेरा दिमाग आउट हो जाता है उसका ध्यान आते ही।'

'दिमाग को काबू में रखेगा तो तेरा ही लाभ है···जेल जाने से भी बचेगा···रामदयाल की बेटी के साथ उसकी सारी दौलत भी तेरे अधिकार में आ जाएगी। मेरी बात मान···अब तो तेरे बापू को फांसी हुए भी कई महीने बीत चुके हैं—मैं तो कई बार रत्ना को लेकर सरिता से मिला भी आई हूं—शिकायत का एक शब्द भी कभी मेरी जुबान पर नहीं आया··· जब जाती हूं कह देती हूं कि प्रकाश आजकल दुकान पर बहुत परिश्रम कर रहा है—इस तरह पिता का दुःख भी बंटा रहता है दुकान भी उन्नति कर रही है···कल तू भी चल—सरिता से कहकर मैं कुछ रकम भी दिला दूंगी, कह दूंगी कुछ सामान खराब हो गया था या दुकान में फर्नीचर लगने से रौनक आ जाएगी और दुकानदारी भी चमकेगी।'

'ठीक है—तू जैसे कहती है मैं करूंगा।'

प्रकाश ने दस रुपये का नोट निकालकर फूलवती के सामने फेंक दिया और बोला, 'अपनी शरीफजादी बेटी से भुजिया मंगवा ले—अभी इरानी का होटल खुला है···मुझे भी भूख लगी है।'

रत्ना सिसकियां लेती हुई रुपये लेकर चली गई।

मोनिका जल्दी-जल्दी कपड़े बदलकर कमरे से निकली और ऊपर की ओर मुंह करके जोर से चीखी —

'डैडी—आई एम रैडी।'

'मैं भी बस अभी आया बेटी।' रामदयाल ने जोर से कहा।

मोनिका के बदन पर इस समय तंग ब्रिजिस और टी शर्ट थी—घुटनों तक के बूट··· हाथ में हण्टर—सरिता देवी ने उसे चिन्तामई दृष्टि से देखा और बोली, 'मैं कहती हूं तुम बाप बेटी को आखिर हो क्या गया है—किसी दिन कुछ हो गया तो मेरी जान मुफ्त में चली जाएगी।'

'ओ मम्मी—तुम तो व्यर्थ ही चिन्ता करती हो अगर तुमने मुझे घोड़ा चलाते देखा होता तो ऐसा कभी न कहतीं।'

एकाएक दरवाजे की घण्टी बजी और सरितादेवी ने चौंककर सुखिया से कहा, 'सुखिया—देखो तो कौन है ?'

सुखिया ने बढ़कर दरवाजा खोला और फिर उसकी त्योरियों पर बल पड़ गए···वह पीछे हट गई, साथ ही फूलवती दाखिल हुई और उसके पीछे-पीछे प्रकाश और रत्ना अन्दर आए। इस समय प्रकाश ने साफ सुथरे कपड़े पहन रखे थे···उसके चेहरे पर बच्चों जैसा भोलापन था। उसने अन्दर आते ही सरिता-देवी के पांव छुए। जाने किस विचार से प्रकाश को देखकर सरितादेवी की आंखें भीग गई। उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरकर भारी आवाज में कहा, 'जीते रहो बेटे।'

फूलवती ने प्रकाश की ओर देखा फिर सरितादेवी की ओर देखकर भारी आवाज में बोली, 'काया ही पलट गई है इस लड़के की तो। पिता को तो उसके कर्मों की सजा मिल गई लेकिन बेटे ने सिगरेट तक पीनी छोड़ दी, सुबह उठते ही पहले मेरे चरण छूता है···फिर नहा धोकर पूजा करता है···तब दुकान जाता है···और ग्राहक तो जैसे इसके शिष्ट व्यवहार और मीठी जुबान के दीवाने हो गए हैं।'

दूसरी ओर रत्ना ने मोनिका की ओर देखा

था और मोनिका का पूरा शरीर जाने किस कल्पना से हिलकर रह गया था···उसका चेहरा लाल हो गया था। रत्ना ने अपनी मुस्कराहट को रोकने का प्रयत्न करते हुए मोनिका का हाथ पकड़कर कहा, चलो कमरे में बैठेंगे।'

वह दोनों कमरे की ओर बढ़ी ही थीं कि ऊपर से रामदयाल की आवाज आई।

'मोनी बेटी ! क्लब चलने का समय हो रहा है।'

मोनिका ने इस तरह झटके से रत्ना से हाथ छुड़ा लिया जैसे कोई चोरी कर रही हो··· सब रामदयाल की ओर आकृष्ट हो गए थे। रामदयाल नीचे आए तो प्रकाश ने शिष्टता से नजरें झुकाए हुए बढ़कर रामदयाल के पांव छुए और रामदयाल ने हल्की सी मुस्कराहट के साथ पूछा—

'कैसे हो ?'

'जी ठीक हूं।' प्रकाश ने शिष्टता से उत्तर दिया, 'आप लोगों की स्नेहमयी छाया जो सिर पर है।'

'दुकान कैसी चल रही है ?

'भगवान की दया है।'

'अरे भैयाजी दुकान का पूछते हो।' फूलवती ने कहा, 'वह तो कुछ दिनों में सोना उगलने लगेगी···लेकिन भैयाजी अब बस इतना ध्यान रखना कि मैं ठहरी अबला नारी, सन्तान के सिर पर पिता की छाया बहुत जरूरी होती है। प्रकाश और रत्ना को अपने ही बच्चे समझना।'

'मैं तुम्हारी बहन से पहले ही कह चुका हूं रत्ना की शादी का पूरा खर्चा हम लोग देंगे···प्रकाश भी इसी तरह परिश्रम करता रहा तो इस दुकान से इसका भविष्य भी बन जाएगा।'

'भगवान करे ऐसा ही हो।'

'चलो बेटी।' रामदयाल ने मोनिका से कहा।

'मोनिका ने चोर नजरों से रत्ना को देखा और फिर रामदयाल के साथ बाहर चली गई। सरिता देवी ने प्रकाश से कहा, 'बैठ जाओ बेटा खड़े क्यों हो ?'

'क्या बताऊं सरिता।' फूलवती ने बैठते हुए कहा, 'विचारे की नींद रात भर गायब रही है।'

'क्यों ? किस बात की चिन्ता है ?

'अब तो इसी पर हम मां बेटी का बोझ है न···नियम से बीस रुपये रोज खर्चे को देता है और महीने की पहली को राशन देता है··· बड़े दुकानदारों से थोक में जो सौदा लाता है महीने के महीने उसका भुगतान कर देता है··· इस बार भी इसे कल ही सुबह भुगतान करना है···लेकिन दुर्भाग्य कि रात अचानक एक अल्मारी में आग लग गई···पांच हजार का माल जल गया···उसका तो दुख नहीं लेकिन चिन्ता इस बात की है कि अगर कल सुबह ही दो हजार रुपये थोक वाले को न दिए तो सदा के लिए साख गिर जायेगी··· यह तो किसी तरह आने को सहमत नहीं था··· लेकिन मैंने कहा सरिता ने ही दुकान खुलवाई है वही इज्जत भी बचाएगी·· कहता था मौसी के पूरे रुपये चुका दूंगा···जरा दुकान जमा लूं।'

'ठहरो···मैं अभी देती हूं।'

सरिता ऊपर गई और थोड़ी देर बाद उन्होंने दो हजार रुपये लाकर प्रकाश के हाथ पर लाकर रख दिए।

रखे और आंखें झुकाकर 'मौसी···मैं एक-एक पाई चुका दूंगा।

'अरे···कैसी बातें करते हो बेटे मैं तो तुम्हारी उन्नति की प्रार्थना करती रहती हूं।'

'अरे हां···यह छुट्टी के दिन मोनी और रामदयाल कहां गए हैं ?' फूलवती ने अचानक पूछा।

'क्या बताऊं।' सरितादेवी ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'बाप-बेटी पर रोज नित नई सनक सवार होती है···वह समझते हैं कि मोनी उनकी बेटी नहीं, बेटा है···आजकल बेटी को घुड़सवारी सिखा रहे हैं।'

'घुड़सवारी ! हाय राम !'

फूलवती ने आश्चर्य से सीने पर हाथ रखकर आंखें फाड़ीं।'

● मोनी एक सफेद शानदार घोड़े पर सवार हो गई···रकाबों में पांव डालकर उसने घोड़े की पीठ पर एक चाबुक मारी और दूसरे ही क्षण घोड़ा पिछले पैरों पर खड़ा होकर हिन-हिनाया और फिर दुलत्ती झाड़ कर सरपट दौड़ पड़ा। रामदयाल एक घोड़े की जीन कस रहे थे। उन्होंने मुस्कराकर एक दूसरे साथी से कहा।

'देखो···कितनी थोड़ी आयु में मेरी बेटी को कितनी शानदार घुड़सवारी आ गई है।

'शानदार !' साथी ने आश्चर्य से कहा, 'आपने अपनी बेटी को क्या मौत के मुंह में झोंकने की सौगन्ध खाई है।'

'क्या मतलब ?' रामदयाल चौंक पड़े।'

'अरे···उस दिन भी आपने उसे एक अनट्रेंड घोड़े पर सवार करा दिया था और आज भी···

दूसरे ही क्षण रामदयाल उछल कर घोड़े पर सवार हुए और उनका घोडा सरपट

बन्द करो बकवास

गई क्योंकि अड्डे का दादा मोनी का घोड़ा गया प्रकाश बनियान और पर गर्दन से लग गए थे। में उड़स कर उसका पीठ से चिपकी हुई थी··· उसके बदन पर लाल टी-शर्ट, लाल ब्रिजिस और लाल ही लम्बे बूट थे वह सरपट दौड़ते घोड़े की गर्दन से लिपटी हुई तेजी से चीख रही थी।

'बचाओ···बचाओ···बचाओ···।'

घोड़ा था कि रुकने का नाम ही न लेता था। एकाएक उसके पास से सामने की दिशा से आती हुई एक कार गुजरी और फिर उसमें पूरे ब्रेक लगे कार में एक स्वस्थ सुन्दर नौजवान बैठा हुआ था उसने बड़ी फुर्ती से गाड़ी बैक की और पूरा जोर एक्सीलेटर पर डाल दिया उसकी गाड़ी हवा से बातें करने लगी धीरे-धीरे गाड़ी और घोड़े के बीच का फासला कम-से-कम होता चला गया।

थोड़ी देर बाद ही कार घोड़े के साथ-साथ दौड़ने लगी, नौजवान एक हाथ से स्टेयरिंग सम्भाल कर दूसरे हाथ को बाहर बढ़ा कर घोड़े की लगाम पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था, जल्दी ही उसके हाथ में लगाम आ गई और फिर वह कार की गति धीमी करता चला गया और घोड़े की चाल भी धीमी पड़ती गई, फिर जब कार रुक गई तो घोड़ा भी बिना किसी उत्तेजना के रुक गया। मोनिका अभी तक गर्दन से लिपटी हुई थी।

नौजवान कार से उतर आया और मोनिका को देखकर बोला, 'मेम साहब !' आजकल घोड़े टम-टम में जोते जाते हैं या रेस में काम आते हैं, लेकिन मर्दों के लिए, यह सवारी ऊपर वाले ने औरतों के लिए नहीं बनाई।

अचानक मोनिका ने रकाबों से पांव निकाले और एक ओर कूद कर कार से पीठ लगा कर तालियां बजाती हुई चंचल मुस्कराहट के साथ बोली, 'हेअर, हेअर, ब्रेव यू आर।'

नौजवान ने चौंककर मोनिका की ओर देखा और मोनिका ने कहा, 'आप पहले ही टैस्ट में सफल हो गए।'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह कि आपने फिल्म 'अंदाज' नहीं देखी थी क्या ?' नर्गिस का घोड़ा बिदक जाता है तो दिलीप कुमार बचाता है, और फिर दिलीप कुमार नर्गिस से प्रेम करने लगता है, और गाता है। हम आज कहीं दिल खो बैठें।'

नौजवान ने ठंडी लम्बी सांस ली और बोला, शायद आपको यह याद नहीं कि नर्गिस उससे पहले राजकपूर को दिल दे बैठी थी।'

'घबराइए मत, मेरा दिल अभी मेरे पास सुरक्षित है।'

'लेकिन मेरा दिल मेरे पास सुरक्षित नहीं, यहां 'अंदाज' आपके अंदाज से कुछ 'बेअंदाज' हो गया है।' नौजवान फिर अपनी गाड़ी में बैठता हुआ अपने आपसे बड़बड़ाया 'आजकल के पिताओं को गोली मार देनी चाहिए।'

'व्हाट ?' मोनिका ने आंखें निकाल कर कहा।

'पिछले जमाने के पिता अपनी बेटियों को आटा गूंधना और बेलन पकड़ना सिखाते थे, आजकल के पिता आप जैसी लड़कियों को हिन्दुस्तानी फिल्में दिखा-दिखा कर सारा कल-चर चौपट किए दे रहे हैं।'

'क्या आप किसी देहात से चले आ रहे है ?'

'जी नहीं, मैं टूंड्रा की गुफाओं में रहता हूं।'

यह कह कर नौजवान ने कार स्टार्ट की और मोनिका खड़ी ही रह गई, कार सनाटे भरती हुई चली गई।

मोनिका ने बुरा-सा मुंह बना कर अपने आपसे कहा, बड़ा 'बोर' निकला यह 'डफर' तो।

फिर वह घोड़े पर सवार हो गई और घोड़ा वापस शहर की ओर दौड़ने लगा।

●

राइडिंग क्लब में पहुंच कर मोनिका घोड़े से उतरी तो कई लड़कियों ने उसे घेरे में ले लिया।

'हाय, खाली हाथ ?'

'क्या आज कोई भी हाथ नहीं लगा ?'

'लगा था, लेकिन एकदम बोर, लगता था लड़कियों की सूरत से भी चिढ़ हो।'

'हाय ! तब तो आज की शाम बड़ी 'बोर' 'गुजरेगी।' एक लड़की ठंडी सांस लेकर बोली।

'लेकिन आश्चर्य है, कभी तेरा निशाना तो चूका नहीं।'

'आज चूक गया तो क्या करूं ?'

'चलो—कोई और शिकार ढूंढ़ लें।'

एकाएक मोनिका चौंक कर बोली।

'अरे···यह तो डैडी आ रहे हैं।' फिर वह सबको छोड़ कर रामदयाल की ओर दौड़ती हुई दोनों हाथों को फैला कर चीखी, 'माई स्वीट डैडी।'

'हाय बेटी।'

'रामदयाल ने कार रोक ली और उतर पड़े। मोनिका दौड़ कर उनसे लिपट गई और उनका गाल चूम लिया, फिर बोली, 'डैडी, आप तो कल आने वाले थे।'

क्रमशः
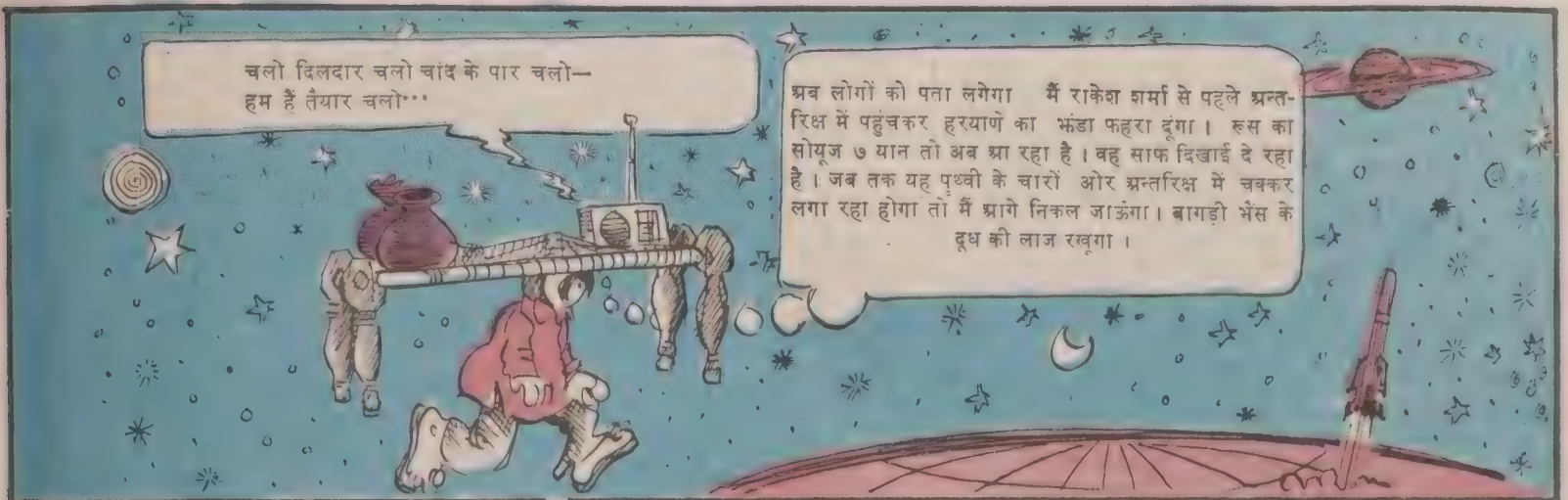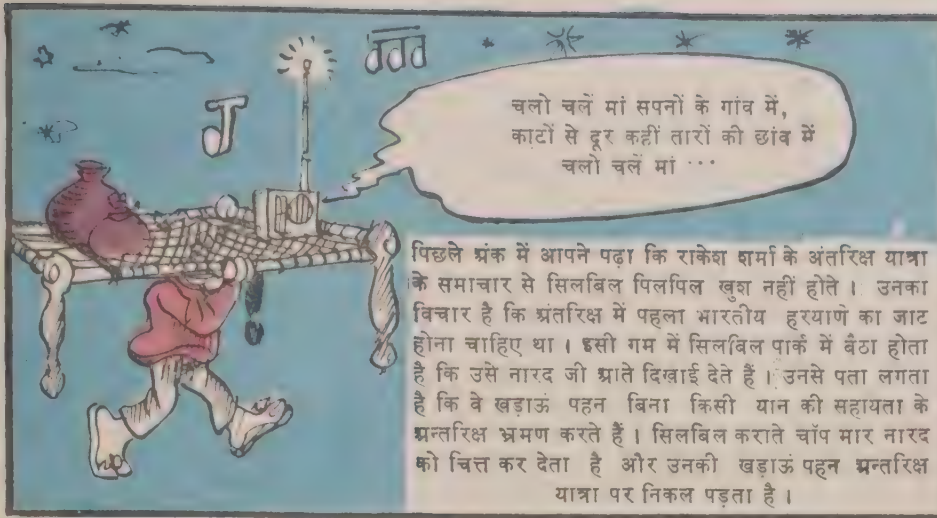
सिलबिल पिलपिल
अंतरिक्ष यात्रा
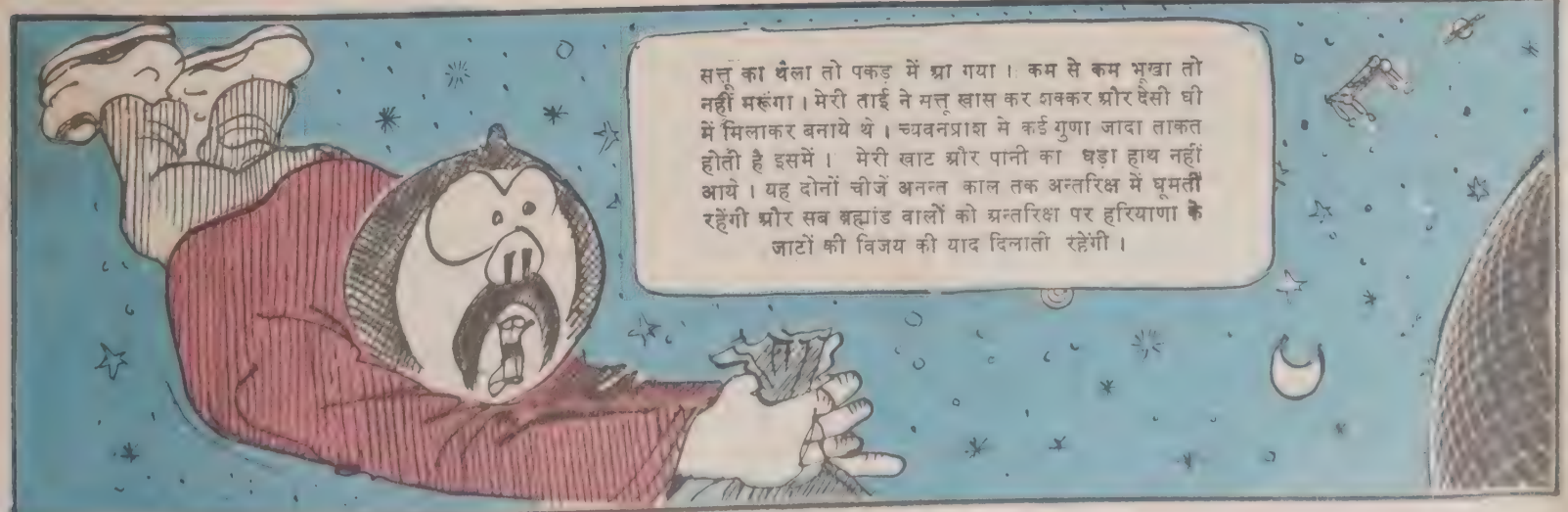
तभी सदूर अंतरिक्ष से सिलबिल को एक विचित्र प्रकार का अन्तरिक्ष यान अपनी ओर आता दिखाई पड़ता है।
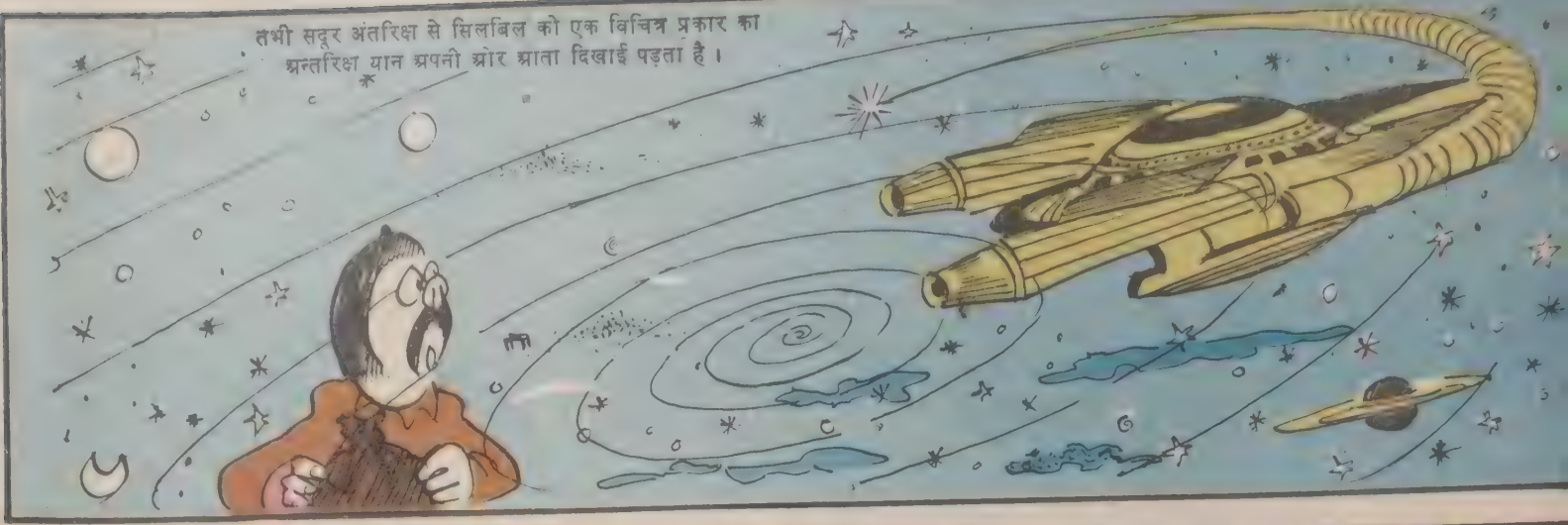
अन्तरिक्ष वासियों को मेरे सत्तू की भनक तो नहीं पड़ गई। पीठ पीछे छुपा लेता हूं। यान तो ठीक मेरे सामने आकर रुक गया है।

फूम! मुझे डराने के लिए धमाका कर रहा है। तुम्हें पता नहीं मैंने बागड़ी भेंस का दूध पी रखा है। इन गीदड़ भभकियों में मैं नहीं आने वाला।
FOOOOM!
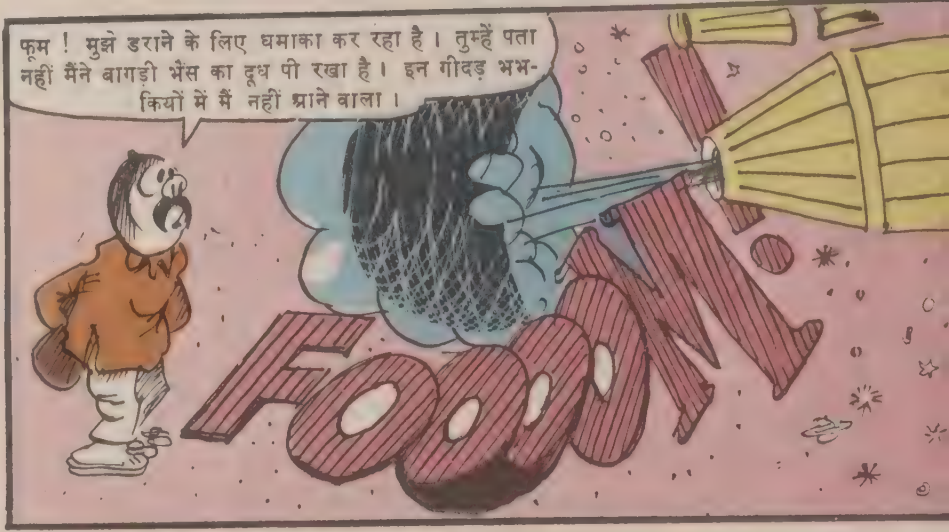
धमाके का एक धुआं साफ होता है तो उसमें एक आकृति उभरती है।
यह किसी ग्रह का जीव लगता है। थ्री नॉट थ्री ताकत की दवाई का कैप्सूल जैसा है।
BZZZNNNNNN
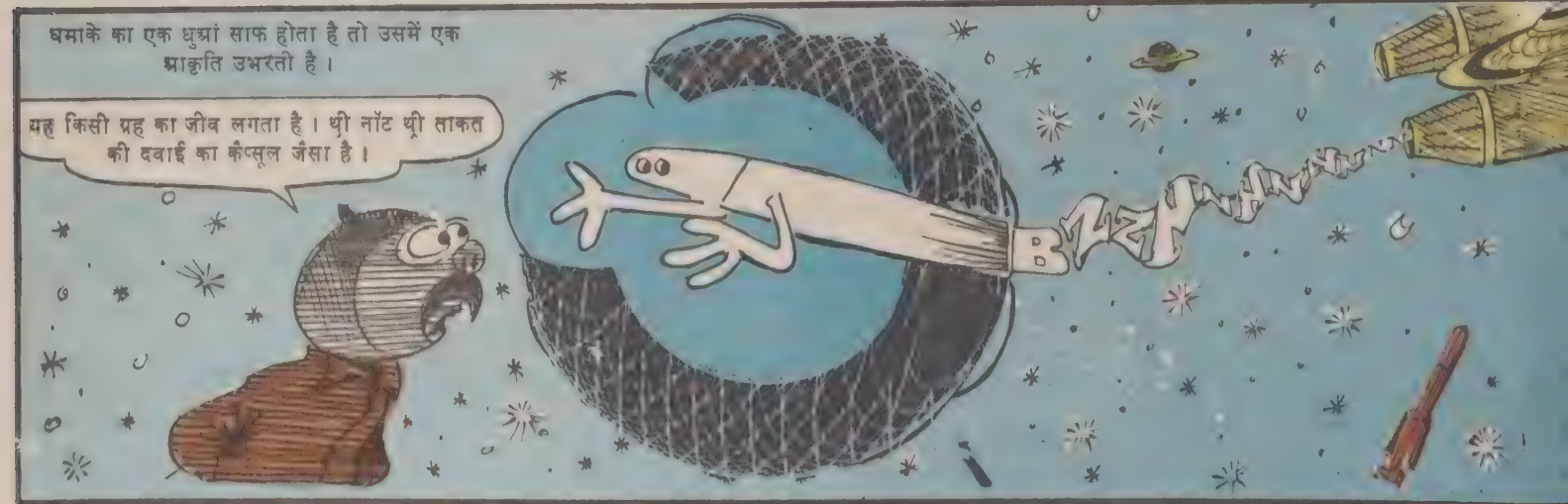
तुम कौन हो? अन्तरिक्ष में क्या कर रहे हो? अगर ठीक-ठीक जवाब न दिया तो हम तुम्हें अपने यान के डिहाईड्रेटर मशीन में डाल कर सत्तू बना देंगे।
सत्तू! मैं सिलबिल हूं। हरयाणे का जाट हूं। अंतरिक्ष यात्रा पर आया हूं। तीर्थ यात्रा तो पहले ही कर चुका हूं।
तुम जाट हो? तुम झूठ बोलते हो? तुम जाट हो तो तुम्हारे सिर पर खाट क्यों नहीं है?

खाट था। वह अंतरिक्ष में भारहीन होकर मेरे सिर पर से उड़ गया। वह देखो दूर अंतरिक्ष में कलाबाजियां खा रहा है।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

आतंकवादियों के दीवाने किस्से
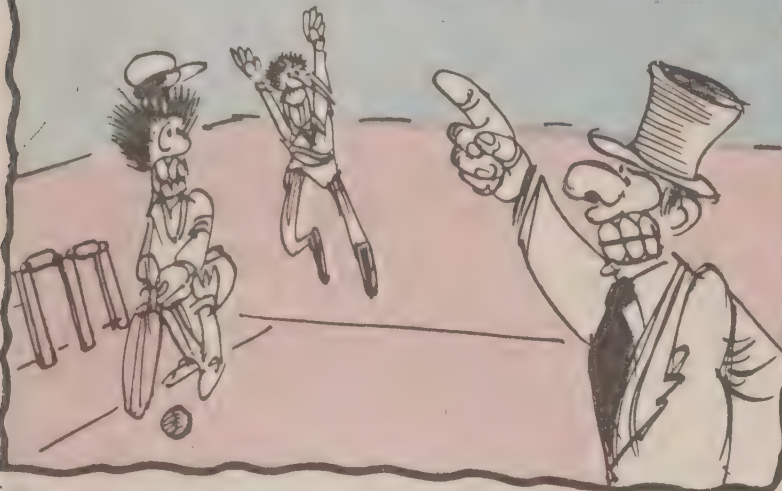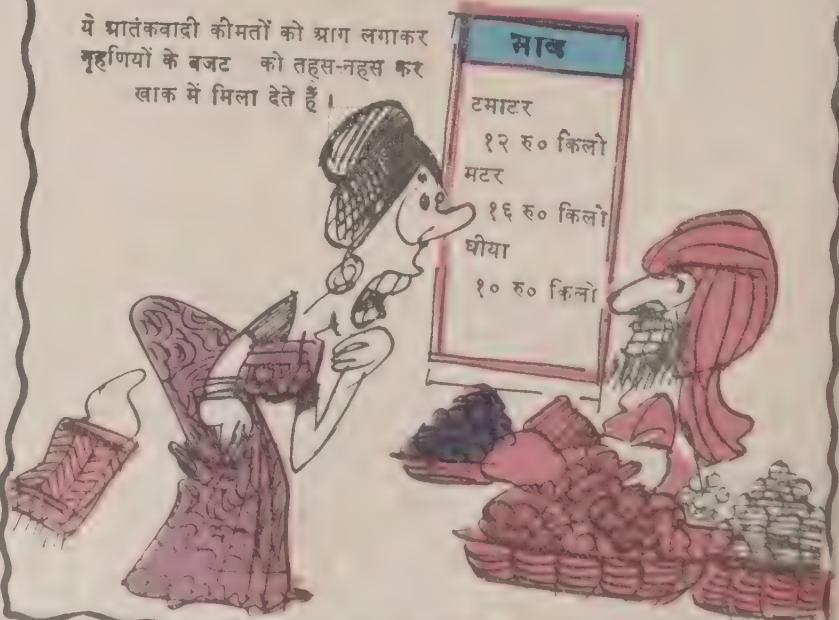
आतंकवादी अफसर
ये आतंकवादी दफ्तरों में मातहतों को बार-बार सस्पेंड और डिसमिस करने की धमकियां देकर आतंकवाद का वातावरण पैदा करते हैं ।

आतंकवादी मन्त्री
ये आतंकवादी वर्ष में एक बार फरवरी में बजट का जोरदार विस्फोट कर सारे देश की जन कमर तोड़ देते हैं ।
बजट
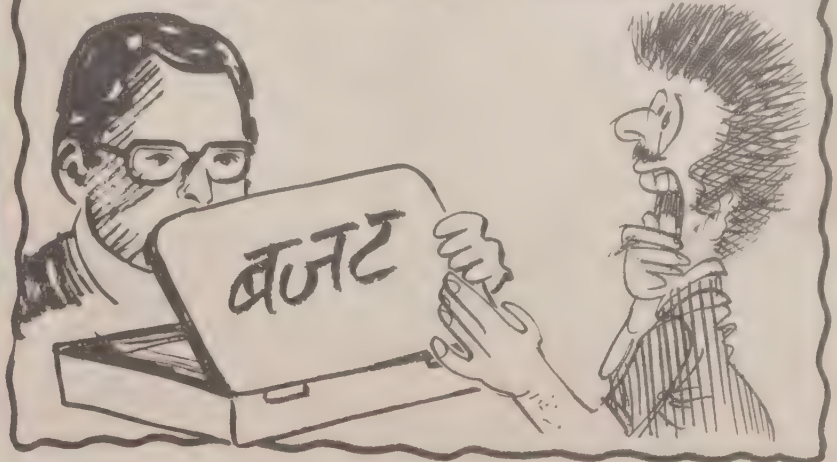
आतंकवादी बेटियां
ये आतंकवादी कद्दू की बेल की तरह बढ़ती हैं और एटम बम बन कर मां-बाप को बेटी की शादी की चिन्ता की आग में जिन्दा ही भूनने लगती हैं ।

आतंतकवादी प्रेमिकायें
ये आतंकवादी प्रेमियों पर अचानक हमला कर देती हैं । 'मैं तुम्हारे बच्चे की मां बनने वाली हूं' कह कर धमाका कर देती हैं। जिसमें प्रेमी की धज्जियां उड़ जाती हैं ।

आतंकवादी चूहे
यह आतंकवादी पुरुषों की अनुपस्थिति में अचानक बिल से निकल पड़ते हैं और नारियों को आतंकित करते हैं ।

आतंकवादी पत्र लेखक
ये आतंकवादी जय संतोषी मां के गुमनाम पत्र लिखते हैं और धमकी देते हैं कि पत्र में लिखे अनुसार न किया तो तुम्हारा दिवाला निकल जायेगा । तुम्हारे घर में आग लग जायेगी, तुम्हारे पेट में कीड़े पड़ेंगे, तुम्हारा अंग-अँग सड़कर गलेगा, एटम बम तेरे घर पर ही गिरेगा आदि-आदि ।

रंगीन हास-परिहास

समझने वाले समझ गये
न समझे वह अनाड़ी हैं
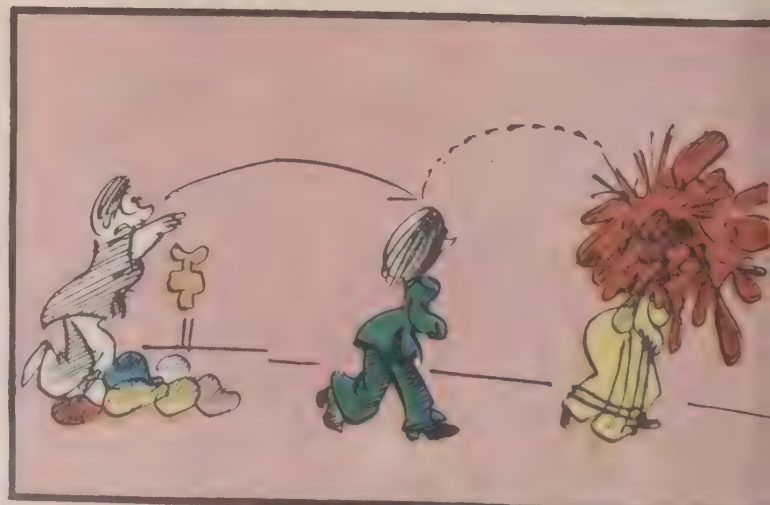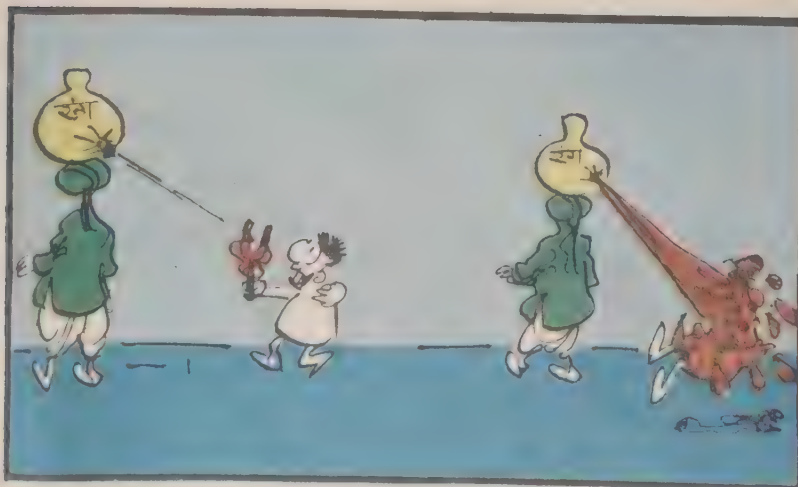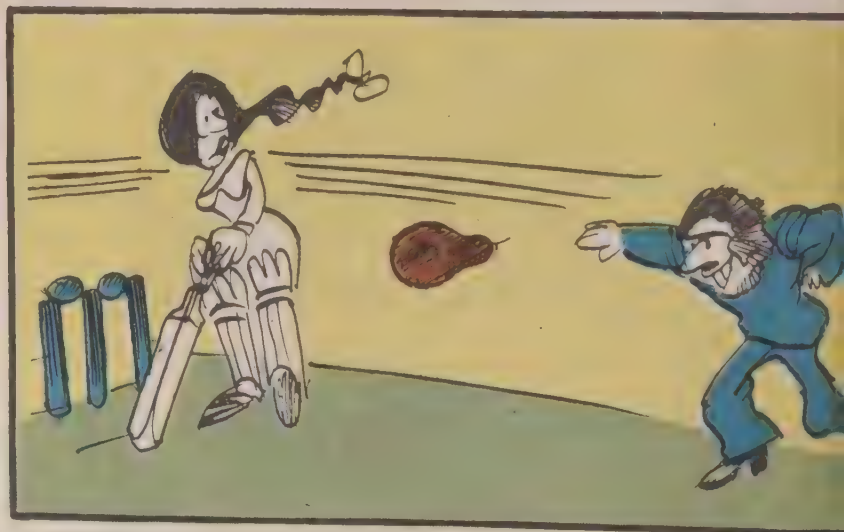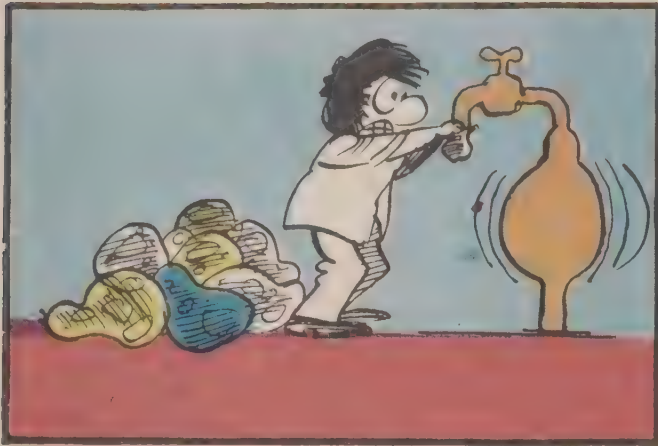
दीवानी चिपकियाँ

काटिये, चिपकाइये और मजे लीजिये

आज रात इस जगह

लेकिन उसी को नजर आयेगी जिसने कभी राशन कार्ड न बनवाया हो।

दीवाना

1984

में प्रलय जरूर आयेगी

जिनसे आपने कर्जा ले रखा है उन्हें एक साल रुकने के लिए कहें।

दीवाना

कुछ विशेष व्यक्तियों की नजर
में
ड्रीम गर्ल
© M. युनुस

फिल्म सेंसर बोर्ड

नेता

जज

एक्स-रे

म्युजियम

चित्रकार

ट्राफिक पुलिस
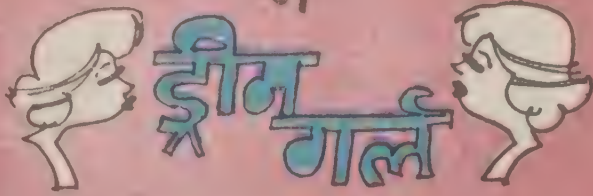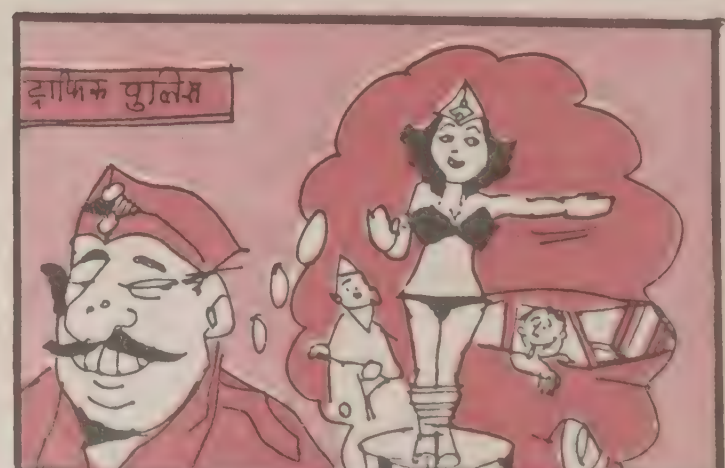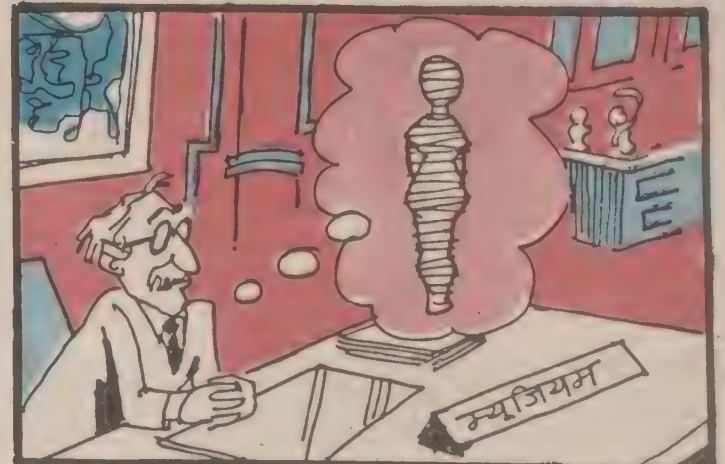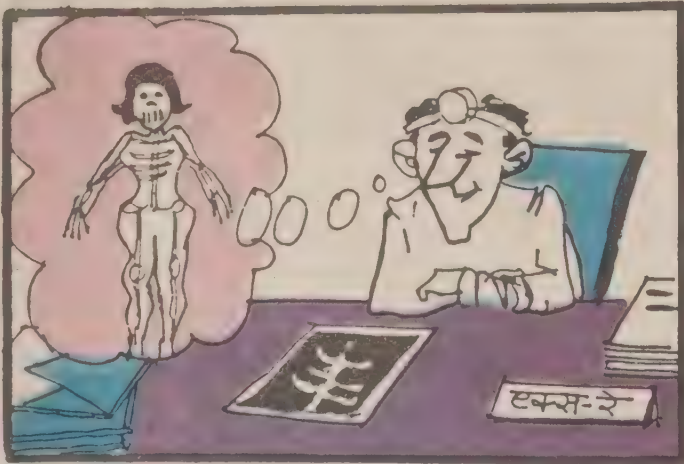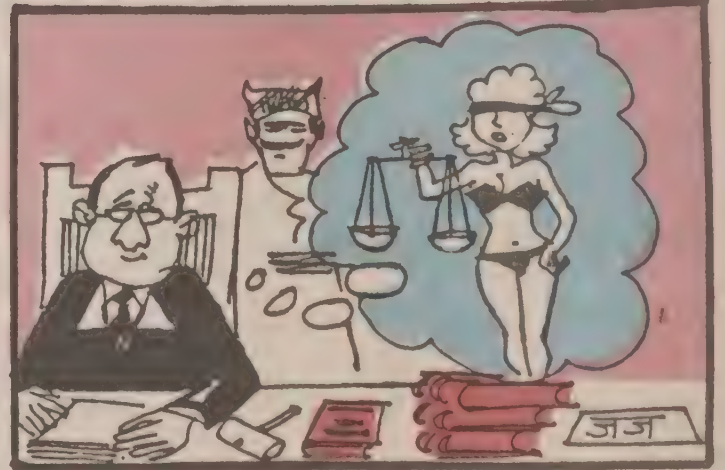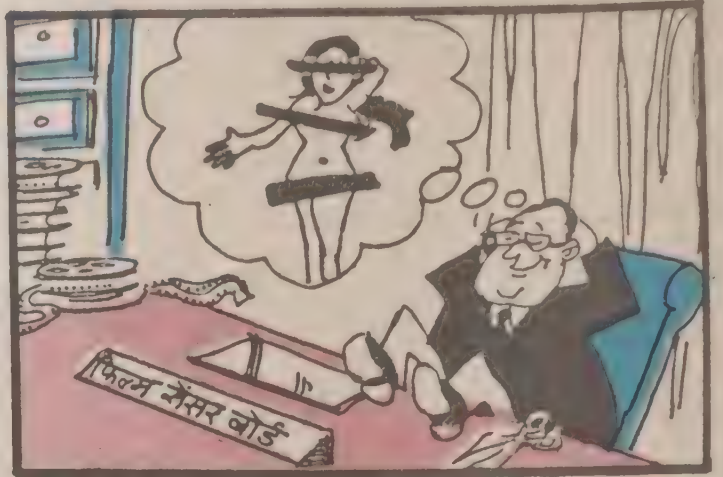
प्र० : गरीब चंद जी, बाग के उजड़ने का दुख किसे होता है

उ० : बाग के उजड़ने का दुख कम से कम उनको नहीं होता जिनको आप सोच रहे हैं। हां, माली को अवश्य होता है।

जगी बुग्रा, करनाल—एक तरफ पत्नी के आंसू हों दूसरी तरफ प्रेमिका के, मन किस पर ज्यादा तरस खायेगा ?

उ० : पत्नी का पल्ला पकड़कर प्रेमिका के आंसू पोछने की कोशिश करेगा।

गुरमीत सिंह सीता, नयी दिल्ली—गरीब चन्द जी प्यार को किस तरह नापा जा सकता है।

उ० : आज तक कोई पैमाना नहीं बना जो प्यार को नाप सके।

महेश शर्मा, कंवर नगर, अमरावती—गरीब चन्द जी, क्या फूल की रक्षा सिर्फ कांटे ही करते हैं ?

उ० : ऐसी बात तो नहीं है। कितनी ही तरह के फूल ऐसे होते हैं जिनके पास कांटों का नाम तक नहीं होता।

मधुकर निलकंठराव घुटे, धुलिया—गरीब चन्द जी, लल्लू और चिल्ली में क्या अन्तर है ?

उ० : अब तक आप लल्लू और चिल्ली में अन्तर का पता नहीं लगा सके, इससे लगता है कि तुम भी लल्लू ही हो।

प्र० : गरीब चन्द जी, अगर इंसान चार पैरों से चलता और जानवर दो पैरों से तो क्या होता ?

उ० : फिर दुनिया का हर काम और मुश्किल हो जाता क्योंकि दो पैरों में से इन्सान अपना एक पैर दूसरे के काम में अड़ाता रहता है। चार पैर होने पर तो वह फिर कई जगह टांग अडा सकता था।

शंकरदास ढंग, जगतपुरा, दिल्ली—आजकल लड़कों की अपेक्षा लड़कियां मन्दिर में अधिक क्यों जाती हैं ?

उ० : आजकल के लड़के दूसरों के माल पर हाथ साफ करने के चक्कर में लगे रहते हैं। यही हाल उनका धर्म के मामले में भी है।

मुलराम सिंह तोमर, उज्जैन (म.प्र.)—गरीब चन्द जी, आप इतने बेशर्म क्यों होते जा रहे हो, सिलबिल पिलपिल तुम्हें बात-बात में चूहा कहते है धमकाते हैं, मारने के प्लान बनाते हैं, इनका साथ छोड़ने में आपका क्या हर्ज है ?

उ० : यह अपनी-अपनी समझ का अन्तर है। मेरे इधर-उधर हो जाने पर उनकी क्या हालत होती है, इस पर कभी ध्यान दिया है आपने ?

दिलीप कुमार अग्रवाल, मुरार ग्वालियर, (म.प्र.)—गरीब चन्द जी, आपके पास रोजाना हजारों पत्र आते हैं तब भी आप अपने को गरीब क्यों बताते हैं ?

उ० : मुझे अपनी बिरादरी का पेट भरने के लिये इससे कई गुना ज्यादा पत्रों की जरूरत रहती है।

कुलवन्त सिंह भाटिया, 'स्वीटी' गोविन्द नगर कानपुर—प्रिय गरीब चन्द जी, यदि आपको भारत की क्रिकेट टीम का कप्तान बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे ?

उ० : दूसरी टीम के कप्तान के ऊपर छलांग लगाकर एक बार उसकी सिट्टी-पिट्टी जरूर गुम करा दूंगा।

'बसंत कुमार' आर्य, परसुरामपुर, सीतामढ़ी गरीब चन्द जी, मैं एक महीने पहले दिल्ली गया था तो दीवाना कार्यालय में भी गया पर आप कहीं नजर नहीं आये, मुझसे इतना क्यों डरते हो ? मेरा नाम बिल्ली नहीं बसंत कु० 'आर्य' है।

उ० : मैं तो बाहर गेट पर ही गुलदस्ते के पास बैठा मूंगफलियां कुतर रहा था। आपने देखा ही नहीं। यदि आपने देखा भी तो डरकर चुपके से वापस क्यों चले गये।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला म.प्र.—गरीबचन्द जी, अगर किस्मत को जंग लग जाये तो क्या करना चाहिए ?

उ० : हाथ पैर चलाना चाहिए क्योंकि किस्मत को जंग तभी लगता है जब हाथ पैर काम में न आने के कारण पहले जंग खाने लगते हैं।

संजय कुमार श्रीवास्तव, 'सरल' राजापुर, (उ.प्र.)—डियर गरीबचन्द जी, नसीहत को लोग दूसरों के लिए ही क्यों प्रयोग करते हैं ?

उ० : क्योंकि हम सब मियां फजीहत हैं ?

प्र० : दिल की आग को कौन-सी 'फायर-सर्विस' बुझाती है ?

उ० : सात फेरे फायर सर्विस ब्रिगेड

प्र० : अगर प्रेमिका प्रेम में साथ देने से इंकार कर दे, तो क्या सोचना चाहिए ?

उ० : दूसरी ब्रांड का टूथपेस्ट इस्तेमाल करने की सोचना चाहिए।

प्र० : डियर गरीब चन्द जी, यह बताइये कि मुहब्बत करने वालों को भूख कम क्यों लगती है ?

उ० : प्रेम की मिठास बहुत होती है। मीठी चीजें कब्जी करती हैं।

प्र० : पत्नी और प्रेमिका में से कौन ज्यादा उपहार पाना चाहती है ?

उ० : प्रेमिका ! क्योंकि उसे बीमे की रकम से कोई हिस्सा मिलने वाला नहीं।

राहुल गोदीका, जयपुर—गरीब चन्द जी, एक बार मैं कुतुब मीनार पर से कूदकर आत्म-हत्या करने की सोच रहा था पर मुझे यह दुनिया बड़ी सुंदर लगने लगी। इसका क्या कारण है ?

उ० : दूर से दुनिया सुंदर ही लगती है। पता तो ओखली में सिर देने के बाद ही लगता है। आपने सुना भी होगा 'दूर के ढोल सुहावने'।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मण्डला, म.प्र.—गरीब चन्द जी, अधिक पैसा इन्सान को क्या बना देता है ?

उ० : इन्कम टैक्स वालों का जानी दुश्मन।

प्र० : गरीब चन्द जी, आदमी पाप के दलदल में कब फंस जाता है।

उ० : जब वह यह देखता है कि पुण्य करने पर स्वर्ग में इनाम स्वरूप वहीं मिलेगा जिसे यहां पाप समझा जाता है।

सुखविन्द्र सिंह जौड़ा, नई दिल्ली,—इन्सान की नजरों में झूठ जीतता है मगर भगवान की नजरों में सच। क्या यह सही है ?

उ० : लगता है भगवान ने आपको भी अपने राज बताने शुरू कर दिये हैं। पहले केवल इदी अमीन को ही यह श्रेय प्राप्त था।

अशोक खुराना, स्वीटी, कलानौर,—हर गरीब नशे में होने के बावजूद कहता है मैने कहां पी है क्यों ?

उ० : वह ठीक ही कहता है। नशे में आने के बाद वह शराब नहीं पीता बल्कि शराब उसे पीने लगती है।

अशोक खुराना, कलानौर—मेरी प्रेमिका ज्यादा ही तंग करने लगी है क्या तुम पीछा छुड़ाने में मेरी सहायता कर सकते हो ?

उ० : आप अपना हाथ तंग कर लें वह अपने आप पीछा छोड़ देगी।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८ बी, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

संसार की सबसे महत्वपूर्ण भूल

३२ लाख पाउंड का चक्कर

एक मामूली क्लर्क ने एक भीमकाय बैंक की धनराशि जुए में हार दी।

ऊंचे आर्थिक संसार में कुछ ही लोगों ने मार्क कोलम्बों का नाम सुना होगा। इसका कोई विशेष कारण भी नहीं था वह था भी एक मामूली व्यापारी जो विदेशी मुद्रा बदलने का धंधा करता था तथा लौचड़ बैंक के 59,000 कर्मचारियों के जैसे ही उसे भी तनख्वाह मिलती थी। यह व्यक्ति लुगानो के स्विस क्षेत्र का वासी था।

परन्तु 1974 में कोलम्बो ने सारे संसार के समाचारों में सुर्खी में स्थान प्राप्त किया जिसने पैसे के लेनदेन विशेषज्ञों को आश्चर्य चकित कर हक्का बक्का कर दिया। लायड बैंक अन्तर्राष्ट्रीय ने अनाऊंस किया कि उनके लुगानो क्षेत्र जो कि उनकी 170 अन्तर्राष्ट्रीय शाखाओं में सबसे छोटा है में गड़बड़ के कारण, ब्रांच मेनेजर एगीडियो मोम्बेली और कोलम्बो को सस्पैंड करना पड़ा है तथा इससे बेंक को 32 लाख पाउंड की बड़ी रकम का घाटा हुआ है।

स्विटजरलैंड के किसी भी बैंक द्वारा घोषित सबसे बड़ा नुकसान था यहां तथा ब्रिटिश बैंकों में तो उसकी कोई मिसाल उपलब्ध नहीं थी। इस समाचार से लंदन के लॉयडस के शेयरों से 20 लाख पाउंड का घाटा हुआ तथा वहां के उच्चाधिकारी इस चक्कर से दुखी थे कि ऐसा क्या लूपहोल या कमी थी जिससे यह सम्भव हो पाया।

स्मार्ट 28 व्हीलर डीलर ने क्या किया था तथा वह ऐसा करके, बच कर कैसे निकल पाया ?

कोलम्बो एक छोटा सा व्यक्ति था पर इरादे उसके बहुत बड़े थे। रोज विदेशी मुद्राओं के अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट में बदलते भावों को वह बड़े ध्यान से अध्ययन करता रहा तथा इस नतीजे पर पहुंचा कि यदि कोई आदमी हिम्मत और सूजबूझ से काम ले तो जब दाम कम हों तब शेयर खरीदकर अच्छे दामों पर बेच, अच्छा मुनाफा कमा सकता है। यही देख उसने अपने बैंक के फार्म का एक छोटा सा हिस्सा अपने तरीके से चलाने का फैसला किया।

उसने तीन महीने में स्विस फैंकों से 34 लाख यू.एस. डालर खरीदने का इकरार किया यदि उसके अंदाज के हिसाब से, कीमत अदा करने के समय डालर की कीमत कम होगी तो वह अपने फैंक्स सस्ते डालरों से वापिस खरीद लेगा परन्तु उसकी आशा के विरुद्ध डालर की कीमत घटी नहीं बल्कि ऊंची चढ़ गयी। तथा कोलम्बो को इस सौदे में सात लाख फैंक्स का घाटा हुआ जो लगभग एक लाख पाउंड कीमत का था जो 9,000 पाऊंड सालाना कमाने वाले मामूली क्लर्क के लिए बहुंत बड़ा था, परन्तु कोलम्बो ने सोचा यह घाटा, उस बैंक के लिये जिसने अभी 78 लाख पाऊंड का नफा छः माह की अवधि में घोषित किया है कोई बहुत अहमियत नहीं रखता।

कोलम्बो को मालूम था कि यदि उसने घाटे का जिक्र अपने बांस मोम्बली से किया तो वह उसे फौरन बरखास्त कर देगा इसलिए उसने अपने दांव को बढ़ाने का फैसला किया और सोचा या तो दुगुने या फिर कुछ भी नहीं।

इस प्रकार उसने बहुत ही हैरत अंग्रेज तौर से सट्टा शुरू किया लॉयड की जामकारी के बिना तथा उनके किसी प्रकार के शक और शुब्हे के बिना उसने धड़ल्ले से सौदों में लॉयड के नाम का प्रयोग आरम्भ कर दिया तथा नौ महीने के थोड़े से अरसे में 4,580 लाख पाउंड के सौदे किये। पहले उसने शर्तें लगाई कि डालर की कीमत घटेगी, कीमत नहीं घटी तत्पश्चात उसने डालर की कीमत के बढ़ते जाने पर अपने पैसे लगाये परन्तु कीमत बढ़ी भी नहीं।

कोलम्बो ऐसे बैंकों से सौदे करता रहा जिसके लिये वह ओथोराईजड भी नहीं था, साथ ही हैड आफिस द्वारा रोज के कर्जे और होल्डिंग की 700,000 पाऊंड की लिमिट को जानबूझ कर नजर अन्दाज करता रहा, वह अपने सौदों को बेचने के काउंटर बैलेंसिग आर्डर से भी कवर नहीं कर रहा था। वह अपने घाटों को पूरा करने के लिये इंटर बैंक स्वंयं सुविधा के अन्तर्गत कैश उधार ले रहा था तथा अपने इन सौदों का ब्योरा हैड आफिस की स्विस आथोरिटी को भेजने के बजाये अपनी डायरी में लिख रहा था

ऐसा पागलपन आखिर कब तक चलता तथा सन् 1974 में वह दिन आ पहुंचा जब कोलम्बो का खेल समाप्त हो गया फ्रांस के एक बैंकर ने साधारण तौर पर लॉयड के अधि... से कहा कि, लुगानो हम ये हद तक उधा... चुका है' क्वीन बिक्टोरिया स्ट्रीट के ... दफ्तर में खतरे की घंटियां बजने लगी; बैंक से फोन कर चैक करने पर पता चल... लुगानो ने वहीं से भी बहुत बड़े बड़े ... सोदे किये हैं।

अगली सुबह ही तीन उच्च अधि... लंदन से रवाना हो गये, तथा बिना खबर... उन्होंने कोलम्बों, मोम्बेली तथा कार्ल सेंपट... जो तीनों लॉयड की शाखाओं का इंचार्ज... जा पकड़ा जो भी कागजात उनके हाथ... लेकर वह तीनों मुलाजिमों सहित वापिस लन्दन आ गये।

बहुत ही कठिनाई से सप्ताह भर दिन... एक कर अफसरों ने उस महँगी गुत्थी को स... जो की कोलम्बो ने उलझायी थी। परेशान हैरान अफसरों को मालूम हुआ कि कोलम्... सट्टे की सोदे बाजी 235 लाख पाऊंड की थी तथा उनका पैसा अभी भी चुकाया गया था तथा इसके भुगतान की पूरी जि... वारी बैंक की थी कोलम्बो अपने सौदे से नहीं हटा था उसने स्विटजरलैंड में लॉय... तीन सबसे बड़े बैंकों की कुल धनराशि... अधिक का जोखिम उटाया था फिर भी दफ... खातों में सिर्फ 36,000 पाऊंड के सौदे दर्ज...

बैंक आफ इग्लैंड के गवर्नर की इजा... से लॉयड बैंक ने बहुत बड़ी पैसे की र... स्विटजरलैंड के लुगानों ब्रांच में ट्रांसफर कि... ताकि कोलम्बो द्वारा देने का वायदा किए... सौदा के उधार का भुगतान किया जा... इसके पश्चात गुप्तरूप से बैंक के इन्टरनेश... मनी मार्कट डायरेक्टर रोबर्ट ग्रास ने, ... हफ्ते काम कर नुकसान को कम से कम कि... क्योंकि जनता में इस बात के फैल जाने... यह कार्य करना और भी कठिन हो जाता। क... बहुत ही बड़ा था अन्त में जब सब किताबों... ठीक कर लिया गया तथा सारे कर्जे चुका दि... गये लॉयड को 32 लाख पाऊंड का घा... हुआ था।

जब इस बम्बं के समान समाचार ... विस्फोट चेयरमैन सर एरिक फाकनर ने कि... तो उस समय कोलम्बो तथा उसकी पत्नी लुगा... झील के ऊपर पहाड़ी निवास को जा चुके... मोम्बेली भी लम्बी छुट्टी पर गायब था।

परन्तु एक वर्ष बाद दोनों ही लुगानो ... अदालत में कई अपराधों के लिये गिरफ्त... किए गए थे जिनमें मुख्य अनुचित मिसमेने... मेन्ट खातों में झूठी बातें भरना तथा स्वि...

शेष पृष्ठ-३६ पर

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम

इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

प्रवेशिकाएं 15-6-84 से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO.36

नाम का चक्कर

राजकपूर की फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' की हीरोइन मन्दाकिनी के नाम पहले यामिनी फिर माधुरी तथा अन्त में मन्दाकिनी करने के रहस्य को स्वयं राजकपूर ने बताया ।

राजकपूर का कहना है कि पौराणिक कथाओं के अनुसार गंगा जब अपने पूरे तेज के साथ पृथ्वी पर उतरी थीं तो शिवजी ने उन्हें अपनी जटाओं में समेट लिया था फिर उन्हें तीन नदियों अलकनंदा, भाग्यश्री तथा मन्दाकिनी के रूप में छोड़ा था, यही कारण था वे इन्हीं तीनों नामों में से एक अपनी हीरोइन के लिये चुनना चाहते थे । मन्दाकिनी उन्हें सबसे अधिक पसन्द आया ।

हीरोइन की उनकी पसन्द ने कुछ उम्मीदवारों को निराश किया है जिनमें पद्मिनी कोल्हापुर तथा पूनम ढिल्लों विशेष उल्लेखनीय हैं । पूनम की सिफारिश जाहिर है राजेन्द्र कुमार ने की थी ।

रंजीत वर्क वैसे सबसे खुश है क्योंकि उनकी फिल्म 'मजलूम' में मन्दाकिनी माधुरी के नाम से काम कर रही है । उनका ख्याल है राज साहब के इस लड़की को चुन लेने के बाद, उनकी 'मजलूम' को ज्यादा पब्लिसिटी प्राप्त होगी ।

'मक्का' न जा पाने की निराश

हालांकि मनमोहन देसाई की 'कुली
सफल रही है परन्तु उन्हें फिल्म को मक्क
मदीना में जाकर उसकी शूटिंग न कर
का अब भी अफसोस है ।

उनका विचार फिल्म की लोकेशन
का था परन्तु बाद में उन्हें मालूम हुअ
कोई भी व्यक्ति जो मुसलमान नहीं है
नहीं जा सकता । दूसरा प्लैन उन्होंने अप
मुसलमान साथियों को वहां भेज कर
करवाने का बनाया परन्तु उसमें कठिनाई
अभिनेता सत्येन कापू के रूप में, जो फि
अमिताभ के पिता का रोल अदा कर रहे
लोकेशन शूटिंग में सत्येन को वहां जाना
क्योंकि फिल्म में अमिताभ अपने पित
'हज' के लिए भेजता है । हिन्दू वहां जा
सकते और जब तक देसाई के दिमाग में
का विचार जन्मा सत्येन बहुत सारी शूटिंग
चुके थे इस कारण उनको बदलने का
ही नहीं उठा ।

मन की आवाज पर चोट !

हालांकि वीडियो फिल्मों की चोरी
अधिक बढ़ती जा रही है, फिर भी सब
नष्ट नहीं हुआ है ।

सुनील दत्त की फिल्म 'दर्द का
केन्सर पर आधारित है तथा उसकी
सुनील द्वारा कैंसर खोज पर ही व्यय
जानी थी।इसी कारण सुनील ने लोगों से
हरों द्वारा अपील की थी कि इस फिल्म
वीडियो पर न देखें ।

अब उनकी कम्पनी में उन लोगों द्वार
डोनेशन प्राप्त हो रहे हैं जिन्होंने फिल्म
वीडियो पर ही देखा था । पाश्चाताप
तथा दिल की आवाज सुनने का एक तरी

चतुर श्रीदेवी

फिल्म जगत की सब ऊंची हीरोइ
श्रीदेवी ही अकेली ऐसी हैं जिन्हें उच्च
के साथ काम करते समय अपना दिमाग
रख सबसे एक सा व्यवहार करना आता

अन्यथा कोई कैसे बताये कि श्रीदेवी
ऊंचे सितारों जैसे अमिताभ बच्चन,
खन्ना और जीतेन्द्र के साथ एक ही सम
कैसे काम कर सकती है । इस समय व
फिल्म राजेश के साथ तथा तीन-तीन
जीतेन्द्र तथा अमिताभ के साथ कर रही हैं

वह अपनी सद्भावना तीनों पर
रूप से बखेर रही है तथा किसी को भी
असली पसन्द का अनुमान नहीं हो रहा ।

उर्दू हास्य व्यंग

जब नौकर इन्टरव्यू लेंगे ?

मूल : सुरैया नबी

असली घी के बारे में शायद इब्राहीम जलीस महोदय ने लिखा था कि जिस तरह लोग आजकल इत्र का उपयोग करते हैं, उसी प्रकार आने वाले युग मे असली घी का उपयोग किया जाएगा पर साहब असली घी के बिना लोग जिंदा हैं और आइन्दा भी जिंदा रहेंगे, लेकिन नौकरों के बिना गुजारा मुश्किल है। हाय-हाय, कितने सौभाग्यशाली थे वे लोग जिन्हें नौकर आसानी से मिल जाते थे। एक हम हैं कि इस स्वीकृति के बावजूद कि: 'नौकर जो नहीं है, तो कुछ भी नहीं है।' कोई खुदा का बन्दा वा बन्दी हमारे घर का रुख नहीं करता। भूले से आ भी जाये तो जल्दी ही वियोग दे जाता है। साहब ! आप से क्या परदा ! हम यथासंभव कोशिश करते हैं कि नौकर/नौकरानी महोदय को कोई कष्ट न होने पाये। कई बार तो इस कोशिश में यों महसूस होता है जैसे हम स्वयं नौकर बन गये हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व जब नौकरों का अकाल न था, महिलाएं बच्चों, पतियों, पड़ौसियों और रिश्तेदारों की बातें किया करती थीं, पर अब जहां चार औरतें इकट्ठी हुयीं, यह महसूस होने लगा कि—

'हाय इन्सान के आसाब पै नौकर है सवार...'

जिन्हें नौकर नहीं मिलते- उन्हें नौकर न मिलने की शिकायत है, जो खुदा की इस नियामत से नवाजा है, वह भी कुछ प्रसन्न नहीं हैं।

अभी कुछ रोज की बात है। मैं मिसेज खान के यहां गई। वह रसोईघर में मुंह लटकाये बैठी थीं। सोचा, शायद खान साहब से झगड़ा हो गया हो, मगर कुरेदने से पता चला कि नौकर साहब नाराज हैं। मुझे हमदर्द पाकर गिला करने लगीं, मगर छोड़िए साहब ! अगर उनके नौकर ने सुन लिया तो फौरन भाग जायेगा और मैं नहीं चाहती कि मिसेज खान का यह नौकर भी भाग जाये। यकीन जानिये, आसार कुछ ऐसे नजर आते हैं कि भविष्य में आदर सिर्फ उस व्यक्ति का होगा जिसके पास घर का काम संभालने को एक अदद नौकर मौजूद होगा, और जिस प्रकार वर्तमान युग में दौलत बड़ाई का निशान है, भविष्य में नौकर की मौजूदगी बड़ाई का सबूत होगी। लोग उन घरों में बेटी ब्याहाना गर्व-योग्य समझेंगे जहां नौकर मौजूद हो। आजकल लड़के वाले चाहते हैं कि लड़की बहुत-सा दहेज लाए। कुछ घराने शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं। आने वाले युग में, दोनों समधिनों का वार्तालाप कुछ इस अंदाज का होगा :—

लड़की की मां—बहन लड़की की ओर से चिन्ता मत करो। अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना पसन्द नहीं, पर सच तो यह है कि मेरी बच्ची लाखों में एक है। खैर एम. ए. का इम्तहान दे रही है एकाध हफ्ते में नतीजा आने वाला है। घरदारों में भी...

लड़के की मां—माशाअल्लाह, मगर बहन...

लड़की की मां—और शक्ल-सूरत तो आप देख चुकीं। बिल्कुल चीन की गुड़िया लगती है।

लड़के की मां—बाजा इरशाद। लेकिन...

लड़की की मां—दहेज की चिन्ता न करें। अगर आलीशान नहीं तो ऐसा बुरा भी नहीं...

लड़के की मां—मेरा भी तो सुनिये। माना लड़की सुन्दर है, शिक्षित है; रहा दहेज तो उसका हमें लालच नहीं। हमारे लड़के की तो बस एक ही जिद है...

लड़की की मां ने आंखें बंद कर लीं और सिर सोफे की पीठ पर इस तरह टिका दिया जैसे बेहोश होना चाहती हैं। लगता था समधिन की बात समझ गयीं। लड़के की मां ने बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए कहा —'हमारे लड़के की यही जिद है कि ऐसी जगह शादी करूंगा जहां से लड़की घर का काम-काज संभालने के लिए नौकर भी साथ लाये।'

लड़की की मां—(प्रतिरोध में) लेकिन यह कैसे हो सकता है ? आप जानती हैं नौकर आजकल कितनी मुश्किल से मिलता है।

लड़के की मां—जो भी हो...लड़का कहता है, 'बहनें अपने-अपने घर की हुई। तुम्हारी उम्र अब आराम करने की है। इसलिए नौकर जरूरी है और बुआ, सच जानो, मैंने अपनी बिरादरी में इसलिए रिश्ता नहीं किया कि वहां किसी लड़की के साथ नौकर मिलने की आशा न थी। सुना था, तुम्हारे यहां एक नौकर मौजूद है, इसलिए यहां चली आयी, नहीं तो अपने खानदान में एक से एक लड़की पड़ी थी—नौकरों की किल्लत के कारण इस तरह के दृश्य प्रायः देखने में आयेंगे।

सजी-सजायी इमारत के माथे पर बोर्ड लगा हुआ है—

'नौकर या नौकरानी मिल सकती है। जरूरतमंद महिलाएं और महाशय हमसे सम्बन्ध स्थापित करें।'

अन्दर सुसज्जित कमरे के मध्य में एक 'नौकरानी' बहुत उम्दा साड़ी पहने बैठी है। यह साड़ी उसके बेढंगे शरीर पर बिल्कुल नहीं सज रही। मेज पर लिफाफों का ढेर है। वह एक लिफाफा उठाती है और पढ़ कर बहुत उपेक्षा से रद्दी की टोकरी में डाल देती है। आखिर कुछ खुशकिस्मत लिफाफे चुन लिये जाते हैं। वह मेज पर रखी हुई घंटी बजाती है और नौकर या नौकरानी की जरूरतमंद महिलाएं कमरे में प्रवेश करती हैं। सब की दशा खराब है। कपड़े मैले। बाल बिखरे हुए। चेहरे और हाथों पर कालिख के धब्बे। यह वह महिलाएं हैं जो मेक-अप के बिना किसी से मिलना पसन्द न करती थीं। मगर अखबार में 'नौकरानी या नौकर मिल सकता है' का विज्ञापन पढ़ते ही पागलों की तरह दौड़ी हुई आयीं। अफरा-तफरी की व्यवस्था है। सभी को नौकरानी की जरूरत है। इंटरव्यू शुरू होने वाला है। दिल धड़क रहे हैं कि न जाने क्या पूछ लिया जाये। लीजिए इंक्वायरी शुरू हो गयी। कुर्सी पर बैठी महिला ने सबसे पहले हर एक का गौर से जायजा लिया। शायद आर्थिक दशा का अनुमान लगा रही थी। फिर सवाल पूछने लगी—

'क्या काम करना पड़ेगा ?'

'तनख्वाह क्या मिलेगी ?'

'घर में सुबह-शाम कितने सालन पकते हैं ?'

'फ्रिज मौजूद है या नहीं ?'

'घर के सदस्यों की संख्या ?'

'रसोईघर कैसा है ?'

'खाना पकाने का आधुनिक सामान मौजूद है या नहीं ?'

महिलाएं एक-एक करके सामने आतीं और जवाब देकर बाहर निकल जातीं। किसी का घर छोटा था तो किसी के यहां फ्रिज न था। किसी के पास 'आवश्यकता' की सारी चीजें मौजूद न थीं—तो कोई आर्थिक दृष्टि से कमजोर नजर आई। आखिर सिर्फ दो महिलाएं रह गयीं। एक बेगम ख्वाजा थीं और दूसरी मिसेज शेख। दोन नगर की सम्मानित व्यक्तित्व थीं।

शेष पृष्ठ ५० पर

प्र : क्या पशु पक्षी दुःख दर्द व खुशी महसूस कर सकते हैं ? तथा उनकी भावनायें भी हमारी तरह होती हैं। मनुष्य में दुःख और और खुशी की भावनाएं क्यों उत्पन्न होती हैं ?

उ० : चार्लस डारविन का विश्वास था कि पक्षी भी मानवों के समान दुख दर्द, खुशी, नाराजगी, गुस्सा इत्यादि महसूस करते हैं, उन्होंने 'मैन एण्ड एनीमल' नामक पुस्तक में दोनों के भावों की तुलना भी की है।

मस्तिष्क के आधुनिक अध्ययन से पता चलता है कि पक्षी या पशु जितना उच्च श्रेणी का होता है उतने ही अधिक भाव वह महसूस कर सकता है। मानव मस्तिष्क में पाई जाने वाली ग्रन्थी थैलमस, जो कि भावों को महसूस करने वाले अधिकतम रसायन उत्पन्न करती है। बन्दर के दिमाग की इस ग्रन्थी से 12 गुना बड़ी होती है तथा चिम्पाजी से पांच गुना बड़ी होती है। उत्तेजना की स्थिति में उत्पन्न रसायनों के अध्ययन से पता चलता है कि मिश्रित भाव केवल उच्च स्तनपायी जीवों में ही उत्पन्न होते हैं। उत्तेजना को रोकने के रसायनों के रिसेप्टर मानव दिमाग के अतिरिक्त बन्दर, चूहे तथा गायों में पाये गये हैं परन्तु निम्न श्रेणी के जानवर जिनके कम विकसित मस्तिष्क हैं जैसे शार्क में नहीं पाये गये। इसका अर्थ हुआ शार्क उत्तेजना महसूस ही नहीं कर सकतीं।

हमें पूरी तरह इस बात का ज्ञान नहीं है कि पक्षी किन-किन भावों को महसूस कर सकते हैं, परन्तु कोनरड लेरेंज के बत्तखों के अध्ययन से यह अवश्य कहा जा सकता है कि उन्हें दुःख अवश्य अनुभव होता हैं। 'लोरेंज' का कहना है कि बत्तखों में भी अपने साथी की मृत्यु हो जाने से वैसी ही बाह्य शारीरिक तबदीलियां देखी जा सकती हैं जैसी किसी प्रिय को खो देने पर मानव में देखने में आती हैं। बत्तखों की आंखें भी दुःख के समय भीतर को धंस जाती हैं जिससे आंखों के नीचे की खाल ढीली पड़ जाती है।

मनुष्य तथा बत्तख दोनों में ही दुःख में शरीर में एक केमिकल एक्शन या रसायनिक बदलाव उत्पन्न होता है। यह मालूम है कि संतान खो देने से दुःखी मां-बाप के मल का केमिकल कोम्पोजीशन दूसरों के संतान खोने का दुःख नहीं है, भिन्न होता है, तथा दुःख से उत्पन्न आंसू भी प्याज की झल से उत्पन्न आंसुओं से कतई फर्क होते हैं।

इस प्रकार भावनाओं को रसायनिक अनुबन्ध हैं जो कि विशेष परिस्थिति में विशेष व्यवहार उत्पन्न करते हैं प्राकृतिक विकास के साथ-साथ इस प्रकार के व्यवहार के भी विशेष रूप विकसित हो गए हैं। ये जहाँ भी जिस विशेष स्थिति में उत्पन्न होते हैं, इनका खास मकसद होता है।

एक विशषज्ञ का कहना है कि स्वयं से बात-चीत कर लेने से दुःख में कमी तथा अपना हानि को घटाती है उनका कहना है जब किसी दूसरे को जरूरत से ज्यादा शाबाशी किसी काम के लिए मिलती है, तो हमारे मन में ईर्ष्या पैदा होती है। गुस्सा आने पर हमारा शरीर लड़ने को तैयार हो जाता है। तथा खुशी के समय हमारी प्रतिक्रिया से ऐसा दिखाई देता है, कि दूसरों को पता चले हमने अच्छा काम किया है, साथ ही सफलता पाने पर हौसला बढ़ता है था यूं कहिये कि हमारे शरीर में बेहतर काम करने की शक्ति उत्पन्न होती है। क्योंकि जीते हुए का सब साथ देते हैं।'

परन्तु यह कहा जा सकता है कि कोई भी मनुष्य सदा प्रसन्न नहीं रहता। 'मनुष्य की इच्छाएं बहुत ऊंची हैं तथा वह कुछ भी पा कर संतुष्ट नहीं होता।' बेचैनी तथा असंतुष्टता के भाव बहुत अच्छे हैं यदि ये हमें अधिक मेहनत कर ऊंचा उठने में सहायता करते हैं तो। ●

पृष्ठ ३२ से आगे

बैंकिंग कोड को तोड़ना थे। कोलम्बो को 18 माह की जेल तथा मोम्बली को छः माह की, दोनों को 300-300 पाऊंड का जुर्माना हुआ क्योंकि जज ने यह स्वीकार कर लिया था कि कमाये गये धन से ये लोग अपनी जेबें नहीं भर रहे थे।

कोलम्बो का अभिप्राय केवल अपने अहम को बढ़ावा देना ही था। यदि उसकी व्हीलर डीलरिंग से मुनाफा भी होता तो भी उसे सजा तो भुगतनी ही पड़ती चाहे वह सजा बैंक धन के नाजायज इस्तेमाल के कारण ही क्यों न होती तथा यह मानना पड़ेगा कि कोलम्बो का लाभ पा जाने का सपना असम्भव नहीं था—बाद मे कोलम्बो ने इस बात का दावा किया कि यदि उसके सौदे जैसे के तैसे रहने दिये जाते तो बाद में, विदेशी मुद्रा के उतार चढ़ाव के कारण उसके बैंक को 11 लाख पाऊंड का लाभ हो सकता था ●

भविष्य के खे[ल]

स्नरफिग

प्रेरणा कभी-कभी बहुत ही अनोखे [स]... पर उत्पन्न हो जाती है पन्द्रह वर्ष ... अमरीका का एक पोधन परिवार जो मस्के[गन] मिशीगन के वासी थे क्रिस्मस के दिनों पड़ी ... पर पिता शर्म द्वारा जल्दी में बनाई स्लैज ... खेल रहे थे। उन्होंने दो पुरानी स्कीज ... मिला कर एक चौड़ी स्की बना दी थी जिस... बच्चे खड़े हो सकें। उससे काम चल सा ग[या] ढलान पर स्की नीचे को फिसल तो अ... तरह से रही थी पर उस पर सीधा खड़ा ... कठिन था। उस समय बहुत से देखने वाल[ों ने] सोचा होगा आईडिया अच्छा है काश ठीक ... काम करता भूल जाओ परन्तु शर्म पोधर ... आईडिया छोड़ा नहीं, उन्होंने उसमें ... तब्दीलियां कीं, जैसे नीचे एक छोटा सा ... लगाया जिससे साईड पर फिसलने का डर ... हो तथा एक रस्सी लगाई जिसको पकड़ ... खड़े होने में सहायता मिले।

अब यह उन्नत स्लैज स्नो पर सर्फ ... की तरह तैर रहा था और इसका नाम ... गया 'स्नरफर' अब अमरीका की जे. ई. ... कार्पोरेशन आफ मेरिओ, वरजीनिया द्वा[रा] बढ़िया किस्म की लकड़ी या प्लास्टिक ... बनाया जा रहा है। इस 'स्नरफर' ने बर्फ ... से फिसलने के खेलों में एक नया ही तर... जोड़ दिया है।

स्नरफिंग बहुत आसानी से सीखी जा स[कती] है तथा स्कीईंग की तुलना में खर्चा भी ... कम होता है स्कीईंग के लिए आवश्यक ... किस्म के जूतों और सुरक्षा के लिए बाई... की भी स्नरफिंग में जरूरत नहीं है। साथ ... स्नरफर फैन को खास तौर से तैयार स्की ... और बनाये गये ढालानों पर भी निर्भर ... रहना पड़ता। स्नरफर केवल एक इंच स्न[ो] ... भी बखूबी काम करता है, जिसमें स्कीईंग ... टोबोगैनिंग नहीं की जा सकती।

स्नरफ राईडर पहाड़ से नीचे को रेस ... सकता है या होट-डोग खेल सकता है, ... स्केट बोर्ड फैशन में खेला जाता है। और ... की बात यह है कि चाहे तुम कैसे भी ... चोट लगना बहुत ही मुश्किल है। कहना ... होगा स्नरफिंग में विश्वविख्यात दो खेल स्की... तथा सर्फिग में एक दूसरे से मिला ... गया है।

फैन्टम और ज़ालिम राजकुमारी–८

इस नरभक्षी पर विजय पा कर मेरा हाथ थाम लो हीरो ! तभी भविष्यवाणी सही साबित होगी !
खेद है ! मैं इस नरभक्षी की हत्या करना या तुम्हें जीतना नहीं चाहता 'डिजेरी' !

तुम्हें लड़ना होगा फैन्टम ! जरा अपने पीछे तो देखो ।

!

उसने खंजर निकाल कर पूरी शक्ति से हमले का मुकाबिला किया ।

उसका खंजर नरभक्षी के पेट में घुसता चला गया ।
अपने पीछे देखो फैन्टम !
मेरी तलवार !

पने पीछे !
अपने पीछे !

जरा घूम कर देखो हीरो !

!
क्रमशः
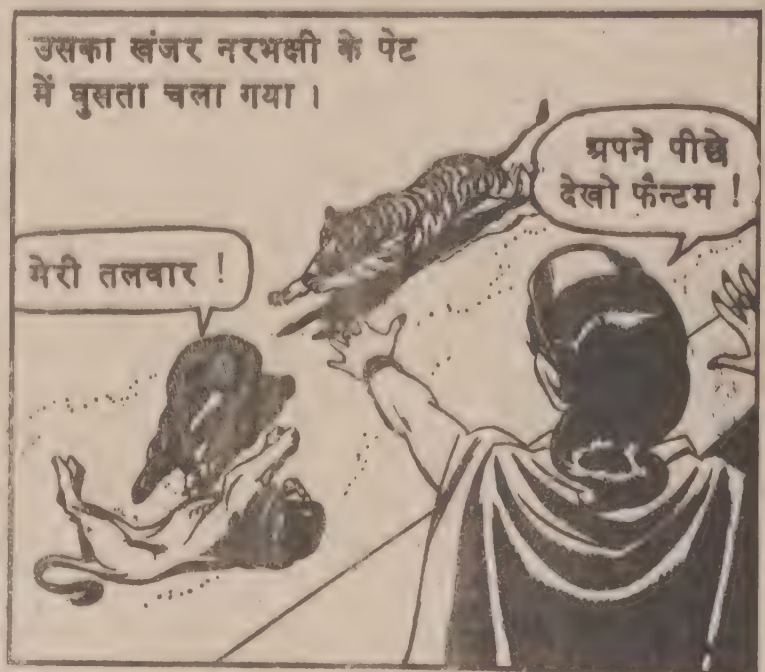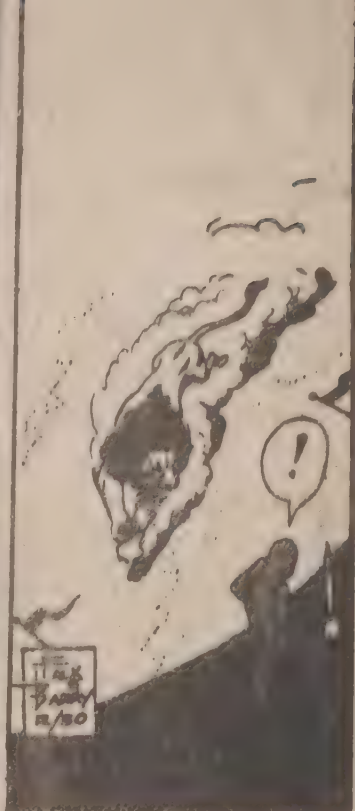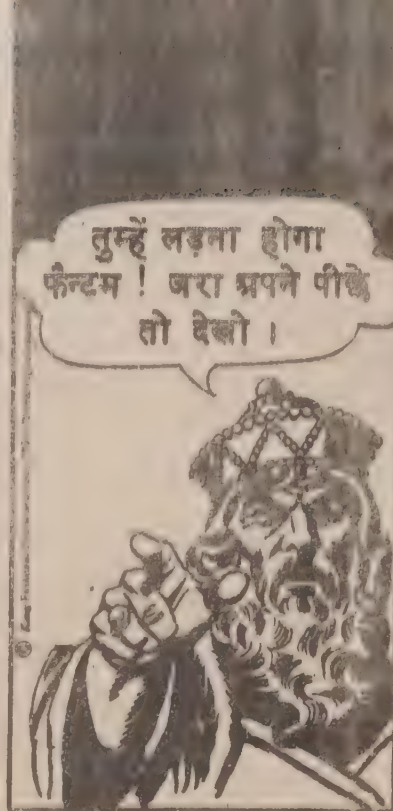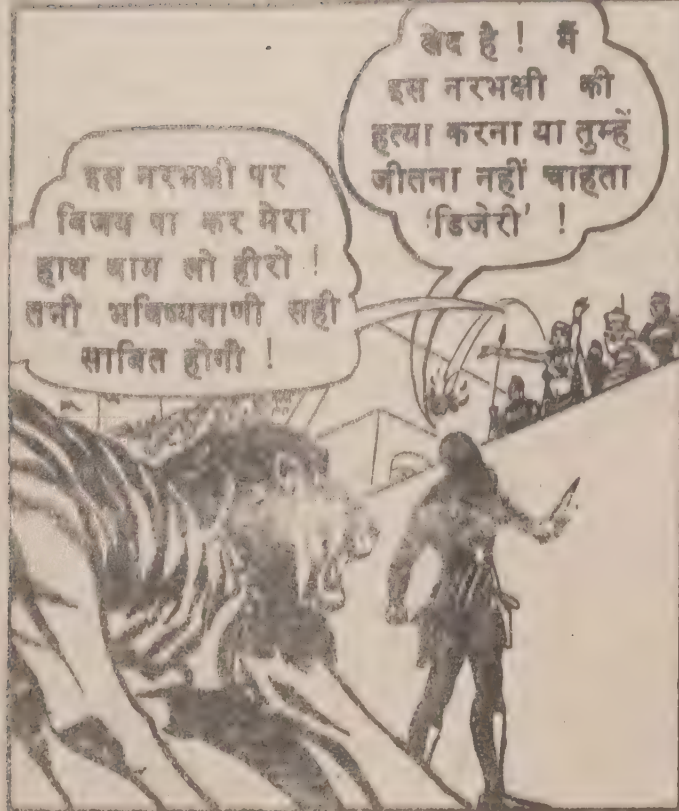
हवा में तैरता जेप्पलिन यान

[बा]त 21 नवम्बर 1783 की है। उस दिन पेरिस के नजदीक एक स्थान पर धुआं [व] गर्म हवा भरे गुब्बारे में 29 वर्षीय डा० जीन [द]को इज पिलाये डि रोजियर ने अपने एक [साथ]ी मक्यूं ज डि' आरलैण्डेज के साथ 25 [मि]नट में लगभग 5 मील की उड़ान भरी थी।

इस सफल उड़ान ने लोगों के दिमाग में [यह] बात पक्की तरह से जमा दी थी कि इस [प्रक]ार गैस भरकर धातु का बना हवाई जहाज [भी] उड़ाया जा सकता है। किसी मशीन की [सहा]यता से उड़ने वाला सबसे पहला हवाई [जह]ाज अमरीकी राइट बन्धुओं (ओरविल [रा]इट व विल्बर राइट) ने 17 दिसम्बर 1903 [को] किटी हॉक, नार्थ कटोलिना, संयुक्त राज्य [अम]रीका में उड़ाया था लेकिन इसके पहले गैस [से] उड़ने वाले जेप्पलिन यान का निर्माण किया [जा] चुका था।

इस 'जेप्पलिन' यान निर्माता, जमन सेना [के] एक सेवा निवृत्त उच्च अधिकारी व वैज्ञानिक [थे]। इन महाशय का नाम काउन्ट फरर्डानान्ड [वा]न जेप्पलिन (1838-1916) था। इन्हीं [मह]ाशय के नाम पर इस हवाई जहाज का [नाम] 'जेप्पलिन' पड़ा था। वैसे सन 1900 के [आस]पास 'जेप्पलिन' यान बनने लगे थे लेकिन [सन्] 1902 में पहला 'जेप्पलिन' यान सफलता-

पूर्वक आकाश में उड़ता देखा गया था। सन् 1977, इसकी उड़ान का हीरक जयन्ती वर्ष था। प्रथम विश्व युद्ध के समय 'जेप्पलिन' यान का ही बोलबाला रहा था। 6 मई 1927 तक 'जेप्पलिन यान निर्माण और व्यापार में जर्मनी का ही एकाधिकार माना जाता था। इसी दिन जर्मनी का शानदार 'जेप्पलिन' यान हिण्डेनवर्ग जलकर नष्ट हो गया था।
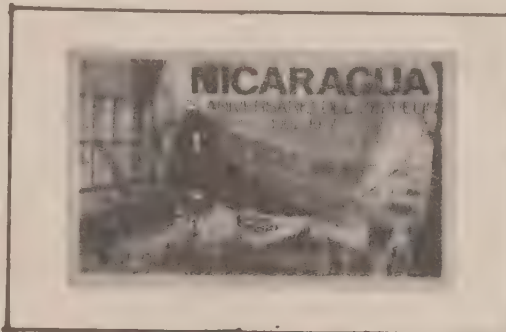
सन् 1938 में जर्मनी में ही एक अन्य शानदार 'जेप्पलिन' यान का निर्माण किया गया था जिसे अजलनशील हीलिमय गैस भरकर उड़ाया जाने वाला था लेकिन उस समय हीलियम गैस की आपूर्ति न हो सकने के कारण, यह यान निष्क्रिय ही पड़ा रहा। बाद में इसे सन् 1940 में जर्मन वासियों द्वारा पूर्णतया नष्ट कर दिया गया था।

योरोप और अमरीका के बीच स्थित आन्ध्र महासागर को पार करने की लालसा योरोपवासियों में शुरू से रही है। प्रथम विश्व-युद्ध के बाद यह लालसा एक बार फिर काफी जोर पकड़ गयी थी। सन् 1919 के जुलाई
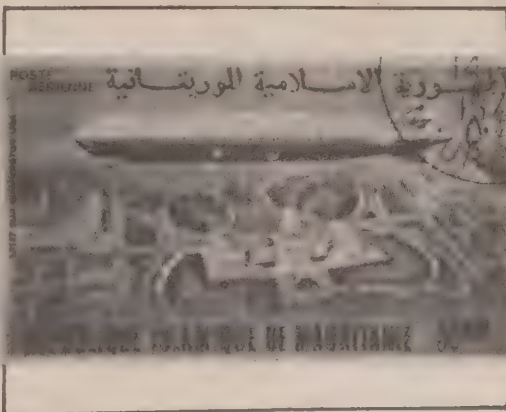
माह में अंग्रेजों का एक 'जेप्पलिन' यान आर 34, पहले स्कॉटलैंड से उड़कर हैजलेहर्स्ट (संयुक्त राज्य अमरीका) पहुंचा था और फिर वह वहां से वापसी उड़ान भर पुल्हम (नार्फोक) नामक स्थान पर सकुशल उतरा था। किसी भी 'जेप्पलिन' यान की आन्ध्र महासागर पर यह पहली दोहरी उड़ान थी। जब

पहली योरोप—अमरीकी व्यावसायिक उड़ान मई 1930 में शुरू हुयी थी, तब इस उड़ान के जरिये डाक ले जाने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका ने 65 सेंट 1.30 डालर व 2.60 डालर के हवाई डाक फिर यहीं निकाले थे जिन पर उड़ते 'जेप्पलिन' यान के चित्र बने हैं।

'ग्रैफ जेप्पलिन' को ही यह पहला सौभाग्य मिला हुआ है कि उसने सन् 1929 में टोकियो होते हुये धरती का पूरा चक्कर लगाया था। यह सौ फुट लम्बा, सौ फुट चौड़ा यान था। इसमें 50 यात्री बैठ सकते थे। यह 70 मील प्रति घंटे की गति से उड़ता था।

संयुक्त राज्य अमरीका के पास 'आई.जेड. 127 सुर वाशिंगटन,' 'आई०जेड० 4 सुरहुंगार' और इंगलैंड के पास 'बाल्डविन' नामक प्रसिद्ध 'जेप्पलिन' यान थे। उत्तरी ध्रुव प्रदेश पर होकर सन् 1931 में पहलीवार 'जेप्पलिन' यान उड़ा था।। परन्तु इन ऐतिहासिक 'जेप्पलिन' यानों को मशीन से चलने वाले निरन्तर विकसित होते शक्तिशाली आधुनिक वायुयानों ने विशाल नील आकाश से हमेशा के लिये खदेड़ दिया।

मिस्र की राजधानी काहिरा में 20 दिसम्बर 1933 को अन्तर्राष्ट्रीय उड्डयन कांग्रेस हुयी थी। इस अवसर पर वहां 20 मिल्स मूल्य वाला जो नीला डाक टिकट निकला था, उस पर भी एक उड़ता हुआ 'ग्रेफ जेप्पलिन' यान दिखलाया गया था।

—गोपीचन्द श्री नागर

अंतरिक्ष में
दीवानगी
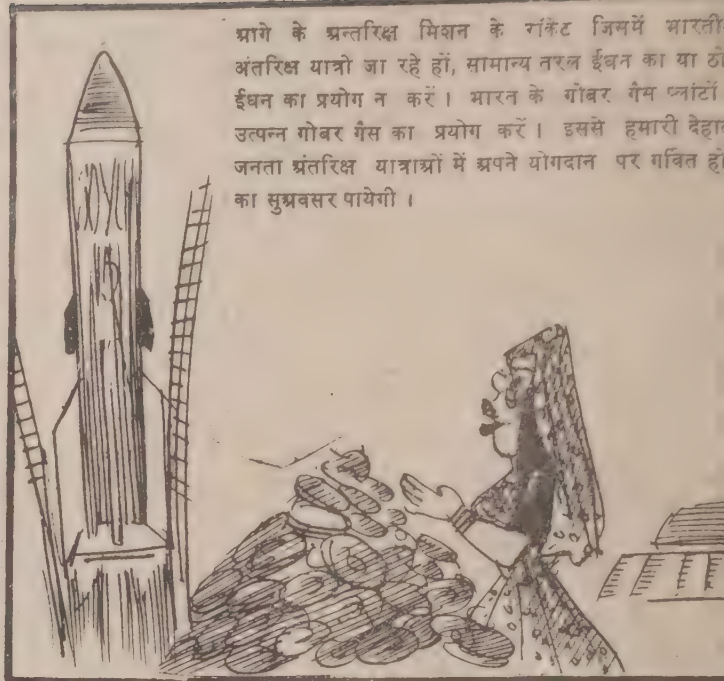
ग्रागे के ग्रन्तरिक्ष मिशन के रॉकेट जिसमें भारती
अंतरिक्ष यात्री जा रहे हों, सामान्य तरल ईंधन का या ठो
ईंधन का प्रयोग न करें। भारत के गोबर गैस प्लांटों
उत्पन्न गोबर गैस का प्रयोग करें। इससे हमारी देहा
जनता ग्रंतरिक्ष यात्राग्रों में ग्रपने योगदान पर गर्वित हो
का सुग्रवसर पायेगी।

फिल्मी हीरो व हीरोइन को अंतरिक्ष में भेजा जाये, प्रयोग
यह हो कि अन्तरिक्षयान से बाहर ग्राने पर वह कौन सा
दोगाना गायेंगे। भारहीनता की स्थिति में गाना गाते हुए
हीरो हीरोइन का उसी दक्षता से पीछा कर पाएगा जैसे वह
पार्कों में करता है।
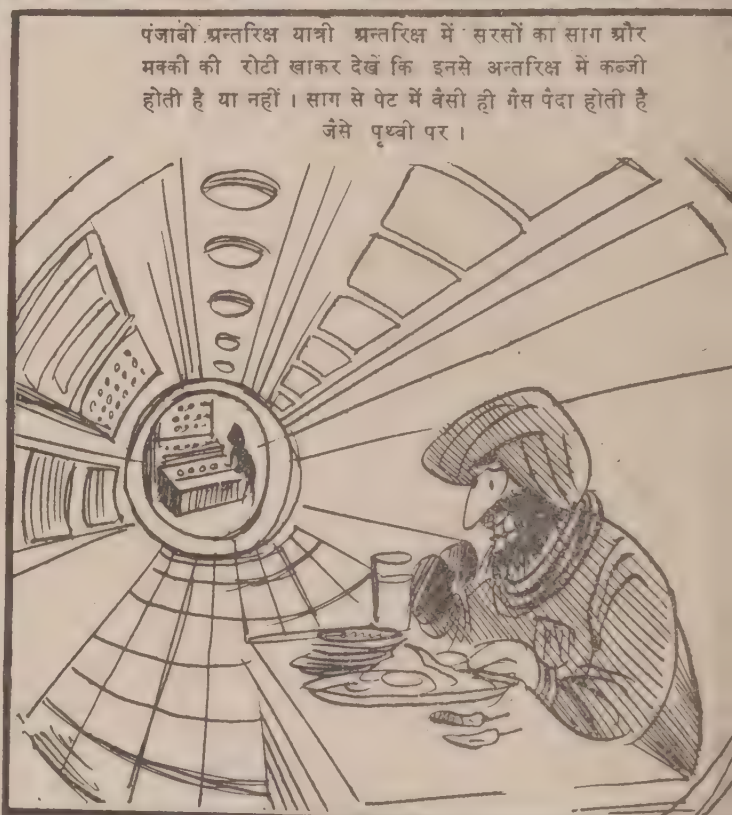
पंजाबी ग्रन्तरिक्ष यात्री ग्रन्तरिक्ष में सरसों का साग ग्रौर
मक्की की रोटी खाकर देखें कि इनसे अन्तरिक्ष में कब्जी
होती है या नहीं। साग से पेट में वैसी ही गैस पैदा होती है
जैसे पृथ्वी पर।
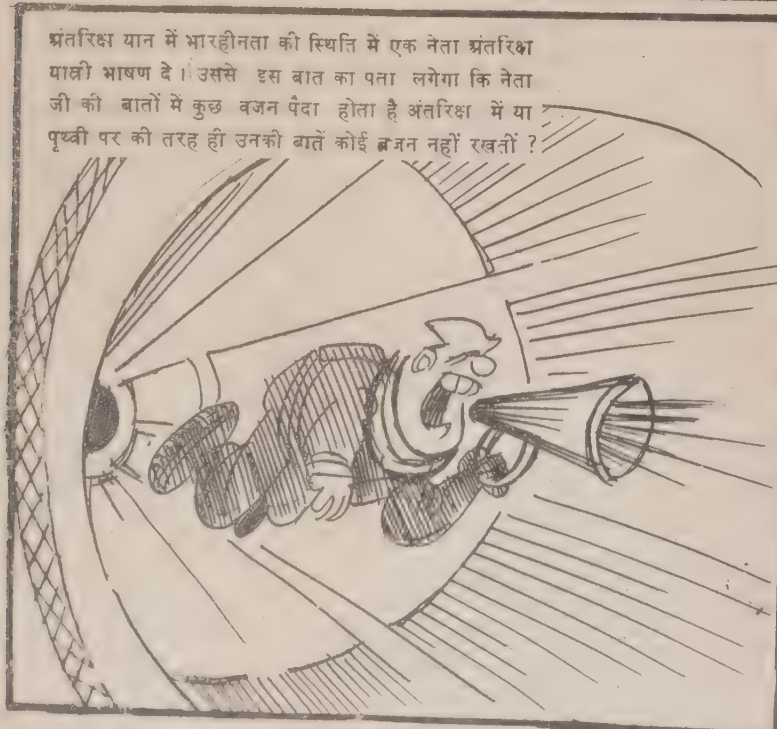
ग्रंतरिक्ष यान में भारहीनता की स्थिति में एक नेता ग्रंतरिक्ष
यात्री भाषण दे। उससे इस बात का पता लगेगा कि नेता
जी की बातों में कुछ वजन पैदा होता है अंतरिक्ष में या
पृथ्वी पर की तरह ही उनकी बातें कोई वजन नहीं रखतीं ?

ग्रगल ग्रतारक्ष यात्रया का चुनाव शारीरिक व मानसिक
योग्यता के ग्राधार पर न हो। सिफारिश के ग्राधा पर
चुनाव हो। जिसकी सिफारिश सबसे ज्यादा तगड़ी हो वही
ग्रंतरिक्ष यात्रा पर जाय।

डौलीजी और ब्रह्मचारी जी को भी अन्तरिक्ष में भेजा जाये। वहां से ब्रह्मचारी जी टी० वी० पर सीधे प्रसारण में मेरठ की मोहनी जी के प्रश्न का उत्तर दें, 'ब्रह्मचारी जी आपकी आयु क्या है ? आपके बाल इतने काले क्यों हैं ? आप इतने जवान क्यों नजर आते हैं ?' देखें अंतरिक्ष से वह वही घिसे पिटे जवाब देते हैं वा कुछ नये। ।

अमिताभ बच्चन को कुछ गुंडों के साथ अंतरिक्ष यात्रा पर भेजा जाए। प्रयोग करके देखा जाए कि अन्तरिक्ष में अमिताभ अकेले पच्चीस गुन्डों की पिटाई कर पाता है या नहीं।
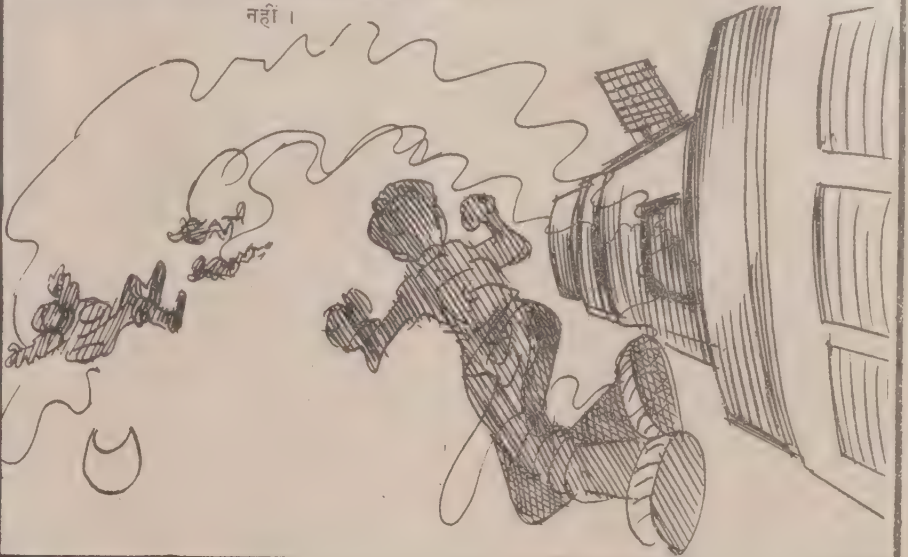
अन्तरिक्ष यात्री साथ में पत्नी को ले जाये वहां यह प्रयोग करके देखें कि स्पेश स्टेशन में पत्नी को मिट्टी का तेल छिड़क कर जलाना आसान है या नहीं। दूसरे सभी अन्तरिक्ष यात्री क्या पक्रिया दिखाते हैं।

सभी विरोधी दलों के नेताओं को अन्तरिक्ष में भेजा जाये। प्रयोग यह हो कि अन्तरिक्ष में वार्ता करने पर उनमें एकता पैदा होती है या नहीं।

एक महिला अन्तरिक्ष यात्री यह प्रयोग करे कि अन्तरिक्ष में जय संतोषी मां की आरती उतारने पर फल उतना ही मिलता है या ज्यादा।

एक धर्मावलम्बी को अन्तरिक्ष यात्रा पर भेजा जाए। अन्तरिक्ष यान के बाहर किसी कारण से उसके धर्म को ठेस लगने पर उस पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन किया जाय।

यान से बाहर जाकर देर से यान में लौटने पर एक स्व-
चालित हाथ अन्तरिक्ष यात्री के सिर पर बेलन मारे । पृथ्वी
पर पत्नियां पति के देर से घर लौटने पर इसी प्रकार
स्वागत करती हैं । देखा यह जाए कि अन्तरिक्ष में सिर पर
बेलन की मार से फुनगी जल्दी उग आती है या देर से ।

एक रिश्वतखोर सरकारी कर्मचारी व ठेकेदार को
यात्रा पर भेजा जाए । ठेकेदार यान से बाहर आयें,
यान का द्वार बन्द करे । यह प्रयोग किया जाए कि
का द्वार खोलने के लिए कर्मचारी कितनी रिश्वत मांगेगा
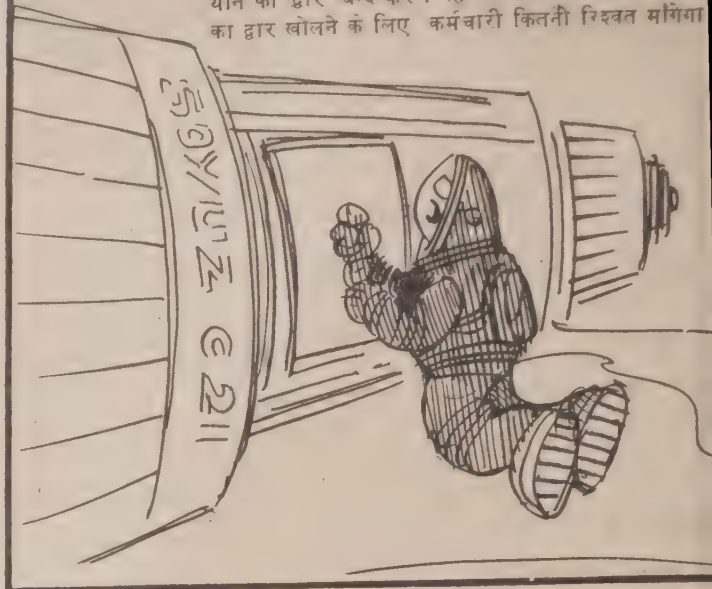
किसी दलबदलू को अन्तरिक्ष यात्रा पर रवाना किया जाए ।
प्रयोग यह हो कि अपने यान से बाहर आने पर उसे अमरीकी
अन्तरिक्ष यान नजर आए तो वह क्या करेगा । रूसी दल
को छोड़ अमरीकी दल में शामिल होने की कोशिश करेगा ?
क्या अन्तरिक्ष में भी वह दल बदलू ही रहेगा । भजनलाल
के लिए यह सुनहरी अवसर है अन्तरिक्ष में जाने का ।
USSR
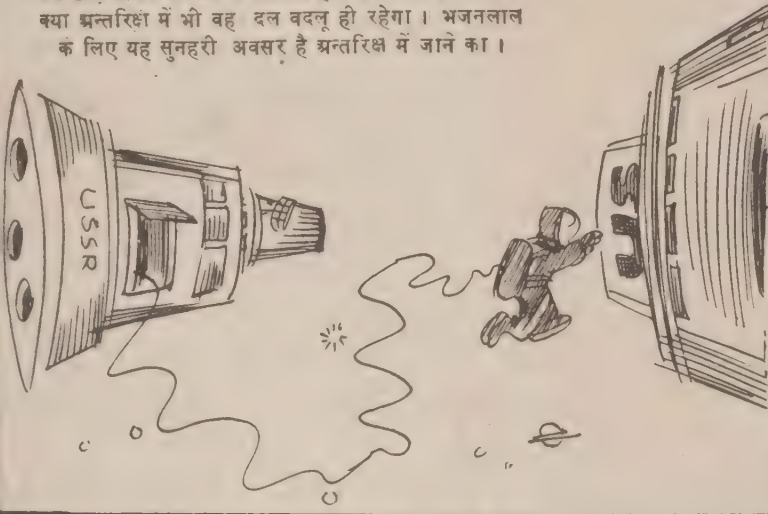
अन्तरिक्ष यात्री हड़ताल करें और अपनी मांगें सामने
यह पता लगेगा कि अन्तरिक्ष से मांगें मनवाने पर
मांगें जल्दी मान लेती है या नहीं ।
हमारी मांगें पूरी

विरोधी दल के नेता और मुख्य मन्त्री को अन्तरिक्ष में भेजा
जाये।वहां वह यह प्रयोग करें कि अन्तरिक्ष में भारहीनता
की स्थिति में मुख्यमंत्री का तख्ता पलटना कठिन या
आसान ।
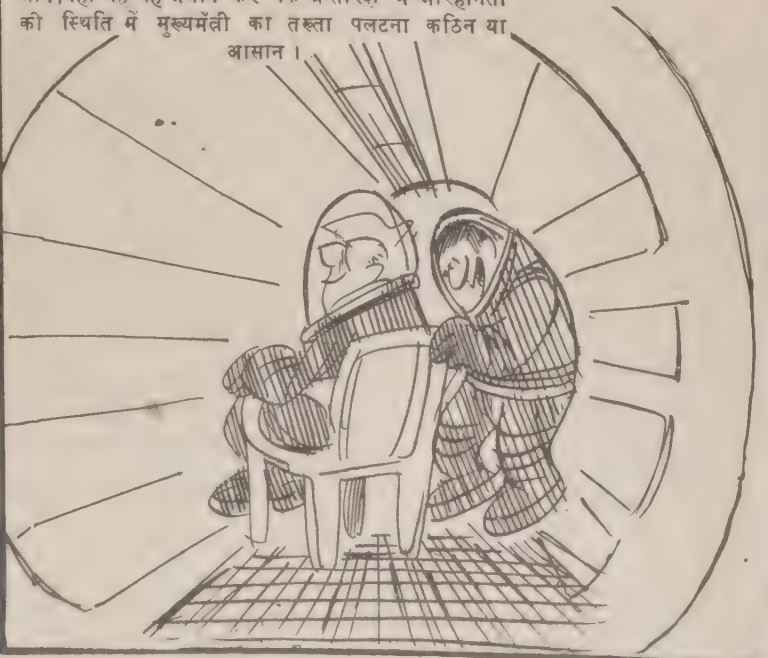
अन्तरिक्ष यान से भारत के चित्र लिए जाते हैं । प्रधानमंत्री
यान से जाकर देखें कि भारत पर मंडराने वाले युद्ध के
बादल अंतरिक्ष से नजर आते हैं या नहीं ।
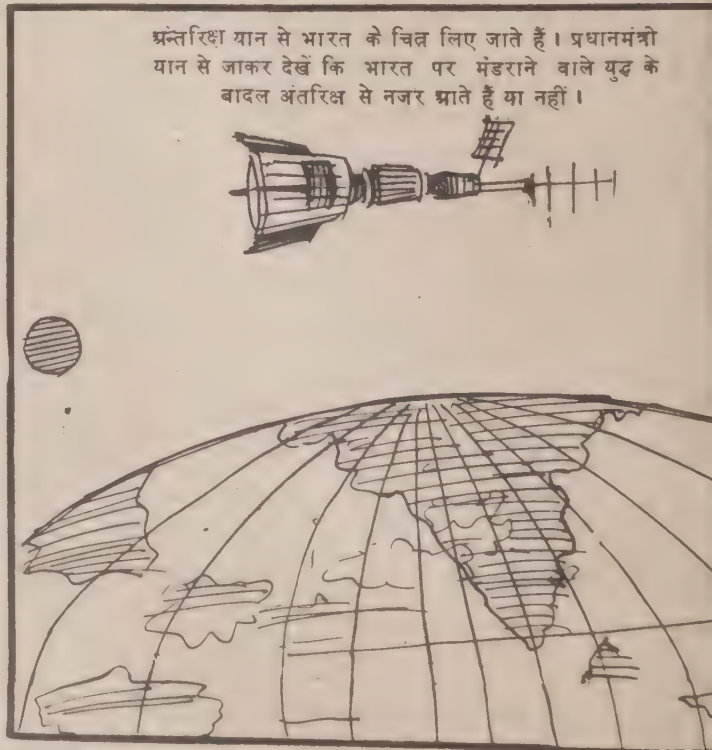
उधार से प्रेम का उदय

उधार शब्द सुनने में ही कितना उधार लगता है इस शब्द से ही अपनापन महसूस होता है। आज के जमाने में भला ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो उधार की पकड़ में न पड़ा हो उधार पवित्र तथा अत्यन्त करीबी रिश्तों का परिचायक है क्योंकि अपने से ही तो उधार मांगा जाता है, जिसे आप अपना समझते हैं, जो आपको अपना समझता है। उन्हीं आत्मीयजनों के बीच ही उधार का यह सम्बन्ध जुड़ता है वैसे मैं एक ऐसे सज्जन से परिचित हूं, जो अपने दोस्तों से उधार मांगना अपने सिद्धांत के विरुद्ध मानते हैं हमारे दफ्तर में काम करते हैं, मैं नया-नया दफ्तर में आया तो साहब पकड़ लिया लंच पर, कहने लगे, 'भाईसाहब वैसे तो इस आफिस में कई मित्र है, पर मेरा सिद्धांत है, मैं अपने मित्रों से उधार नहीं मांगता' मैंने तपाक से उन महोदय की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'वाह भाई जान' तब तो आज से हम और आप मित्र हुए; बस बेचारे इतने सकपकाये कि लंच के बाद दफ्तर में दिखाई ही नहीं दिये यह बात दूसरी है कि आज हम सचमुच मित्र हैं और उधारी का सम्बन्ध हम दोनों में कायम है।

उधारी का एक सबसे बड़ा लाभ है कि जब तक कोई आप का उधार न चुका दें या आप किसी का उधार न चुका दें। तब तक आपसी सम्बन्धों में मधुरता बनी रहती है क्योंकि दोनों को ही इस बात का पूरा अहसास रहता है कि सम्बन्ध बिगड़े और उधार खटाई में पड़ जायेगा। उधार का दूसरा फायदा है आप की स्मरण शक्ति का विकास, यदि आप किसी को उधार देते है तो आपको याद रखना होगा, आपने कब, कितना और किसके सामने उधार दिया था। यह उधार आंकड़े वक्त जरूरत काम आते हैं उधार लेने वाला भला यह सब याद रख अपने दिमाग पर बोझ क्यों डालेगा। याद रखने की यह अवधि महीनों से लेकर वर्षों तक हो सकती है, इस अवधि तक आप में तीव्र स्मरण शक्ति, धैर्य, विनम्रता, सामान्य शिष्टाचार जैसे अनेकानेक गुणों का विकास स्वयं हो जायेगा, यदि आप देनदार हैं तो स्मरण शक्ति के बजाये विस्मरण शक्ति विकसित करने पर बल दीजिये। अपने भुल्लकड़ होने की आदत का प्रचार करते रहिये कोई उधार मांगे तो झट कह दें, 'अरे! मैं तो भूल ही गया था।'

अक्सर कहा जाता है उधार प्रेम की कैंची है, पर मैं ऐसा नहीं मानता। वास्तव में उधार तो प्रेम की भाषा है। ऐसी भाषा जो सम्बन्धों में मधुरता लाती है रिश्तों को आत्मीय और औपचारिक बनाती है, तथा इन्सान में आवश्यक मानवीय गुणो का विकास करती है।

उधार लेकर वापस लौटाना सामान्य शिष्टाचार माना जाता है उधार लेते समय आप स्पष्ट कोई वायदा न कीजिये। वैसे तो आप उधार जल्दी से जल्दी लौटा देना चाहते हैं मगर आप की नीयत में फर्क आ सकता है। अगर आप उधार लेकर लौटाना नहीं चाहते तो विनम्र शब्दों में कह दीजियेगा, 'भाई! आड़े वक्त में मेरी मदद की है, मैं जीवन भर तुम्हारा ऋणी रहूंगा' आप ऋण न चुकाकर आजन्म ऋणी रह सकते हैं। फिर भी अगर कोई कर्ज वापस चाहता हो तो कह दीजिये 'अरे आप के पैसे कहां जाते हैं'।

उधार मांगने वालों के भी अपने सिद्धांत होते हैं। उधार की खातिर वे अपनी जान तक दे सकते हैं। बेशर्मी इनका पहला सिद्धांत है। उधार मांगना वे अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते हैं। मांगना हमारी पावन परम्परा है। ऋषियों को सोमरस बनाते देख देवताओं तक की लार टपक आई थी और वे भी सोमरस मांग बैठे थे। वैसे भी मनुष्य की यह कमजोरी है कि मांगने की इच्छा को वह रोक नहीं सकता। जिसमें उधारी तो अर्थव्यवस्था का आधार है। यावकि पंथी यो कहते हैं कि जब तक जियो सुख से जियो और कर्ज करके भी पियो'। उधार हमारी प्राचीन-संस्कृति है, हमें इस पर गर्व है।

अब आप उधार की इतनी महिमा जान ही गये हैं तो धड़ल्ले से उधार लेना शुरू कर ही दीजिए। उधार मांगने की शुरूआत मित्र वर्ग से करें, फिर सहकर्मियों से, मिलने जुलने वालों से, पड़ोसियों से, रिश्तेदारों से यह सभी आपको उधार मिलने के स्रोत हैं। आप कुछ ही समय में महसूस करेंगे कि आपका सम्पर्क का दायरा काफी व्यापक हो गया है समाज में आपकी कद्र होने लगी है और राह चलते लोग आपको अभिवादन करने लगे हैं।

चना कुरमुरा

आपका घर अभी बिका कि नहीं?

हमने न बेचने का फैसला कर लिया, एजेन्ट ने बेचने के लिये जो इश्तहार दिया है, उसमें घर के विषय में जानकर पता चला कि ऐसा ही घर तो हमें चाहिए।'

मूर्खता पूर्ण प्रश्नों के

रखता पूर्ण उत्तर

भूख हड़ताल
आप अपनी मांगें मनमाने के लिए भूख हड़ताल पर बैठे हैं ?

नहीं, मैं अपने पेट में चूहों को कूदने की ट्रेनिंग दे रहा हूं ।
नहीं, मैं देखना चाहता हूं कि भूखे रहने पर दिनों को तारे दिखाई देते हैं या नहीं ।
नहीं, मुझे डाक्टर ने पूरी तरह विश्राम करने को कहा था, मैं खाना खाकर हाथों व मुंह को कष्ट नहीं देना चाहता ।

सुना है तुम्हारी लड़की नौकर के साथ भाग गयी । तुम्हें तो बहुत दुःख हो रहा होगा ?

दुःख कैसा ? लड़की को नौकर भी मिला पति भी । ऐश करेगी ।
दुःख कैसा ? नौकर दो महीने की तनख्वाह छोड़ गया ।
दुःख कैसा ? बगैर धेला खर्चे लड़की की शादी हो गयी । अगर ठीक शादी करते तो तुम्हारी तरह हमारे घर के भांडे भी बिक गए होते ।

सुना है पाकिस्तान एटम बम बना रहा है । इसके जवाब में भारत क्या करेगा ?

सारे देश वासी जय संतोषी मां का व्रत रखेंगे ।
हम अपने उर्दू सर्विस में बबम बम बम लहरी गाना ब्राड कास्ट करेंगे ।
हम जीवन बीमा की किश्तों की दर बढ़ा देंगे ।

शर्मा जी आप पिक्चर की टिकटों के लिए लाईन में खड़े हैं ?

नहीं, यह जो सामने खड़ी है यह अपने बालों पर कौन-सा सैंट लगाती है, इस पर खोज कर रहा हूं ।
नहीं, मैं लाईन में खड़े होने का अभ्यास कर रहा हूं । मुझे ट्रेन में सीट की बुकिंग करानी है ।
नहीं, मैं आगे वाले की जेब काटने वाला हूं ।
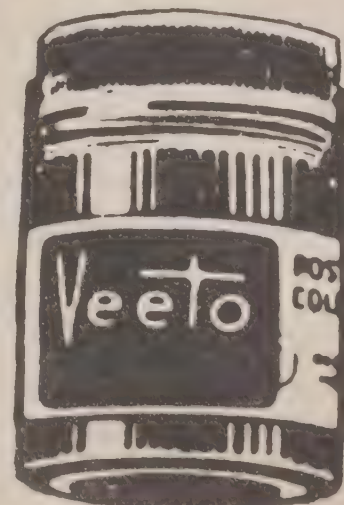
चिल्ली लीला

कटपीसम्

अध्यापिका ने करके
स्वर ऊंचा
छात्रा से पूछा—
'आपने होम वर्क
क्यों नहीं किया ?
छात्रा ने झट
उत्तर दिया—
'वो तो
मेरे पति करते हैं ।'

*

पत्नी गिरी
मकान हिला,
भूचाल आया
और अब मेरे भाया
जब भी कभी
भूचाल आता है
हर कोई
समझ जाता है
कि चंचल की—
पत्नी गिरी है ।

*

वह बोलीं शान से
सीना तान के—
'मेरा प्रेमी भी
मंत्री बन सकता है
यह समझ में आया
क्योंकि उसने जो भी कहा
कुछ करके नहीं दिखाया ।'

*

प्रेमी पकड़कर
प्रेमिका का हाथ
चलकर
थोड़ी दूर साथ
बोला—
'प्रिए !
मैं तुम्हारे लिए
आसमान से
सितारे तक,
तोड़ लाऊंगा
अच्छा-अब चलता हूं
अगर वारिश न हुई
तो कल—
, जरूर आऊंगा'

*

वो
प्रेमिका को
सरकार
कहते हैं
इसीलिए जल्दी
बदलते हैं ।

राजेन्द्र चंचल

* * * *

अप्रैल फूल

भाषण देते हुए
नेताजी बोले—
"भाइयों, मुझे देना वोट,
और मैं
तुम्हारे नगर को
स्वर्ग बनाकर दिखाऊंगा,
सच कहता हूं
पिछली बार की तरह
अप्रैल फूल
नहीं बनाऊंगा ।'

नवनीत तलवार

दीवाना वर्ग पहेली
20रू. इनाम जीतिये

1		2		3	4
	■		■	5	
6	7	■	8		
9		■	10		■
	■	11		■	12
13					
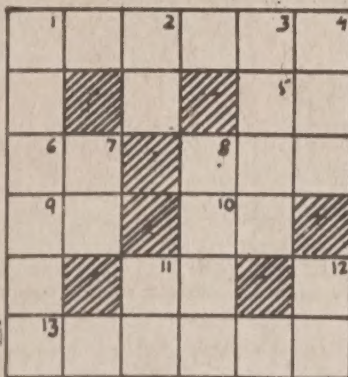
बांयें से दांयें

1. एक फिल्म जो तुम्हारे सम्मान में तुम्हारे लिए बनी। (2, 1, 3)
5. प्रलय का अन्त न हुआ बोल। (2)
6. चक्की चलाने में उछालने के लिए क्या मिलता है ? गंदगी। (2)
8. बाद में ढोलक की थाप देने वाला मूर्ख अनपढ़। (3)
9. राल टपकाने में गाल या माथे पर झूल आए बाल। (2)
10 इराकी अनुपस्थिति में फूला नहीं बंल। (2)
11. हवा भरा। (2)
13. चहलकदमी करते हुए कदम बढ़ाना। (4, 2)

ऊपर से नीचे

1. इसमें आने पर जलने झुलसने का खतरा है। (2, 1, 3)
2. लोहे की नोकीली वस्तु ऊपर जाते समय मिले तो अच्छा सगुन है। (2)
3. इसे लड़ाने के लिए चाल चलना पड़ता है। (4)
4. इसे न खाने का जुल्म न करो। (3)
7. इसे कर जाने का अर्थ है सब खा पी कर साफ करना। (2)
8. हड़बड़ाते। (4)
11. रामपुरा के अंतिम छोर पर मिलने वाले पुष्प। (2)
12. खोखो नामक खेल में सुधबुध भुलाना। (2)

अन्तिम तिथि:—15-6-84

नाम :— — — — — — — — — — — —
पता : — — — — — — — — — — — —
— — — — — — — — — — — — — —

प्रगति और वि
कहानी

रामेश्वर
महाप्र
उ

पिछले कुछ वर्षों में उ
चालन कार्य बहुत बढ़ गय
यात्री यातायात में बहुमुखी
स्पष्ट होता है कि यात्री और
तीव्र परिवहन के युग का सू
है। विकासशील वर्षों में प
प्रगति बहुत साधारण थी कि
ने लगभग 220 लाख मीटि
यातायात और 350 लाख म
टिंग माल यातायात संभालने
क्षमता विकसित कर ली है
पर चलने वाली बड़ी लाइन
वाली कुल मेल और एक्स
एक तिहाई गाड़ियां इस रेल
जिनमें प्रतिवर्ष 7.4 करोड़
हैं। कार्यभार की दृष्टि से या
प्रणाली के लिए चुनौती पूर्ण
रेलों में उत्तर रेलवे सबसे
गुणवता की दृष्टि से हम अ
ग्राहकों को उत्तम सेवा प्र
अथक प्रयास कर रहे हैं।
और युद्ध दोनों अवसरों
व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भ
लिए तैयार हैं।

दीवाना शब्द कोष

चालाक—
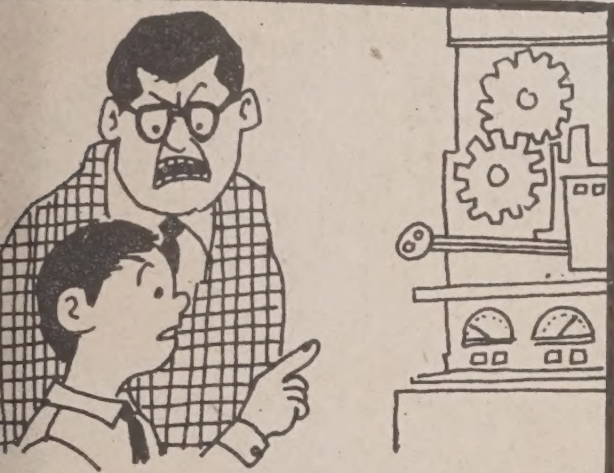
क जो अपने माता पिता से ऐसे प्रश्न पूछे जिनका वो जवाब न दे सकें।

हाजिर जवाबी—

ऐसी बात कहना, जो तुम्हारे मां बाप के विचारों और विश्वासों से मिलती न हो।

जिन पर तुम्हारे पिता के हने के अनुसार पैसे नहीं लगते।

मित्र—

जो हर पिता तलाक के बाद अपने बेटे का होना चाहता है।

ा—

बेतुके नियम को लागू करने का बहाना (क्योंकि हम तुम्हारे मां बाप हैं)।

पूरी तरह फिट—

कोई भी तीन माप बड़ा कपड़ा क्योंकि वह तुम्हारे हमेशा फिट आयेगा।

पृष्ठ ३५ से आगे

फैशनेबुल, खुश-पोश, खुश-खुराक और कौम का 'दर्द' रखने वाली सोशलवर्कर। खुश-खुराकी के कारण शरीर फूलकर कुप्पा हो रहे थे। प्रकट में दोनों सहेलियां थीं, पर असल में एक दूसरे की प्रतिद्वन्दी, क्योंकि दोनों भिन्न राजनैतिक दलों से सम्बन्ध रखती थीं। दोनों के दिल धड़क रहे थे कि देखें, कौन-किसे मात देता है। बेगम ख्वाजा पहले सामने आई। कुर्सीधारी महिला ने उनका निरीक्षण करते हुए प्रश्न किया—'अच्छा तो आपको नौकरानी की जरूरत है ?'

'जी ! जी हां।···आप बिल्कुल ठीक समझीं।' बेगम ख्वाजा ने हकलाते हुए कहा।

'आपके घर में कौन-कौन रहता है ?'

'मैं रहती हूं और मेरे पति।'

'आपके पति स्वभाव के कैसे हैं ?'

'यकीन जानिये ! बहुत शरीफ और भले आदमी हैं।

'बच्चे कितने हैं ?

'फिलहाल सिर्फ दो। वैसे घर में एक सास भी है, लेकिन आप चिन्ता न करें। वह समझदार औरत है। अपना काम स्वयं करती है। आपको केवल घर का छोटा-मोटा काम करना पड़ेगा।'

'समझ में नहीं आता कि तीन प्राणियों के परिवार को नौकरानी की जरूरत क्यों महसूस हुई ?'

'देखिये न ! मैं एक सोशल-वर्कर हूं। राष्ट्र की सेवा करने के लिए अधिक समय घर से बाहर बिताती हूं। घर के काम-काज के लिए भी आखिर कोई तो चाहिए।' यह सुनकर बैठी हुई नौकरानी ने कहा—'माफ कीजिये महोदया ! मैं स्वयं सोशल-वर्क की शौकीन हूं। राष्ट्र की सेवा हर वयस्क मर्द और औरत का फर्ज है।

'जी ! जी हाँ ! आपने ठीक फरमाया। मुझे कोई आपत्ति नहीं। जिस रोज सोशल-वर्क को जी चाहे, मुझे बता दीजिए। मैं घर का काम स्वयं संभाल लूंगी। आप शौक से कौम की सेवा कीजिएगा।' बेगम ख्वाजा ने अपनी ओर से रिआसत देते हुए कहा—

'मैं आपकी पेशकश स्वीकार नहीं कर सकती, नौकरानी ने कहा।

'वह क्यों ?' बेगम ख्वाजा की आवाज में याचना, निराशा और दुःख के चिन्ह थे।

'इसके दो कारण हैं। पहला यह है कि आपको नौकरानी की सिरे से जरूरत ही नहीं तीन प्राणियों का घराना आजकल नौकरानी के खर्च को कब तक सहन कर सकता है ? शीघ्र ही आपको अहसास हो जायेगा कि नौकरानी रखना इतना आसान नहीं जितना आप समझती हैं। फिर आप कहेंगी, तनख्वाह ज्यादा है, आखिर इस घर में काम ही क्या है, और मेरी तनख्वाह कम कर देंगी। रोज-रोज के झगड़े मुझे पसन्द नहीं।'

'मैं आपको यकीन दिलाती हूं कि ऐसा कभी न होगा।'

'वैसे भी मुझे आपके ख्याल पसन्द नहीं।'

'मैं आपका मतलब नहीं समझी।'

'हो सकता है किसी रोज नगर में कोई जोरदार समारोह हो और आप सोशल वर्क का बहाना करके उस समारोह में शामिल होने के लिए चली जायें। आखिर मुझे भी सोशल वर्क से दिलचस्पी है। मैं किस तरह घर में भाड़ झोंक सकती हूं।'

'बारी-बारी भाड़ झोंकने के बारे में आप का क्या ख्याल है ?' बेगम ख्वाजा ने अन्तिम प्रश्न किया।

जी नहीं ! आप तशरीफ ले जा सकती हैं। मुझे ऐसी मालकिन नहीं चाहिए जो अपनी इच्छाओं को नौकरों की इच्छाओं पर तरजीह दें।'

बेगम ख्वाजा को जाते देख कर मिसेज शेख के ओठों पर मुस्कराहट खेलने लगी। अब वह अकेली उम्मीदवार थीं और सफलता की संभावनाए शत-प्रतिशत थीं। कुरसी-धारी महिला ने प्रश्न किया।
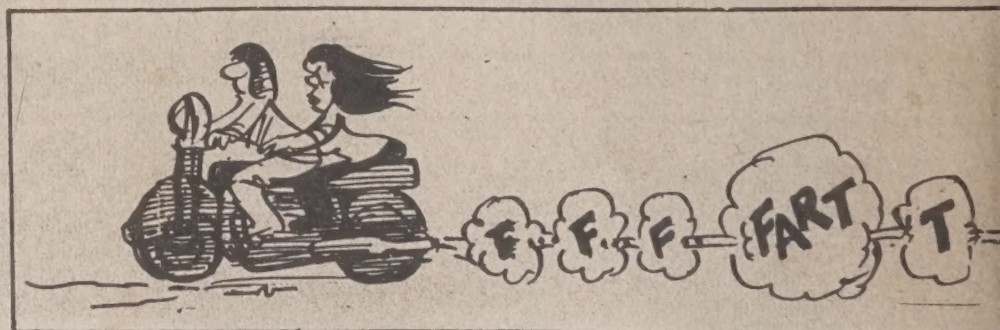
अच्छा तो आप भी सोशल-वर्क से दिलचस्पी रखती हैं ?'

मिसेज शेख सटपटा गयीं, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने अपनी दशा पर काबू पा लिया और बात बनाते हुए बोली—मुझे सोशल वर्क से कोई दिलचस्पी नहीं। आपके समारोहों में शामिल होने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'

'आपके यहां कुल कितने सदस्य हैं ?'

'पन्द्रह !' मिसेज शेख खुशी से ... होते हुए बोलीं। पर खेद ! संसार को ... खुशी एक आंख न भायी। दूसरा प्रश्न ... कानों पर हथौड़े की तरह बरसा—

'पहले भी कोई नौकर है या सारा ... मुझे ही करना पड़ेगा ?'

'जी ! मैं पूरा प्रयत्न कर रही हूं। ... है शीघ्र ही एक और नौकर का प्रब... जायेगा।'

'ठीक है। जब दूसरा नौकर मिल ... तो मुझे सूचना दीजिएगा। आपका का... अकेली के बस का रोग नहीं।'

मिसेज शेख ने बड़ा जोर लगाया कि ... रानी महोदया मान जाये तो वह स्वयं ... हाथ बंटा दिया करेंगी, पर वह टस-से-म... हुई। इस प्रकार मिसेज शेख असफल ... निराश लौटीं।

तो साहब ! यह है आने वाले यु... एक झलक ! अपना तो अजीब हाल ही ... इन माइयों की संगति सहते-सहते। नौ... को घरेलू भाषा में माई कहते हैं और ... नौकर से कहीं अधिक दुर्लभ चीज है, ... हमारे अधिकांश घरानों में अभी तक ... रखना अच्छा नहीं समझा जाता। आ... जबान पर यह शेअर रहता है:—

यों कट रही जिन्दगी इस माई के ब...
जैसे किसी गुनाह की सजा पा रही ...

वैसे एक राज की बात कहूं। सुना ... सौभाग्यशाली लोग ऐसे भी हैं जिनके ... और नौकरानियों को अभी तक अपने ... का अहसास नहीं हुआ है। अगर आपकी ... उन लोगों में होती है तो कृपया इस ... नौकरों की नजर से बचाकर रखिए, न... अगले ही दिन नौकर की तलाश में दर-... खाक छाननी पड़ेगी। खाक छानने ... बेहतर है कि इन्सान अपना काम स्व... मगर इस बात को क्या कीजिए कि—

पर तबीयत इधर नहीं आती।

—तरन...